राम-श्याम की झाँकी

[भाग-२]



सुदर्शन सिंह 'चक्र'

राम-श्यामकी झाँकी

(दूसरा भाग)

सुदर्शन सिंह 'चक्र'



प्राप्ति-स्थान—
प्रकाशन विभाग
श्रीकृष्ण - जन्मस्थान - सेवासंघ
मथुरा-२८१००१ (उ० प्र०)

प्रकाशक	श्रीकृष्ण-जन्मस्थान-सेवासंघ
प्रकाशन-तिथि	शिवरात्रि, वि० सं० २०३४ ७, मार्च, १९७८
प्रथम संस्करण	५००० प्रतियाँ
मुद्रक	राधा प्रेस, गान्धीनगर, दिल्ली-११००३१

RAM-SHYAM KI JHANKI — Part II

—Sudarshan Singh 'Chakra'

मूल्य— एक रुपया पचहत्तर पैसे

अनुक्रमणिका

संख्या	झाँकी			पृष्ठ

संख्या	झाँकी			पृष्ठ



राम-श्यामकी झाँकी

(दूसरा भाग)

हप्प !

कन्हाई अभी-अभी दौड़ा-दौड़ा आया है। यह नटखट अपने सहचरोंके साथ किसी घरमें धूम करने गया था और वहाँसे जब वह गोपी उलाहना देने चली तो अकेला दौड़ा आया है। गोपी पता नहीं मैयासे क्या-क्या कहेगी, अतः इससे पहिले मैयाके समीप पहुँच जाना सुरक्षित है।

नील सरोजसुन्दर सुकुमार शरीर स्थान-स्थान पर अधिक स्निग्ध दीखता है। अलकें बिखरी हैं और मयूर-पिच्छ कहीं गिरा आया है। भालपर मैयाका लगाया कज्जल बिन्दु पोंछा गया है। अब केवल उसका फैला चिह्न मात्र शेष है। नेत्रोंका अञ्जन भी कुछ फैला है। स्पष्ट है कि किसी बड़े सखाने धूमके मध्य अलकों पर, शरीरपर पड़ा दधि, नवनीत या दूध पोंछ दिया है। उसका जो चिह्न है। श्यामको पता नहीं है इन चिह्नोंका। इसके स्निग्ध चरणोंमें कुछ धूलि भी चिपकी है, इसका भी ध्यान नहीं है।

कण्ठमें कौस्तुभ चमक रहा है लघु मुक्ताओंकी मालाके मध्यसे और वक्षपर उसी मालाकी वाम लड़ीसे सटा श्रीवत्स चिह्न झाँक रहा है। कलाइयोंमें पद्मराग-जटित कङ्कण हैं। भुजाओंमें हीरकमण्डित केयूर हैं। कटिमें कटि-सूत्र और मणिकाञ्ची है। चरणोंमें नूपुर हैं। दिगम्बर शिशु नन्दनन्दन दौड़ता आया है और अपने भवनके द्वारपर आकर यह देखने मुड़ पड़ा है कि वह गोपी जो उलाहना देने चली थी, अभी कितनी दूर है।

'अरे, यह तो पीछे ही लगी आ पहुँची।' कन्हाई चौंक गया। वैसा ही स्थूल शरीर और वैसी ही साड़ी—अब नन्हा नन्दलाल यह इतनी शीघ्रतामें कैसे समझे कि यह कोई दूसरी ही है। मुखको ओर देखनेका तो अवसर ही नहीं मिला इसे।

'यह तो आ गयी!' झटपट कुछ करना आवश्यक था। इसे ऐसे ही मैयाके समीप तक तो जाने देना ठीक नहीं। कृष्णने झटकेसे मध्य द्वारमें खड़े होकर इस ढङ्गसे 'हप्प!' कहा मानो द्वार रोककर धमका रहा हो—'खबरदार! यह मेरे बाबाका भवन है। मैं तुझे इसमें भीतर नहीं घुसने दूँगा।'

दाहिने करकी मुट्ठी बँधी है और अँगूठा सीधा खड़ा कर लिया है इसने। बायाँ कर भी उठा है; किंतु उसकी मुट्ठी अधखुली है। अधरोंको दाँतोंसे दबाकर कमल मुख-की भङ्गी इसने कठोर कर लिया है।

'क्यों रे! तू मुझे भी हप्प करता है?' आने वाली हँस पड़ीं नीलमणिकी यह भङ्गी देखकर।

'अरे, यह तो कुबला चाची है।' कन्हाईने सहसा सिर उठाया और अब उसका संकुचित मुख—दो क्षण यही इसकी समझमें नहीं आया कि यह जादू क्या है। वह गोपी इतनी शीघ्र कुबला चाची कैसे बन गयी और अब करना क्या चाहिए। बायाँ हाथ वैसे ही उठा रहा अर्ध-कुञ्चित और दाहिनी मुट्ठीका अँगूठा भी झुका लेना स्मरण नहीं रहा। केवल 'हप्प !' करनेवाला मुख खुल गया—तनिक खुला रहा और फिर बात समझमें आ गयी। कुबला चाची हँस रही हैं—ये रुष्ट तो होना जानती ही नहीं हैं। इनसे डरनेकी आवश्यकता नहीं है।

कन्हाईने दोनों भुजाएँ ऊपर उठा दीं अङ्कमें जानेके लिए। चाचीने उठा लिया। अब तो चाचीको मैयाके समीप जाना है; किंतु वे हँसती-हँसती इसके मुखकी ओर देखती कह रही हैं—'कहूँ व्रजेश्वरीसे कि तू अब मुझे भी 'हप्प !' करने लगा है।

कनूँ इस चाचीसे—इतनी वात्सल्यमयीसे भला क्यों डरेगा ? जानता है, यह कहनेवाली नहीं हैं। इसने अपना दाहिना हाथ इनके मुखपर धर दिया है और इनके मुखकी ओर देखता हँस रहा है।

ऊँची नाक

आज प्रातः काल मैया अपने प्रांगणमें नीलमणिको अङ्कमें लेकर आ बैठी। पाटल गौरवर्ण, बड़े-बड़े अञ्जन रञ्जित लोचन, भालपर सिन्दूर विन्दु, कबरीमें लगी मल्लिका-माला। सर्वाभरण, भूषिता, अरुण परिधाना

मैयाकी साड़ी सिरसे खिसक आयी है। इसके दक्षिण उरु पर कन्हाई बैठा है।

'मैया !' सहसा दौड़ता, भागता तोक आया और मैया-की गोदमें उसके वाम उरुपर बैठकर अपना नन्हा बामकर मैयाकी ठुड्डीमें लगाकर मैयाके मुखकी ओर मुख उठाकर बोला।

'क्या है लाल !' मैयाने बामकरसे तोकको भी वैसे ही सम्हाल लिया है, जैसे दक्षिणकरसे कन्हाईको सम्हाले है।

मैयाकी गोदमें ये खिले इन्दीवरके समान कनूँ और तोक। पौने दो-दो वर्षके ये शिशु। दोनों एक रूप, एक वर्ण, एक-सा शृङ्गार। केवल तोक तनिक पतला और छोटा है।

दोनोंकी अलकें तैल स्निग्ध हैं। नेत्रोंमें कज्जल तो है ही, भालपर भी कज्जल विन्दु हैं। कण्ठोंमें छोटे मोतियों-की मालओंमें व्याघ्रनख लटक रहे हैं। कटिमें ढीली पीत कछनी हैं।

'मैं हाऊके घर जाऊं? तोक बड़े भोलेपनसे पूछ रहा है।

'क्यों ? मेरा लाल हाऊके घर भला क्यों जायगा ?' मैया तोककी ओर देखने लगी है।

'मेरी मैया शामको कह रही थी' तोकने कहा— 'तू अब रातको उछले कूदेगा तो तुझे हाऊके घर भेज दूंगी।'

'अच्छा ! अतुलाको आने तो दे । आज उसके कान पकड़ती हूँ ।' मैयाने तोकको पुचकारा—'वह मेरे लालको हाऊके घर भेजने चली है ।'

'मैं हाऊके घर जाऊँगा ।' तोकको अपनी माताको दण्ड दिलानेकी चिन्ता नहीं है । यह हाऊको ही देख लेना चाहता है—'मैं जाऊँगा, यह कनूँ जायगा, दाऊ दादा जायगा, भद्र जायगा, तेजस्वी जायगा, अंशु जायगा···।' तोक सखाओंके नाम गिनाता ही चला जा रहा है ।

'इतनी बड़ी सेना लेकर तू वहाँ जाकर क्या करनेवाला है ?' माता रोहिणीने समीप आकर खड़े-खड़े पूछा ।

'मैं हाऊकी नाक चिपटी कर दूँगा ।' तोकने अपनी छोटी-सी बायीं हथेलीको मैयाकी ही नाकपर रख दिया बतलानेके लिए कि वह कैसे हाऊकी नाक चिपटी करेगा ।

'लेकिन तू व्रजेश्वरीकी नाक क्यों चिपटी कर रहा है ?' माता रोहिणीने हँसकर पूछा ।

तोकको लगा कि उससे भूल हो गयी है । लेकिन भोला तोक मैयाकी नाकपर-से हथेली उठाना भूल गया है । यह तो अपनी भूलके भानसे भौचक्का मैयाका मुख देखने लगा है ।

कन्हाईने झटसे तोकका हाथ मैयाकी नाकपर-से हटाया और अपने दोनों करोंकी सुकुमार लाल-लाल हथेलियोंसे मैयाकी नाक दोनों ओरसे दबाकर उठाने

लगा है कि यदि तोकके दबानेसे यह नाक कुछ चिपटी हुई भी हो तो तत्काल उठा दी जाय।

तोक चकित, प्रशंसा भरे दृगोंसे अब कन्हाईकी ओर देखने लगा है। इसका कनूँ कितना बुद्धिमान है। अपनों-की भूल सुधार देनेमें कैसा तत्पर है।

'अब तुम्हारा नीलमणि तुम्हारी नाक ऊँची करने लगा है।' माता रोहिणी हँसती जा रही हैं। ये कृष्णसे कह रही हैं—'रहने दे लाल! तुम सबोंके होनेसे ही व्रजेश्वरी और व्रजराजकी नाक सबसे ऊँची हो गयी है। अब उसे नीची करनेवाला कभी कोई उत्पन्न ही नहीं होगा।'

मैया तो भाव-विह्वल हो गयी है। इसने दोनों भुजाओंसे कन्हाई और तोक दोनोंको एक साथ वक्षसे सटा लिया है और मैयाके पयोधरोंका अमृतरस स्रवित होकर इसकी कञ्चुकीको आर्द्र करता जा रहा है।

दूध पिला दे

'श्याम! तूने भाभीको छेड़ा है?' मैया यशोदाने द्वारसे दौड़कर आते अपने लाड़लेसे तनिक डाँटकर पूछा।

बात क्रोध करनेकी ही है। यह बेचारी नयी बहू है। अभी नन्दगाँवमें इसे आये पूरे सात दिन भी नहीं हुए। यह बहाना तो भला क्या बनायेगी। भोली लड़की है। मैयाको तो लगता है कि उसकी अपनी ही बहू है।

यह कहती है—'साससे कहनेपर उन्होंने कह दिया कि तू ही नन्दभवन चली जा। वे साथ आनेको भी तैयार नहीं हुई। कहती थीं—'नन्दरानी तेरी सास ही हैं। जो कहना है, उनसे ही कह। मेरी बात वे विश्वास नहीं करेंगी।'

आकर इसने आँचल हाथमें लेकर मैयाके चरण छुए। मैया आशीर्वाद दे, इससे पहले तो यह फफक कर रो पड़ी। मैयाने गोदमें दबा लिया। मुख पोंछा आँचलसे और पूछा तो इसने जो कुछ सुनाया, उससे गुस्सेमें भर गयी।

इसका उलाहना पूरा भी नहीं हुआ कि कन्हाई बाहरसे दौड़ता - दौड़ता आया है। वह सदा ऐसे ही आता है। लेकिन कुछ बोले, इससे पहले मैया बिगड़ उठी है।

'मैंने ? भाभीको ?' श्याम ऐसे बोला जैसे अभी बात उसकी समझमें नहीं आयी है। वह घूंघट थोड़ा दबाये इस नयी बहूको कुछ झुककर देख रहा है इस प्रकार जैसे पहचानना चाहता है कि यह भाभी है या कोई और ?

'मैया !' कन्हाई तो प्रसन्न होकर झपट-सा पड़ा है—मैं इस भाभीको कहता था—'तू मुझे दूध पिला दे !'

'दूध ?' अब चौंकनेकी बारी मैयाकी थी। वह बहू तो मुख छिपाने लगी है। 'दूध कहाँ है इसके ?'

'दूध है तो।' अब लो, कन्हाई तो मैयाके सामने ही इसका अञ्चल खींचने लगा है।

'अरे हट ! मैयाने लालाको हाथ पकड़कर खींचा। 'अभी इसके बच्चा कहाँ है ? दूध तो तब होगा जब इसके बेटा होगा।' मैया बड़ी कठिनाईसे अपनी हँसी दबाये है।

'तब तू इसे जल्दीसे बेटा देनेको कह !' श्याम मैयासे अनुरोध करने लगा है और नयी बहू तो वह लज्जासे भागी जा रही है। वह भी हँसीसे घूँघटमें हिलती-डुलती जा रही है।

नटखट

'दारी !' नन्हे कन्हाईने मुख फुलाकर असन्तोषकी पूरी भङ्गी प्रदर्शित करते कहा।

दारी—व्रजमें बहुत प्रचलित गाली है। यद्यपि गाली है, आप चाहें तो अश्लील गाली भी कह सकते हैं, किंतु व्रजमें इसका अत्यन्त सामान्य उपयोग है। कोई इसे गाली मानता-समझता नहीं।

'दारी' वृद्धासे लेकर नन्हीं बालिका तकको और 'दारीका' अथवा 'सारे' समवयस्क या कुछ छोटे पुरुष मात्रको प्यारकी गाली—गाली भी नहीं, प्यारकी पदवी, सम्बोधन है व्रजमें ; किंतु आज कन्हाईने इसे 'दारी' कहकर गाली दी है। गाली देनेका पूरा भाव, पूरी झुंझलाहट है इसकी मुख भङ्गीपर।

कन्हाई नन्हा-सा तो है ही। यही कोई पाँच वर्षका और अभी सबेरे-सबेरे सोकर उठा है। वस्त्रके नामपर कटिमें केवल कछनी है। वह भी इस समय ढीली-ढाली

हो रही है। घुँघराली, काली, कोमल केशराशि इस समय रूक्ष हो रही है। मुखके चारों ओर बिखरी है। भालपर कोई तिलक नहीं। अञ्जन थोड़ा फैल गया है, पर बहुत नहीं फैला है।

चरणोंमें मणि-नूपुर, कटिमें रत्न-किंकिणी, करोंमें कङ्कण, भुजाओंमें केयूर, वक्षपर छोटे मोतियोंकी माला, कण्ठमें कौस्तुभ, कानोंमें पाटल रत्न-कुण्डल। लेकिन कुण्डल-केश राशिसे झाँकते लगते हैं। न मयूरपिच्छ, न बनमाला, न तिलक और न पटुका। नन्दतनय अभी सोकर उठा है; परन्तु आलस्य नेत्रोंसे चला गया है।

यह कोई दूसरे गाँव की है। तनिक ठिगनी, थोड़ी मोटी-चौड़ी और अच्छी गारी। लगता है दो-तीन बच्चों-की माता होगी। किसी ऋषि-मुनिने कुछ सुना दिया होगा। ये जटा-दाढ़ी वाले बाबा लोग पता नहीं क्या-क्या कहते हैं इस नन्हें व्रजराज-तनयको। यह उनकी बातोंके ही बहकावेमें आकर आती है। सबेरे-सबेरे नन्दगाँव आ गयी और कन्हाईको देखते ही दूरसे भूमिपर मस्तक रख-कर प्रणाम किया इसने।

कन्हाई है ही अटपटा। कोई नहीं कह सकता कि यह कब, किसके किस कार्यसे रुष्ट या तुष्ट हो जायगा। इसने प्रणाम किया और श्याम नूपुर रुनझुन करते दौड़ा आया है। इससे ३–४ हाथ दूर खड़े होकर मुख बनाकर रोषसे देखता, दाहिने हाथकी मुट्ठी बायीं हथेलीपर मारता, गाली दी इसे—'दारी !'

'तू गाली देता है ?' भद्रने पास आकर तनिक डाँटते स्वरमें कहा। यह श्यामसे केवल नौ महीने बड़ा भद्र ऐसा रोब दिखाता है जैसे यही बड़ा हाऊ है।

'हाँ' कन्हाईने ढिठाईसे कहा—'यह मेरे सामने धरती-पर सिर क्यों पटकती है ? मैं कोई पत्थरका देवता हूँ। देवता तो पत्थरका होता है।'

'दारी !' उसकी ओर रोषसे देखते इस नटखटने फिर अपनी गाली दुहरा दी।

प्रतिबिम्ब-शृङ्गार

श्याम और भद्र दोनों अभी चार वर्षसे छोटे हैं। भद्र बड़ा है कन्हाईसे लगभग तीन महीने ; किंतु बालकोंमें कहाँ यह बड़ा-छोटापन चलता है।

बालक तो बहुत हैं ; किंतु सब इस समय पुलिनपर दाऊको देवता बनानेमें लगे हैं। सब दाऊको बैठाकर उसके चारों ओर रेत एकत्र कर रहे हैं। सबने कटि तक दाऊको रजमें ढक दिया है। दाऊ बैठा है पालथी मारे और बालक दोनों हाथों उसके आसपास रेत एकत्र करने-में जुटे हैं।

श्याम और भद्र यमुना तटपर आ गये हैं। आया तो था अकेला भद्र ; किंतु अब श्याम भी आकर उसके बायें कन्धेसे कन्धा सटाकर वैसे ही उझका जलमें देखने लगा है। पता नहीं भद्र जलमें अपना प्रतिबिम्ब देख रहा था

या और कुछ। श्याम यह देखने उझक गया है कि पानीमें भद्र क्या देखता है।

दोनों एक-एक घुटना मोड़े, एक-एक हाथ भूमिमें टिकाये झुके हैं। ताम्र गौर भद्र भी कछनी पीली ही बाँधता है। इसने अभी अपना नीला पटुका कन्धेसे खिसका दिया है। वह इसकी कछनीको घेरे पैरोंके पास पड़ा है।

तैल स्निग्ध, नन्हे मोतियोंकी लड़ीसे सजे केशमें माता रोहिणीने हंसका पिच्छ लगा दिया है। भुजाओंमें छोटे केयूर हैं। करमें कङ्कण, पैरोंमें नूपुर, कानोंमें मणि-कुण्डल। दाहिना पैर मोड़कर खड़ा किये, वामकर भूमिमें टेके भद्र उझककर जलमें कुछ देख रहा था।

कन्हाई अपना पटुका कितने क्षण कन्धेपर रख पाता है? वह उसे कहीं गिरा आया है। भद्रसे सटकर, दाहिने चरणको पालथी बनाये, बायाँ पैर घुटना मोड़कर खड़ा किये, दाहिना कर भद्रके वाम करसे सटाकर टिकाये भूमिपर, भद्रके कन्धेसे कन्धा सटाकर श्याम भी जलमें उझककर देखने लगा है।

दोनोंके सिर सटे हैं। दोनोंके मस्तकमें लगे मयूर-पिच्छ और हंसपिच्छ पास-पास लहरा रहे हैं। दोनोंकी अलकें झुककर आगे लटक आयी हैं। दोनोंके कुण्डल आगे झुके हैं। दोनोंके अञ्जन-रञ्जित बड़े-बड़े लोचन, गोरोचन अङ्कित भाल।

भद्रने अपना बायाँ कर उठाया। दाहिने करका अरुण पाटल पुष्प बायें करमें लिया और धीरेसे पुष्प कन्हाईकी अलकोंमें सजाकर, वाम भुजा श्यामके कण्ठमें डाल दी उसने। अब उझककर कन्हाईके केशोंमें लगाये उस पुष्प-का प्रतिविम्ब पानीमें देखने लगा है। यह पुष्प अभी थोड़ी देर पहिले उसे दाऊने दिया था; किंतु कनूँकी अलकोंमें पहुँचकर यह कितना सुन्दर लगता है!

श्यामने पानीमें अपनी अलकोंमें लगा पुष्प देखा। भद्रकी ओर मुख किया उसने। इसके दृग कहते हैं—'तूने इस पानीवाले मुखकी अलकोंमें पुष्प लगा दिया?'

एक लगभग वैसा ही अरुण पुष्प कन्हाई भी लाया है। इसे भी दाऊने ही दिया है। अब यह अपना पुष्प पानी वाले भद्रके सिरकी अलकोंमें लगावेगा।

श्यामने दाहिना कर उठाया और पानीमें हाथ डाल-कर पुष्प छोड़ दिया इसने। अरे! पुष्प तो ऊपर आया और वह तैर चला प्रवाहमें। भद्रके प्रतिविम्बकी अलकों-में तो वह लगा ही नहीं।

'तुम दोनों वहाँ क्या कर रहे हो?' मैयाको बालक तनिक देर न दीखें तो ढूंढ़ने भागती है। वह दूरसे ही पुकारती आ रही है। लेकिन मैयाके आनेसे इस समय श्याम प्रसन्न हुआ है। वह हाथ हिलाकर मैयाको समीप बुला रहा है।

'वहाँ जलमें क्या है?' मैयाने हाथ फैलाये; किंतु कृष्ण तो उसे जलमें देखनेको संकेत कर रहा है।

'वह फूल—' कृष्णने जलमें अपने प्रतिविम्बकी अलकोंमें लगे पुष्पकी ओर संकेत किया—'उसे उस भद्रके केशोंमें लगा।'

मैया हँस गयी अपने लालके भोलेपनपर। लेकिन श्याम जलमें संकेत कर रहा है। इसकी बात न सुनो तो मचलने लगेगा। मैयाने कृष्णकी अलकोंसे पुष्प निकाला और भद्रकी अलकोंमें लगा दिया।

भद्रके प्रतिविम्बकी अलकोंमें पुष्प लगा देखकर कन्हाई प्रसन्न होकर ताली बजाने लगा है और अभी उस प्रतिविम्बको ही देखे जा रहा है।

अपना कनूँ इतना प्रसन्न है तो अब पानीमें प्रतिविम्ब कौन देखे। भद्र कन्हाईको देख-देखकर ताली बजा रहे हैं और मैया अपने इन दोनों बालकोंको प्रसन्न देखकर पुलकित हो रही है।

कृकलास ?—

'माँ! माँ! तू इसे मार!' कन्हाई पुकारता दौड़ा आ रहा है। यह सदा इसी प्रकार उतावलीमें रहता है।

'क्या है ? कौन ?' माता रोहिणीने साधारण स्वरमें पूछा। उनको पता है कि उनका यह चपल इसी प्रकार दिनमें कितनी ही बार पुकार करता आता है।

'इसे मार!' यह तो नन्दनन्दनकी साधारण माँग है। कभी किसी गोपीको, कभी किसी बूढ़े गोपको, कभी किसी कपिको या किसी कौवेको ही मारनेको कहता दौड़ा

आवेगा। जो इसकी बात न माने, जो इसके कहे अनुसार न चले, जो इसे खिझावे, उस सबको माँ या मैयाको मारना चाहिए। यह कहाँ समझता है कि माँ किसी वृद्ध गोप या गोपीको मार नहीं सकती। इसके लिए माँ सर्व-समर्थ हैं। वे वृक्षपर कूदते कपि और उड़ते काकको भला क्यों नहीं मार सकतीं ?

नन्हा कन्हाई केवल कटिमें कछनी लपेटे है। अलकें थोड़ी अस्तव्यस्त हो गयी हैं, परन्तु उनमें लगी मुक्तामाल और मयूरपिच्छ यथास्थान हैं। भालपर तिलक, कज्जल-विन्दु, नेत्रोंमें अंजन, अभी इसने धूलि-स्नान नहीं किया है। इसका अङ्ग अभी स्निग्ध, स्वच्छ है।

'तू चल !' आकर इसने माता रोहिणीका वामकर पकड़ा और उन्हें खींचने लगा।

'कौन है ?' माता द्वारसे बाहर जानेसे पूर्व पूछ लेना चाहती हैं; किंतु कृष्ण जब अपनी धुनमें होता है, किसी-की सुनता कहाँ है।

'इसे मार ! यह मुझे चिढ़ाता है।' द्वारके बाहर भवन भित्तिपर कहींसे आकर एक मोटा कृकलास (गिरगिट) चिपका बैठा है। तनिक पीताभ, लाल कण्ठ, ग्रीवा। लम्बी पूंछ फैलाये वह बार-बार झटका देकर अपना सिर मटकाता है। कन्हाईने माता रोहिणीको अपने हाथके संकेतसे दिखलाया।

'यह तुझे चिढ़ाता है ?' माताको हँसी आ गयी। 'तू भी इसे चिढ़ा दे।'

माताने जानबूझकर नहीं कहा कि—'तू सबको चिढ़ाता फिरता है, भला कोई तुझे चिढ़ानेवाला तो आया।'

'अच्छा !' कृष्ण दो क्षणतक देखता रहा उस गिरगिटको। जैसे देख रहा हो कि यह चिढ़ाना बन्द करता है या नहीं। लेकिन गिरगिटने फिर दो-तीन बार सिर हिलाया।

अब कन्हाई वहीं उसके सामने भूमिमें दोनों पैर पूरे फैलाकर पेटके बल लेट गया है। दोनों भुजाएँ सीधी खड़ी करके कुछ उदरका भाग, वक्ष, ग्रीवा ऊँची उठा रखी है इसने। अपने मस्तकको झटका देकर तीन-चार बार ऊपर-नीचे किया।

बेचारा कृकलास इसे स्थिर अपलक देखने लगा है। वह अपना सिर मटकाना भूल ही गया है।

'और चिढ़ायेगा ? चिढ़ा !' कन्हाई ने फिर अपने मस्तकको दो-तीन बार झटके देकर ऊपर नीचे किया और कृकलाससे पूछने लगा। जैसे उसे इसने चिढ़ाकर पराजित कर दिया है।

माँ रोहिणी मुखसे वस्त्र लगाकर निःशब्द हँस रही हैं। माता यशोदाको उन्होंने हाथके संकेतसे समीप बुलाया है कि अपने लालकी इस विजयको वे भी देख सकें।

आपने मत्स्य, कच्छप, वाराह, हयग्रीवादि अवतारोंकी बात सुनी है। भगवान नारायणने हंसका भी रूप धारण

किया था और नृसिंहका भी ; किन्तु मैया यशोदाके इस अङ्कधनका यह कृकलासावतार–इतना सुन्दर, इतना मनोहारी, ऐसा चपल आपको कोई अवतार कहीं मिला है ?

कन्हाई तो कृकलासको चिढ़ाकर अब मैयाकी गोदमें जानेको दोनों कर उठा चुका है। इसके उदरका निचला भाग धूलि-धूसर हो चुका है।

अनुकरण

अनोखा अनुकरण करता है यह नन्हा नन्दलाल। इसकी नकलमें भी नवीनता होती है। यह उसे वास्तविकतासे भी अधिक रोचक, आनन्ददायी बना देते हैं।

गोपियोंको तो इसे देखे बिना चैन नहीं, कोई किसी बहाने और कोई किसी बहाने नन्दभवन पहुँची ही रहती है। किसीको जावन लेना है, किसीके घरकी अग्नि बुझ गयी है। किसीको पूछना है कि उसके पुत्र या देवरकी वर्षगाँठ कब पड़ेगी। काम बहुत हैं और सबको मैया यशोदासे ही सब पूछना, कहना, लेना है। मैयाको सबने बलात् ज्योतिषी, वैद्य आदि भी मान लिया है।

मैया हँसती है। कभी कह भी देती है कि उसे गाय या बछड़ेकी औषधिका क्या पता। उसके एक ही तो लाल हुआ। बच्चोंका उपचार भी तो उसे पता नहीं है। लेकिन बड़ी-बूढ़ियाँ भी सवेरेसे आ बैठती हैं तो दूसरी आवेंगी ही। तरुणियाँ कह देती हैं–'किससे पूछें ? जिनसे पूछना है, वे अपने घर कभी मिलती भी हैं ?'

सब कन्हाईको घेरे रहेंगी। कोई बूढ़ी तनिक खाँसी कि यह नटखट अपना पूरा मुख खोलकर सिरको झटका देकर ऐसे खाँसेगा कि सब हँसने लगेंगी।

'तेरी मैया दही कैसे चलाती है?'

अब श्याम दही चलानेकी ही नकल नहीं करेगा, यह कटि, उदर, वक्ष सब हिलावेगा—ऐसे हिलावेगा कि मैया भी हँसकर लोट-पोट हो जाय।

'तेरे बड़े ताऊ कैसे चलते हैं?'

यह कहींसे कोई लकुट ढूँढ़ेगा। पगड़ी लपेटेगा। कन्धे पर लकुट रखकर सिर झुकाकर इसका चलना और दो-चार पद चलकर इधर-उधर देख लेना देखने ही योग्य होता है।

अपने छोटे चाचाकी नकल करेगा तो बार-बार मूँछों पर ताव देनेका अभिनय करेगा। इतना अकड़कर चलेगा, मानो पीछे गिर जानेवाला हो।

'तेरी ताई कैसे सोती है?'

अब यह सिकुड़कर पैर पेटमें दबाकर खर्राटेका स्वर पूरी शक्तिसे निकालेगा।

'लाल! यह कैसे सोती है?' ताई या माँ रोहिणी किसी भी तरुणी गोपीकी ओर संकेत कर दे सकती हैं। वह लज्जासे लाल होकर झिड़केगी—'चल, मैं ऐसे कब सोती हूँ।' क्योंकि यह नटखट तो दोनों हाथ-पैर पूरे फैला-चित लेट जायगा, उसके शयनका नाटक करते।

यह गोपियों, गोपोंकी ही नकल करता हो, ऐसी बात नहीं है। बिल्ली म्याऊँ करेगी तो यह भी उसके साथ 'म्याऊँ-म्याऊँ' करने लगेगा। कोई कुत्ता भूँक दे तो यह भूँकेगा और बन्दरको दोनों हाथ आगे करके, झुककर, मुख पूरा खोलकर 'खों-खों' करना तो इसका प्रिय खेल है।

आँगनमें नाचते मयूरके साथ दोनों कर पीठकी ओर करके नाचेगा। मार्गमें पावसमें मेढकके समीप बैठकर उसके कूदनेपर वैसे ही कूदेगा। यह तो 'हम्मा' करती गायोंको भी 'हम्मा' करने लगता है और बछड़ोंके साथ भी कूदता या दौड़ता है।

'लाल ! यह श्रीदामा रूठता कैसे है ?' एक दिन श्रीदामाके नन्दसदन आनेपर एक गोपीने पूछ लिया।

श्यामसुन्दरने एक बार देखा श्रीदामाकी ओर—'कहीं यह झगड़ा तो नहीं करेगा ?'

श्रीदामा भी इसकी ओर कुतूहलसे देखने लगा है—'यह क्या बतलावेगा ?'

दोनों कर भूमिमें टेककर, दोनों पैर पीछे मोड़कर यह चपल बैठ गया है। सिर झुकानेसे अलकें मुखके चारों ओर आ गयी हैं। इसने मुख खूब लम्बा खींच लिया है और कपोल फुला लिये हैं।

श्रीदामा हँस पड़ा है और गोपियाँ तो सबकी सब अञ्चलमें मुख छिपाकर हँसने लगी हैं।

तेरा घर है तो धो !

'तू यहाँ क्या कर रहा है ?' गोपी यमुनाजीसे जल लेकर आयी तो देखती है कि उसका घर, आँगन बालकोंसे भरा है। तीनसे पाँच वर्षके बालक। गोरे सावँले, सलोने सुन्दर बालक। सब सजे, सबके केश तैल, स्निग्ध, सबके नेत्रोंमें अञ्जन, सब आभरण-भूषित। सब हँस रहे हैं, उछल-कूद कर रहे हैं। नन्दनन्दन एकसे दूसरे कक्षमें दौड़ा-दौड़ कर रहा है। गोपी जल-कलश भूमिपर रखना भूल गयी। वैसी ही द्वारपर ठिठकी कई क्षण खड़ी रही। फिर उसने पुकारकर पूछा।

'क्यों ? कुछ भी कर रहा हूँ, तुझे क्या ?' नन्हा कन्हाई एक कक्षके द्वारपर खड़ा हो गया है। वह बिना हिचके गोपीकी ओर देखकर ऐसे पूछ रहा है, जैसे वह स्वयं गृहपति है और यह कोई कहींसे भटक आयी है।

'मुझे क्यों नहीं ? मेरा घर है।' गोपीको हँसी आ रही है इस नटखटकी धृष्टतापर।

'यही तो देख रहा हूँ।' कन्हाई इधर-उधर देखता है।

'क्या ?' गोपी हँसकर पूछती है।

'यह मेरा घर तो नहीं है।' कृष्णचन्द्र वैसे ही निर्भय खड़ा है—'यह तेरा घर है ?'

'और नहीं तो तेरे बाबाका है।' गोपीने स्वर तनिक कड़ा किया।

'अरे रुक ! यह क्या करने जा रहा है ?' गोपी कुछ और कहने जा रही थी कि चौंककर चिल्लायी। कन्हाईने खड़े-खड़े ही कछनी खोल ली है। इसके सब सखाओंने कछनियाँ खोलकर हाथमें ले ली हैं।

'मेरे बाबाका घर तो है नहीं।' नन्दलाल निश्चिन्त खड़े-खड़े ही लघुशङ्का प्रारम्भ कर चुका है। इसे लघु-शङ्का लगी है तो सब बालकोंको लगेगी ही। 'मुत्ती कर रहा हूँ। तुझे करना है तो तू भी कर।'

सैंकड़ों बालक हैं। पूरा आँगन, लगभग सभी कक्षोंमें भरे हैं। जो जहाँ खड़ा है, वहीं जलधारा गिराने लगा है। गोपी चिल्लायी—'नहीं ! नहीं !'

'तेरा घर है तो तू धो।' कन्हाई अँगूठा दिखाता, मटकता, हँसता इसके समीपसे ही निकल भागा है। सबके सब इसे छूते, चिढ़ाते, धक्का देते भरसे बाहर भाग गये।

'तो यह चपल इसी कामके लिए स्थान देख रहा था ?' गोपीको हँसी आ रही है। थोड़ी झल्लाहट भी हो रही है—'मेरा घर इन्हें इसी योग्य लगा ?'

बड़ी कठिनाई है। सब कक्ष, पूरा आँगन जहाँ-तहाँ सब गीला कर गये। अब न भीतर पैर रखनेको स्थान है, न कलश रखनेको। ऊपरसे सब कह गये—'तेरा घर है तो धो।'

अब दोपहर तक तो इसे सब धोते ही रहना पड़ेगा।

'चलो कुशल हुई।' मन-ही-मन कहती कलशका जल आँगनमें फेंककर लौट पड़ी है—'इन्हें कोई बड़ी आवश्यकता नहीं थी, नहीं तो मैं आज मर लेती।'

अब इसने सीख लिया कि कमसे कम इस नटखट नन्दलालसे घर इसका नहीं है, यह भूलकर भी नहीं कहना चाहिए। अपना घर कहा तो धोनेकी विपत्ति सिर धरी है। किसीसे कहेगी तो सब हँसी ही तो करेंगे? आपपर ऐसी विपत्ति आ जाय तो?

वेणी-बन्धन

'तू यमुना किनारे चलेगा?' श्यामने भद्रसे पूछा। 'बहुत आनन्द आवेगा।'

'तू यमुनामें स्नान करेगा तो मैया खीझेगी' भद्र सदा इस नटखटका सरलतासे साथ नहीं दिया करता।

'तू चल तो सही, मैं स्नान नहीं करूँगा। हम झटपट लौट आवेंगे।' कन्हाईकी कोई योजना है। अकेले वह पूरी होने योग्य नहीं। दाऊको उसमें सम्मिलित नहीं किया जा सकता। श्रीदाम और सुबलको सर्वथा नहीं। मधुमङ्गल पोङ्गा है। विशाल, ऋषभ, अर्जुन, वरूथपादि बड़े सखा साथ नहीं देंगे। सब सीधे हैं। अंशु, तेजस्वी, देवप्रस्थ, तोक बहुत छोटे हैं। ये साथ भी दें तो मध्यमें हँसकर बात बिगाड़ देंगे। अब केवल भद्र बचता है। श्याम इसे प्रस्तुत करनेमें लगा है।

'भद्र दादा!' बहुत आनन्द आवेगा। तू मेरी बात मान ले।' कृष्णको मनुहार करनी होती है, तब इस प्रकार दादा कहता है।

आज गोधन-पूजनका दिन है। दीपावलीका दूसरा दिन। गोबर्धन-पूजन भी होगा। गायोंको वनमें जाना नहीं है। बालक सब गायों-बछड़ोंके शृङ्गारमें लगे हैं। इतनेमें थोड़ी देर यमुनातट घूम आनेमें भद्रको आपत्ति नहीं है। कन्हाईको अकेले तो जाने नहीं दिया जा सकता। यह पता नहीं क्या ऊधम करे वहाँ।

'बरसानेकी लड़कियाँ अभी जल लेने आ रही हैं। तू उन सबकी चुटिया एक साथ बाँध देना।' कृष्णने प्रस्ताव किया।

'तू ही कर यह काम।' भद्र झल्लाया—'जैसे वे तुझे अपनी वेणी एक साथ बाँधने देंगी।'

'तू सबके सिर इकट्ठे कर दे तो मैं बाँध दूँगा।' श्यामने सहज ढङ्गसे कहा—'नहीं तू बाँधना स्वीकार कर ले, मैं उनके सिर इकट्ठे कर देता हूँ।'

'उनके सिर कोई कलश हैं कि तू उठाकर उन्हें इकट्ठे कर देगा?' भद्रको यह विनोद भाया तो है। सब लड़कियोंकी चुटिया एक साथ बाँध दी जाय तो सचमुच आनन्द तो आवेगा, पर वे बाँधने देंगीं।

'मैं कर दूँगा। तू यहाँ बैठ।' नन्दनन्दनने भद्रको यमुनाके उज्ज्वल पुलिनपर बैठाया। उसे पालथी मारकर

बैठानेके पश्चात् उसकी गोदमें सो गया पैर लम्बे फैला-कर। पीठ बाहरकी ओर और मुख भद्रकी गोदमें छिपा।

'ये आज ऐसे क्यों पड़े हैं?' बालिकाओंका यूथ छोटी-छोटी कलसियाँ मस्तकपर धरे आया। वे गाती, हँसती आयी थीं। उन्हें यमुना जल ले जाकर आज स्वयं गोपूजन करना है। पुलिनपर सखाकी गोदमें मुख छिपाये शान्त लेटे श्यामसुन्दरको देखकर सबका हृदय धक्से हो उठा। कलसियाँ पुलिनपर पटककर सब दौड़ीं।

'क्या हुआ है इन्हें?' भद्रको सबने घेर लिया। 'इन्होंने एक हाथसे क्यों पेट पकड़ रखा है? इनका शरीर तो हिल रहा है। बहुत पीड़ा है इन्हें?'

'तुम्हीं पूछो, देखो।' भद्र कठिनाईसे हँसी रोके है। जानता है कि यह नटखट हास्यके कारण हिल रहा है। 'यह बोलता तो है नहीं।'

'तुम्हें क्या हुआ है? कहाँ पीड़ा है?' कोई बैठ गयीं। कोई झुक गयीं। सब अत्यन्त आकुल देखने पूछने लगीं।

भद्रकी जंघापर बराबर कन्हाई अँगुलियोंसे दबाव डालकर संकेत कर रहा है—'इनकी चुटिया बाँध!'

भद्रने दोनों हाथ उठाये। बालिकाएँ व्याकुल श्यामको देखने, छूने, पूछनेमें लगी हैं। उनको पता ही नहीं है कि कोई उनकी वेणी पकड़कर एकमें, बाँधनेमें लगा है।

'अब उठता क्यों नहीं ?' सबकी वेणियाँ समेटकर एकमें बाँधकर भद्रने सखाकी पीठपर धीरेसे धौल धर दी और हँसा ।

कन्हाई इसीकी प्रतीक्षामें था । वह तो अपने पैरोंकी ओर अत्यन्त फुर्तीसे सरका और दूर जा खड़ा हुआ । भद्र भी पीठकी ओर लुढ़क कर भागा।

लड़कियाँ अब चौंकीं । उनके मस्तक सट गये, खिच गये वहाँसे हटनेका प्रयत्न करते ही । सबकी सब चिल्लायीं; किंतु दोनों नटखट दूर खड़े ताली बजाकर हँसते, उछल रहे हैं ।

इतनी सारी बालिकाओंकी एकमें बँधी चुटियाँ । अब जबतक उनमेंसे एक सुलझ न जाय, कोई कैसे दूसरोंको इस उलझनसे छुड़ावे । सबके कर ऊपर उठे अपनी चुटिया सुलझानेमें लगे हैं । वे अभी ठीक खीझ भी नहीं पाती हैं और वे दोनों ऊधमी तो दूर खड़े ताली बजा रहे हैं ।

पूजा

कन्हाईको ऊधमके अतिरिक्त जो कार्य प्रिय हैं, उनमें से एक है पूजा । यह दूसरी बात है कि जिसकी पूजा की जाय, वह पूजाको भी इस चपलका एक ऊधम ही माने ।

श्याम कब किसकी पूजा करना चाहेगा, कोई नियम नहीं है । यह तो अपने बाबाके महावृषभ धर्मकी, कामदा-की नन्दाकी भी पूजा कर लेता है । करने दें तो अपने बछड़े गौरव या मोटे बन्दरकी भी पूजा करनेमें इसे

आपत्ति नहीं है ; किंतु गौरवकी पूजा करने जाओ तो वह कूदकर भागता है और मोटा बन्दर तो पेड़पर ही आ बैठता है।

कृष्णको पूजा छोटे देवताकी प्रिय नहीं है। बाबाने जब कहा—'भगवान शालिग्रामकी पूजा कर।' तब मुँह बना लेता है—'वे तो नन्हेसे हैं। न बोलते हैं, न खाते हैं।'

वैसे मूर्तिकी पूजा करनी हो तो यह शिवलिङ्गकी—बड़ेसे शिवलिङ्गकी श्रद्धा सहित पूजाकर लेता है ; किन्तु प्रिय तो पूजाके लिए इसे चलता, बोलता, खाता देवता है। ऐसी पूजाके लिए इसके देवता दाऊ दादा हैं। जब चाहो, उनकी पूजा कर लो। वे चुप-चाप बैठ जायँगे और जिसके जैसे मनमें आवे, पूजा करते रहो।

'तू मेरी पूजा कर।' तोकने कहा; क्योंकि आज सवेरे-सवेरे श्यामको पूजाकी धुन चढ़ी है। भद्र, सुबल, श्रीदाम, विशाल, देवप्रस्थ, वरूथप आदि सबको समेट लाया है—'हम सब आज पूजा करेंगे।'

'किसकी पूजा करेगा ?' भद्रने पूछा—'दाऊ दादाको बुला लाऊँ ?'

'नहीं, नये देवताकी पूजा करेंगे।' कन्हाई कहाँ नैष्ठिक पुजारी है कि एक ही देवताकी रोज-रोज पूजा करता रहे।

'इस मधुमंगल की ?' भद्र हँसा। कृष्णचन्द्र हाँ करने ही वाला था ; किंतु मधुमंगल भाग खड़ा हुआ। वह इस

नटखटको जानता है। पता नहीं पूजाके नामपर यह इस शीतकालमें उसके सिरपर कितने घड़े पानी डालेगा।

'तू मेरी पूजा कर।' नन्हें तोकको देवता बननेमें कोई आपत्ति नहीं है। जानता है कि श्याम अपने इस छोटे भाईको तंग नहीं कर सकता।

'तू तो छोटा है।' कन्हाईने अस्वीकार किया—'छोटा तो देवताका प्रसाद खाता है। देवता बड़ा होता है।'

'बड़े तो बाबा हैं। तू बाबाकी पूजा करेगा?' भद्रने पूछा।

'हम बाबाकी पूजा करेंगे। मैं उनकी दाढ़ीमें फूल लगाऊँगा।' तोक ताली बजाकर नाचने-उछलने लगा है।

कृष्णचन्द्रको पूजा करनी हो तो केवल इस पुजारीकी श्रद्धासे काम नहीं चलता। देवतामें भी पूजा करानेकी श्रद्धा होनी चाहिए। बाबामें इतनी श्रद्धा नहीं है। वे अभी अपने नन्हें शालिग्रामजीकी पूजामें लगे थे। बालकों-की भीड़ पहुँची, सब चिल्ला रहे थे—'हम बाबाकी पूजा करेंगे।' बाबाने पुचकार कर कह दिया—'तुम लोग माँ-की पूजा करो। माँ सबसे बड़ी देवता होती है।'

'लाल! तू अपनी मैयाकी पूजा कर। व्रजेश्वरी तो तेरी मैया हैं।' कन्हाई मित्रोंको लिए माता रोहिणीकी पूजा करने पहुँचा तो उन्होंने भी पिण्ड छुड़ा लिया। इन बालकोंसे पूजा करानेकी श्रद्धा उनमें भी नहीं है।

'तू यहाँ बैठ !' श्यामने मैयाका हाथ पकड़ा। इसे पूजा करनी है और यह भी कोई बात है कि जिसे देवता बनाने जाओ, वही अस्वीकार कर देता है। अब कृष्ण मैयाका अस्वीकार नहीं सुनेगा।

'क्या बात है ?' मैयाने पूछा।

'तू बैठ।' कन्हाई मचला—'हम पूजा करेंगे।'

मैया हँसकर बैठ गयी है और उसके लालके साथ ये सैकड़ों बालक मैयाकी पूजा करनेमें लगे हैं।

बालकोंकी पूजा—इसमें क्रम और विधिका क्या काम। अवश्य मधुमंगल मन्त्र बोलने आ गया है। यह कहता है—'मैं इन सबका जन्मसिद्ध आचार्य हूँ। अपनी दक्षिणा मैं क्यों छोड़ दूँ ?'

कोई मैयाके केशोंमें कुसुम लगा रहा है। कोई इसकी नासिका ही चन्दन-श्वेत करने लगा है और कोई चरणों-पर जल डाल रहा है। कन्हाई पूजा कर रहा है, अपने मित्रोंके साथ मैयाकी पूजा कर रहा है।

पता नहीं क्यों गोपियाँ और माता रोहिणी भी हँस रही हैं खड़ी-खड़ी। हँस तो मैया भी रही है, पर देवताको तो प्रसन्न होना ही चाहिये। कन्हाई पूजा जो कर रहा है।

शपथ

'कनूँ !' आज तेरी वर्षगाँठ है।' भद्रने सबेरे ही सूचना दी।

'हाँ, है तो।' मैयाने कल ही कहा था कि सबेरे गायें चराने नहीं जाना है, वर्षगाँठ है ; किंतु इस नन्हेंसे कृष्णको स्मरण कहाँ रहता है कि वर्षगाँठ क्या होती है और उसमें क्या करना पड़ता है। अब भद्रने कहा है तो वह जानता होगा। पूछा कन्हाईने—'वर्षगाँठको क्या होता है ?'

'मैं तेरी चुटियामें गाँठ लगाऊँगा।' भद्रको एक विचित्र बात सूझ गयी—'मैं लगाऊँगा, सुबल लगावेगा, तोक लगावेगा, ऋषभ लगावेगा, अर्जुन लगावेगा, श्रीदाम......'

'बापरे ! यह भद्र तो नाम गिनाता ही चला जा रहा है।' कन्हाईने दोनों हाथ अपनी चुटियापर रख लिये। वह चुटिया टटोलने लगा—'भद्र बड़ा नटखट है, कहीं इसने पहिले ही गाँठ न लगा दी हो।'

'इतने सखा—सबके सब लगावेंगे तो फिर बेचारी चुटिया तो क्या सिरकी सब अलकें गाँठ ही गाँठ बन जायँगी।' सोचकर ही कन्हाई घबड़ाया। उसने कहा—तेरी वर्षगाँठ है।'

'वर्षगाँठ तो तेरी है, मेरी कैसे हो जायगी।' भद्रने मुँह बनाया।

'होगी कैसे नहीं। मैं कर दूंगा।' लेकिन श्याम समझता है कि उसके करनेसे वर्षगाँठ नहीं होगी, अतः कहता है— 'भैयासे कहूँगा, माँ से कहूँगा, बाबासे कहूँगा-भद्रकी वर्ष-गाँठ कर दो।'

'वर्षगाँठ तो महर्षि शाण्डिल्य आकर कराते हैं।' भद्रने अँगूठा दिखाया—'बाबाने उन्हें बुलाया है। वे तेरी वर्ष-गाँठ कराने आते ही होंगे।'

अब नन्दनन्दन कुछ चिन्तामें पड़ गया है—महर्षि शाण्डिल्य आनेवाले हैं, उनको रोका तो जा नहीं सकता और ये ऋषि लोग जो करना चाहते हैं, उसे किये बिना मानते नहीं। तब?'

बात और उलझ गयी है—'महर्षि शाण्डिल्य चुटियामें गाँठ लगावेंगे तो सब ऋषि-मुनि, ब्राह्मण भी लगावेंगे। सब बड़े-बूढ़े गोप लगावेंगे, सखा लगावेंगे, कदाचित् गोपियाँ भी······' ओह! गाँठें-गाँठें, लाखों-करोड़ों गाँठें सिरके केशोंमें···' कन्हाई सिर झुकाकर सोचने लगा है।

'ये सब लोग मेरे ही सिरके केशोंमें गाँठें क्यों लगा-वेंगे?' सब लगावेंगे तो अकेली चुटियामें लगानेसे कैसे पूरा पड़ेगा। तब तो सिरके पूरे केशोंमें गाँठें लगेंगी और यह बला उसीके सिर क्यों? दूसरे किसी सखाकी ऐसी वर्षगाँठ कभी आयी हो, यह तो इसे स्मरण नहीं आता।

'तू भूल जाता है—जल्दी ही भूल जाता है।' भद्रने झटसे एक कारण गढ़ लिया—'जो तेरे केशोंमें गाँठ लगा देगा, उसे तू नहीं भूल सकेगा।'

'मैं नहीं भूलूँगा—किसीको नहीं भूलूँगा। कृष्णने छुटकारेका उपाय देख लिया। वह भद्रसे आग्रहपूर्वक कह रहा है। भद्रकी बात सटीक बैठी है—जो चुटिया या केशमें पक्की गाँठ लगा देगा, उसे भूला कैसे जा सकता है।

'अच्छा, नहीं भूलेगा ?' भद्रने परिहासका स्वर सर्वथा छिपा रखा है। वह गम्भीर बन गया है—'शपथ खा।'

'शपथ ?' कन्हाई चौंका। वह भला किसकी खाय। लेकिन एक नाम उसे झटपट स्मरण आ गया—'मामा कंसकी शपथ !'

'चल !' भद्र कहीं ऐसे भुलावेमें आता है—'कंसकी शपथ भी कहीं शपथ होती है ?'

'अच्छा अपनी···।' लेकिन भद्रने मुखपर हाथ रख दिया।

'तू मेरी शपथ खा !'

'तेरी ?' एकदम चौंका कृष्णचन्द्र। उसने जोरसे सिर हिला दिया। भद्रकी, सखाकी, गोपोंकी, गायोंकी—अरे, व्रजके तो एक तृणकी शपथ भी नहीं खायी जा सकती।

'तब हम तेरी चुटियामें गाँठ लगावेंगे।' भद्र अपनी बातपर अड़ा है और इतनी सारी गाँठें सिरमें···?

'तू मेरी शपथ कर कि अपनोंको भूलेगा नहीं।' भद्र-का स्वर दृढ़ है।

'नहीं भूलूँगा ? तेरी···' मैया यशोदाके लालके कमल-दल विशाल लोचन भर आये हैं सखाकी शपथ

करते । उसके कण्ठसे स्वर स्पष्ट नहीं हो पा रहे ; किंतु मनमें तो शपथ श्रा गयी न ?

'नहीं भूलूंगा—किसीको नहीं भूलूंगा ! जो भी मुझे अपना कहेंगे उन किसीको नहीं !! तेरी…!'

और भद्रने अपने कनूंको भुजाओंमें भर लिया है । यह वर्षगाँठकी 'अङ्कमाल उसकी—'कोई तेरी चुटियामें गाँठ नहीं लगावेगा ।'

बोध

'कनूँ ! यह बोध क्या होता है ? कल वनमें एक ऋषि आ गये थे । ये ऋषि-मुनि बड़े विचित्र होते हैं । पता नहीं क्या-क्या ये नन्हें नन्दनन्दनको कहते हैं । अब कल जो आये, वे श्यामको पता नहीं क्या 'बोध-बोध' करके कह रहे थे । आज बात स्मरण आई तो भद्रने पूछ लिया ।

'बुद्धूको बोध होता है तो वह बुद्ध बन जाता है ।' श्याम खिलखिलाकर हँसा—'तू बुद्धू है ?'

'बुद्धू तो तू है, बुद्धवारको उत्पन्न हुआ ।' भद्रने भी चिढ़ाया 'मैं तो मङ्गलको उत्पन्न हुआ हूँ ।'

'क्या बात्त है ?' सहसा दाऊ दादा समीप आ गये और सहज ही उन्होंने पूछ लिया ।

'कल वे ऋषि आये थे यहाँ अपने पास ।' भद्रने कहा—'वे पता नहीं बोधका नाम लेकर क्या-क्या इस कन्हाईसे कहते थे । मैं इससे पूछता हूं कि यह बोध क्या है तो यह बात बतलाता नहीं ।'

'यह कहता है मुझे कि तू बुधको उत्पन्न हुआ अतः…… !' श्यामने सखाकी ओर देखा और नेत्रके संकेतसे पूछा—'कह दूँ दादासे ?'

'ठीक कहता है भद्र ।' दाऊ दादाने अनुजकी बात पूरी सुने बिना ही कहा—'इसीसे तुम महाबुद्ध हो—बोध हो ।'

'ओह ! तो बोधका अर्थ है बुद्धू ।' भद्र ताली बजाकर हँसता हुआ उछला । 'ऋषि भी इसे चिढ़ाते थे ?

'ऋषि-मुनि किसीको चिढ़ाते नहीं !' दाऊने गम्भी-रतासे कहा—'तुम्हें जानना है कि बोध क्या है ?'

'यह कन्हाई है न ?' भद्रका कन्हाई ही बोध है तो भला इसमें जानने-सुननेकी क्या बात है ।

'तुम भी हो ।' दाऊकी यह बात भद्र को नहीं रुची । लेकिन उसे लगा, अब चुप रहना चाहिए । कहीं दादा डाँटने न लगें ! यह कुछ रूठता लगता है ।

'मेरी ओर देखो !' दाऊ वहीं बैठ गये ।

हरित दूर्वाच्छादित कोमल भूमि । चारों ओर पुष्पभार-से झुकी झूमती लताएँ और मध्यमें यह नीलाम्बरधारी, एक कुण्डलधारी स्वर्णगौर दाऊ आसन लगाकर, दोनों, कर गोदमें लेकर अर्धोन्मीलित दृग बैठ गया है । यह शोभा, यह श्री, यह ध्यानमुद्रा किसी ऋषि-महर्षिके स्वप्नमें भी आसकती है ?

ज्योति-ज्योति—दुर्निवार ज्योति और यह क्या हो रहा है ? क्या हो रहा है यह सब—भद्र कुछ नहीं समझ

पाता। जो वह देख रहा है, अनुभव कर रहा है, वाणीमें नहीं आता वह।

वृन्दावन, गायें, गोप, पृथ्वी, पर्वत, यमुना, सूर्य, चन्द्र और जाने क्या-क्या—सब दाऊ बनाता है, सबको दाऊ बनाता-चलता है। सब दाऊके संकेतसे बनते-मिटते हैं—दाऊ! उसका अपना दाऊदादा।

'दाऊ कन्हाई! कन्हाई-दाऊ!' यह क्या है? दोनों भाई एक और वह स्वयं—वह स्वयं है यह - क्या?

पता नहीं कितनी देर—जब भद्र सावधान हुआ, दाऊ कह रहा था—'यह है बोध।'

आपको कुछ बोध लगा?

तिलक

आज कन्हाई शीघ्र उठ गया है और उठते ही इसने अधरोंसे शृङ्ग लगाकर 'धूतू धू' प्रारम्भ कर दिया है।

यह लो, अब तो नन्दग्रामके सब घरोंमें शृंग गूंजने लगे हैं। यह सब ध्वनियाँ नन्दगृहकी ओर बढ़ती आ रही हैं।

ये बालक मैयाको सदा हड़-बड़ीमें डाले रहते हैं। आज गोपाष्टमी है। गायोंका आज पूजन होता है। मैया चाहती थी कि कन्हाई कुछ देरसे जागे तो वह समारोहका कुछ काम पूर्ण करले। उसने सायंकाल कहा भी था बालकोंसे—'कल गोचारणको नहीं जाना है। उठनेमें

शीघ्रता मत करना।' लेकिन इन बालकोंकी अपनी ही योजना रहती है।

'आज यह क्या हो रहा है? क्यों ये सब शङ्ख-शृंग बजाते नन्दगृहकी ओर इतने सवेरे आ रहे हैं?' किसी वर्ष ऐसा नहीं हुआ है तो गोप-गोपियोंके मनमें भी कुतुहल जागना स्वाभाविक है। वे सब भी बालकोंके पीछे चल पड़े हैं।

'कनूं! क्या है आज? मैयाने पूछ लिया।

'क्यों, गोपाष्टमी नहीं है।' श्यामने तनिक अधरोंसे शृंग हटाया।

'तो?—गोपाष्टमी है तो गो-पूजन होगा, यह धुआँ-धार शङ्खनाद सवेरे-सवेरे क्यों?' मैया तनिक झल्लायी।

'तू ही तो बता रही थी कि गोपाष्टमीको भद्रकी जन्मतिथि है।' कृष्णने फिर क्षणभरको शृंग हटाया।

'भद्र! बेटा भद्रसेन!' मैया पुकारने लगी है। यह भद्र तो बाबाके पास सोता है और सदा व्रजराजके साथ जाग जाता है; किन्तु इस समय तो भद्र शङ्ख बजानेमें लगा है। यह क्या उसके शङ्खका स्वर सबसे पृथक गूंज रहा है।

'क्यों? भद्रका तू क्या करेगी!' कृष्ण चौंका। मैया भद्रके जन्म दिनपर उसका जो सत्कार करेगी, वह पहले स्वयं क्यों न करे वह।

'उसे झटपट स्नान करके, वस्त्र पहिनने चाहिए !' मैयाने कहा—'मैं उसे तिलक करूँगी।'

'हम भद्रका तिलक करेंगे। भद्रकी आज जन्म-तिथि है।' कन्हाई शृंग कटिमें लगाकर द्वारकी ओर पुकारता दौड़ गया है। द्वार तक पहुँच गया है सखाओंका समूह और शृंग—शङ्ख बजाना छोड़कर सब इस नवीन उत्साह-में आ गये हैं। भद्रको स्नान करना है, उसे वस्त्राभरण धारण करने हैं, यह बात अब भला कौन सोचने लगा है। कृष्ण फिर भीतर भाग गया है। उसे कुंकुम चाहिये। अपने लिए. सब सखाओंके लिये झोली भरकर कुंकुम चाहिये।

'हम भद्रका तिलक करेंगे।' सब उत्कण्ठित हैं; किंतु भद्र है कहाँ ? वह कहाँ चला गया ?

वह इस अपने कन्हाईके ऊधमसे कहाँ भागे। भागकर वह श्रीव्रजराजके अङ्कमें आ बैठा था; किंतु आज तो अंक बाबा भी श्यामके साथ हो गये हैं। अङ्कमें बैठे भद्रको अपने भुजाओंमें लपेटकर स्थिर कर दिया है उन्होंने और यह आ गया है श्याम सब सखाओंको लेकर।

'हम भद्रका तिलक करेंगे !'

'ऐसे नहीं लाल !' बाबाने कन्हाईको चुटकी भर कुकुंम उठाते देखकर रोका। ऐसे अँगूठेंसे तिलक तो महर्षि शाण्डिल्य करते हैं, ब्राह्मण करते हैं।'

'मैं भी करूँ तो ?' श्याम ठिठक गया है।

'तुम लोग चाहे जिसे अंगूठा दिखा देते हो न!' बाबा-ने हँसते-हँसते समझाया—'इसीलिए तुम्हारे अँगूठे तिलक करने योग्य नहीं हैं।'

'हम भद्रको तिलक करेंगे!' ऐसे सीधे कहीं कृष्ण मानता है।

'तिलक करो; किन्तु अँगूठेसे नहीं।' बाबने कृष्णके दाहिने हाथकी अनामिका छूकर बतलाया—'इससे करो।'

श्यामके दक्षिणकरकी पतली सुकुमार, अनामिकापर तनिक-सा कुंकुम उठा है और वह अपने सखाको तिलक लगाने जा रहा है। बाबाकी गोदमें बैठे, उनकी भुजाओंमें बँधे सखाको कन्हाई तिलक करने जा रहा है।

यह तिलक आपके भालपर भी तो लग सकता है?

तुझे लूँगा

कनूँ! आज तेरी वर्षगाँठ है—तू क्या लेगा? बात कही तो भद्रने है; किन्तु जैसे सबके हृदयका प्रश्न इसके मुखसे निकला है।

'कृष्ण! बता तो सही, तू आज क्या लेगा?' लो, दूसरे सब गोप कुमार तो पूछ ही रहे थे, यह दाऊ भी पूछने लगा है।

'श्याम! क्या लेगा तू? बरसानेसे छकड़े आये हैं उपहारोंसे भरे और द्वारसे दौड़ता आया यह श्रीदाम

नन्दनन्दनके सामने ऐसा खड़ा हो गया है, जैसे वह साकार ही प्रश्न हो।

मैयाने आज खूब सजाया है अपने नील सुन्दरको। यह सदा सुसज्ज रहने वाला नटनागर आज रत्नाभरणोंसे भरपूर अलंकृत है।

आज भाद्रकृष्ण नौमी है—व्रजमें यही नन्दलालकी जन्मतिथि है। आज गोप-कुमार वनमें गोचारण करने कैसे जा सकते हैं। आज तो व्रज-युवराजकी वर्षगांठका महोत्सव है और व्रजका कोई महोत्सव क्या गो-पूजनके बिना पूर्ण होता है।

सब सखा आज सुसज्ज हैं। सबको उनकी माताओंने भरपूर सजाया है। सब बड़े सबेरे नन्दभवन भाग आये हैं।

महीनेभरसे बालक-वृद्ध, स्त्री-पुरुष सब इसी चिन्ता-चिन्तन और प्रस्तुतिमें लगे हैं कि वर्षगाँठ पर वे ऐसा क्या उपहार दें कि श्यामसुन्दर एक क्षणको खिल उठे।

अभी महर्षि डाण्डिल्य आवेंगे ब्राह्मणोंके साथ। हवन होगा गो-पूजन होगा और कृष्णचन्द्र ऋषि, ब्राह्मण, वृद्धजन-को प्रणाम करेगा उनके आशीर्वाद लेगा। तब कहीं उसको उपहार देनेका समय आवेगा लेकिन गोपकुमारोंने उसे सबेरे ही घेर लिया है और भद्रने प्रश्न करके प्रश्नोंकी झड़ीको मुखर कर दिया। सभीका एक ही प्रश्न है—'तू आज क्या लेगा।'

मयूर मुकुट तनिक झुक गया है। कृष्ण दो क्षण अवनत बदन सोचने लगा है और लो वह सहसा खिल उठा है। यह जैसे कूद-सा-पड़ा है वहीं। दोनों भुजाएँ भद्रके कण्ठमें डालकर लिपटता बोला वह—'मैं तुझे लूंगा!' 'मैं तुझे लूंगा!'

अब यह एकसे दूसरेके कण्ठसे लिपटता वनमाली—गोपकुमारके साथ आलिंगनबद्ध श्रीकृष्ण! यह उपहार ग्रहण है या आत्मोपहारका अर्पण?

'मैं तुझे लूंगा!' यह लिपटा श्रीदामके कण्ठसे यशोदाकुमार और कोई यह पीछेसे खिल-खिलाती बोल उठी है—'इसे या इसकी बहिनको?

स्वर्णगौर श्रीदामका मुख पाटलारुण हो गया है और कन्हाई—जैसे यह चपल भी कुछ सङ्कोचमें पड़ गया है।

यह उपहार

आज बरसानेमें महोत्सव है। कीर्तिकुमारकी वर्षगाँठ है आज।

वृहत्सानुपुर (बरसाना) की शोभाका वर्णनकर पाना वैसे ही सम्भव नहीं है और आज तो उसकी एक-एक गली, प्रत्येक गृहका हर कोना मन लगाकर गोपों-गोपियोंने सजाया है।

सखियोंने मानो सौन्दर्यकी अधिदेवताओंको सजानेमें अपनी समस्त निपुणता आज न्योछावर कर दी है।

'आपको सबसे प्रथम किसका उपहार प्रिय लगेगा ?' ललिताने परिहासपूर्वक पूछ लिया।

'तुम सबके किसी उपहारको मुझसे कभी उपेक्षा हुई है ?' वृषभानु-नन्दिनी स्वभावसे इतनी भोली हैं कि परिहास करने जाकर सखियोंको ही सँकुचित होना पड़ता है। वे कह रही हैं—'तुममें मैंने कहाँ किसीको अपनेसे पृथक् माना है कि कसीके उपहारको प्राथमिकता देनेकी बात तू उठाती है।'

सम्पूर्ण शास्त्रीय विधि सम्पन्न हो चुकी है। देव-भूदेव पूजन कबका हो चुका। ब्राह्मण सपत्नीक सुपूजित होकर आशीर्वाद देकर, अच्छी प्रकार दान-दक्षिणसे तर्पित होकर अपने आवासोंको जा चुके।

प्रणति पाकर और अशीर्वाद देकर कु-लगोत्र वृद्धाएँ माता कीर्तिके समीप एकत्र हो गयीं। वृषभानु बाबाको आज आगन्तोंके सत्कारसे अवकाश नहीं है। कभी-कभी ही उत्साहकी मूर्ति बना श्रीदाम आता है अन्तःपुर में। अन्यथा वह भी सजा-धजा आज बाहर अपने वयस्कोंके सत्कारमें लगा है।

सखियोंने घेर रखा है श्रीराधाको। आज वे अपने उपहार अर्पित करने वाली हैं इस अपनी प्राणभूता को। कितनी उमंग, कितने उल्लास, कितनी सचिन्ततासे इन्होंने अपने उपहार सजाये हैं। लेकिन उपहारअर्पणका प्रथम स्वत्व—ललिता इसमें प्रमाद कैसे कर सकती हैं।

'हम तो तुम्हारी हैं ही।' ललिताने कहा—'लेकिन नन्द गाँवसे उपहरोंके छकड़े आये हैं। और सन्देश आया है कि नीलाम्बरधारी अग्रज पूछते हैं—लली, क्या लेगी?'

'उनका आशीर्वाद! श्रीराधाके कण्ठसे अत्यन्त क्षीण अस्फुट स्वर उठा। उनका मस्तक झुक गया।

'उनके छोटे भाईने कुछ नहीं भेजा।' हँसकर सखीने कहा—'भेजा हे केवल एक पद्मपुष्प!'

'तू इसे कुछ नहीं कहती है?' दोनों करोंसे उस सुरंग सरोजको लेकर हृदयसे लगाये कीर्तिकुमारी तो भाव-समाधिमें चली गयीं। उसका कदम्ब पुष्प-सा रोमाञ्च-कण्टकित श्रीअंग, स्वेद-धाराद्र्र होते कौशेय वस्त्र, नेत्रोंसे झरती परम-पावन प्रेम-धारा……

सखियाँ शान्त, मौन खड़ी हैं अपनी अधीश्वरीकी ओर एकटक देखती।

धृष्टता

'तू इतना बिना रँगा क्यों है?' होलीका दिन और भद्रसेनके शरीर—विशेषत: मुखकपोलका कुछ भाग बिना रँगके दीखता है, यह क्या आश्चर्य करनेकी बात नहीं है?

'मैं क्या तेरी भांति गुलालके थैलेमें बैठा था। भद्रका कहना भी ठीक है। कृष्णचन्द्र आपाद मस्तक ऐसा हो रहा है जैसे स्नान करनेके तत्काल पीछे वह अबीर या गुलालसे भरे थैलेमें जा घुसा था।

मस्तकपर न मयूर पिच्छ है, न कन्धेपर पटुका और न कण्ठमें वनमाला, कटिकी कछनीमें भी आज मुरली नहीं है,

आज आभूषणोंके नामपर कण्ठमें मोतियोंकी माला है कौस्तुभके नीचे लटकती। भुजाओंमें अङ्गद है। और कलाइयोमें मणि-कङ्कण।

वस्त्रके नामपर केवल कछनी है; किन्तु वह पीताम्बर है या नहीं, पता नहीं। आज तो यही पता लगाना अशक्य है कि मैया यशोदाका लाल साँवला है या गोरा। कहा न कि कन्हाई ऐसा लगता है जैसे गुलाल भरे बोरेमें-से सीधे निकला आ रहा हो।

श्यामके पास न पिचकारी है और न अबीरकी झोली। इसको आवश्यकता भी क्या है। आज प्रातः वह ऐसे ही नन्दभवनसे निकला है। किसीकी झोलीमें हाथ डालकर मुट्ठीमें गुलाल भर ली तो वह झोली वालेके मुखक लाल करेगा या दूर किसीको ताककर मुट्ठी फेंकेगा कौन कह सकता है।

पता नहीं किस-किसकी पिचकारियाँ झपट लीं आज इसने और उसीका रङ्ग उसीके ऊपर···!

इसने और इसके सखाओंने जो घूम आज पूरे व्रजमें मचा रखी थी—किसी गोपिकाको तीन चारने पकड़कर रङ्गके विशाल पात्रमें नहीं पटका, उसके सिरपर ही पात्र उलटकर सन्तोष कर लिया तो समझो कि वह बहुत सस्ते छूट गयी।

अब मध्याह्न होनेको आया है। श्यामसुन्दर सखाओंके साथ यमुना स्नान करने चल पड़ा है। अत्यधिक दौड़-धूप, उछल-कूदसे सब कुछ शिथिल हुए है और अचानक कृष्णकी दृष्टि भद्रपर पड़ गयी।

यह भद्र कुछ महीने बड़ा क्या है, कन्हाईपर रौब ही जमाता रहता है। पता नहीं क्यों गोपियाँ और व्रजकी लड़कियाँ भी इसका थोड़ा सङ्कोच कर लेती हैं। लगता है आजकी धूपमें भी सबने इसे कुछ तो बचाया ही है। वैसे इसके वस्त्र और शरीरका रङ्ग भी बता पाना कठिन है; किंतु इसके मुखपर गुलालकी मुट्ठी किसीने नहीं मली होगी। हो सकता है कि यह अपना मुख बचाता रहा हो। यह भी तो लड़कियोंको कम ही तङ्ग करता है। वे अनुनय करें तो इसे सबसे पहिले दया आ जाती है।

'हुँ' अब भद्रके पास इसका क्या उपाय है? आज होलीके दिन नन्दनन्दन धृष्टता करे तो इसे डाँटा जा नहीं सकता और इसने तो भद्रको दोनों भुजाओंमें जकड़ लिया है। अपनी अबीर भरी घुंघराली अलकें सिर हिला-हिलाकर यह भद्रकी नाक, कपोल, ललाटपर रगड़े चला जा रहा है—रगड़े ही जा रहा है। सखा सब ताली बजाकर कूदने लगे हैं।



पदवी-वितरण

'दाऊ व्रजका राजा है !' कन्हाई कूदता पूरे उच्च-स्वरमें पुकार रहा है ।

बालक पुकारते हैं—'कृष्णचन्द्र युवराज है ।'

भद्र स्वयं बोलता है—'भद्रसेन मन्त्री पद पण्डित ।'

श्याम नटखटपनसे चिल्लाया—'मधुमङ्गल है पोङ्गा पण्डित ।'

किसी गोपने पूछ लिया—'भला कौन है श्रीदामा ?'

'मोटे बन्दरका मामा ।'

नटखट कन्हाई ताली बजाकर हँसने लगा ।

'चल श्रीदाम बन्दरका मामा क्यों होने लगा ।' हँसते-हँसते मैयाने अपने नीलमणिका हाथ पकड़ा ।

'तू समझता भी है कि क्या बकता है ?' माता रोहिणी भी हँसती समीप आ गयीं—'तू बन्दरका बाप बनेगा ?'

'बनूँगा !' कृष्णको हतप्रभ करना कठिन है । यह तो मजेसे कहता है—मैं सबसे बड़े बन्दरका बाप हूँ !'

अब किसको कैसे स्मरण आवेगा कि त्रेतामें ही श्रीमिथिलेश-नन्दिनीने हनुमानको अपना ज्येष्ठ पुत्र स्वीकार कर लिया था । यह कृष्णचन्द्र अब द्वापरमें भी इस सम्बन्धको अस्वीकार कैसे कर सकता है । श्रीदामको मोटे बन्दरका मामा बननेसे चिढ़ना हो तो चिढ़े ; किंतु कृष्णको बन्दरका बाप कहलानेमें कोई आपत्ति नहीं है ।

होलिका-दहन करके बालक ग्राममें आ गये हैं। इन्होंने अपना कीर्तन पूरा कर लिया है।

नरहरि नख लाल। प्रह्लाद प्रतिपाल।

अब इनको पदवीदानकी धुन चढ़ी है। मैया चाहती है कि अब ये सब उछलना त्यागकर कुछ व्यालू करें। शीघ्र सो जायँ। कल रङ्गोत्सव मनाते दिनभर धूम करते थकेंगे; किंतु बालक अभी अपनी धुनमें है।

'तभी तू भी बन्दरों जैसा कूदता, मुख बनाता है।' मैया अपने कुमारको रोकना चाहती है। उसे डर है कि ये इस उत्साहमें कहीं बड़ोंकी अटपटी पदवी देकर अशिष्टता न करने लगें। इन्हें रोका जाना चाहिये। लेकिन बालक अभी उत्साहमें है—

'दाऊ व्रजका राजा है।'

'कृष्णचन्द्र युवराज हैं।'

'भद्रसेन मन्त्री पद पण्डित।'

चल रहा है यह और बेचारे श्रीदामको सब मोटे बन्दरका मामा बनानेमें लगे हैं।

आकांक्षा-पूर्ति

'अरे! अरे!' मैया अचानक हड़बड़ा उठी है। इसकी समझमें ही नहीं आता कि यह क्या कहे, क्या करे इस समय।

फाल्गुन है तो क्या हुआ, अभी सर्दी तो पड़ती ही है प्रात:काल। मैयाने अपने नीलमणिको उबटन, तेल लगाकर अभी ही पलनेमें धूपमें लिटाया था। तैल-स्निग्ध अलकोंको सम्हालकर उनमें एक छोटी मोतियोंकी माला सजा दी। एक मयूर पिच्छ लगा दिया। नेत्रोंमें अञ्जन, भालपर भी कज्जल विन्दु। कटिमें छोटे रत्नोंकी मेखला, करोंमें कङ्कण, चरणोंमें नूपुर। कण्ठमें व्याघ्रनख है मुक्तामालाके मध्य।

यह नीलसुन्दर प्रात:कालीन धूपमें अपने अरुण चरण उछालता किलक रहा था। अपने इस सात महीनेके अनुजके पलनेको पकड़े दाऊ इसीकी ओर देख रहा था। मैया यशोदा और माँ रोहिणी भी इसीकी ओर देखती खड़ी थीं। यह हँसता किलकता हो तो पैर इसके पाससे हटना ही नहीं चाहते।

एक वृद्धा गोपी आ गयीं। मैयाने और माँने भी उनके चरणोंमें प्रणाम किया अञ्चल हाथमें लेकर। उन्होंने दोनोंको आशीर्वाद दिया और पलनेमें-से इस नन्हें नटखटको उठा लिया। इसे उठाकर दोनों हाथोमें लेकर सिरसे ऊपर किया। यह भी अपने अरुण कोमल चरण नचाने लगा। कभी उनकी नासिकापर चरण रखता, कभी भालपर, कभी कपोलपर।

'मेरा लाल ! मेरा युवराज !' वृद्धा विभोर हो रही थीं। मैया और माँ अपलक देख रही थीं इसीकी ओर। अचानक दाऊ ताली बजाकर हँसने लगा।

'क्या है रे ?' माँने दाऊकी ओर देखा।

'अरे ! अरे !' मैया हड़बड़ा उठी।

नन्हा नील सुन्दर मजेसे वृद्धाके मस्तक ललाटका अभिषेक करने लगा है।

'अच्छा ! अच्छा !' वृद्धा अत्यन्त प्रसन्न हो उठी हैं। उन्होंने इस नटखटको ऐसे झुका लिया है कि उनके वक्ष, उदरके वस्त्र भी अभिषिक्त हो जायँ।

'छोटा भाई नटखटपन करता है और तू हँसता है ?' माँने दाऊको धमकाया ; किंतु स्वरमें रोषके स्थानपर हास्य ही अधिक है। दाऊ माँकी ओर देखता ही नहीं। यह तो छोटे भाईकी ओर देखता ताली बजाता हँस रहा है।

वृद्धाने अपना अञ्चल हाथमें ले लिया है। श्यामको बायें हाथसे वक्षसे सटाये उसके पद पोंछने लगीं हैं। जो स्वयं इसने आर्द्र कर लिये हैं।

'मातः !' मैया अत्यन्त सङ्कोचमें पड़ गयी है। यह अपराधिनीकी भाँति मुख बनाये जैसे क्षमा माँगने लगी है—'शिशु अबोध है। नवीन वस्त्र मैं रखे देती हूँ। आप उष्णोदकसे स्नान कर लें।'

'स्नान कर लूँ मैं ?' वृद्धाने मैयाकी ओर हँसते-हँसते देखा और कन्हाईको फिर दोनों हाथोंमें सिरके ऊपर उठा लिया—'मेरे लालने तो मेरी आकाँक्षा पूरी कर दी।'

'बहू ! तू नहीं जानती कि मैंने कितने वर्ष नियम पूर्वक कार्तिक, मार्गशीर्ष और माघमें सूर्योदयसे पूर्व माघ स्नान किया है।' वृद्धा कन्हाईकी ओर ही देखती कह रही हैं—नारायणसे यही माँगती थी कि तेरी गोद भरे और तेरा लाल मुझे इस प्रकार पवित्र करे। मेरा स्नान आज इस नटखटने सफल कर दिया।'

ऊँघ

ब्राह्ममुहूर्त हो गया है। अन्धकार घटने लगा है। नन्द-गाँवके गोष्ठोंमें गोप गायोंको चारा देने लगे हैं। घरोंमें दीपक जल गये हैं और दधि-मन्थनकी ध्वनि गूँजने लगी है।

'मैया !' नन्दनन्दन अपने रत्न-पालनेपर कुनमुनाता है। इधर उधर नन्हें करोंसे टटोलता है। मैया उसे मिलती नहीं। वह उठ गयी है और किसी कार्यमें लगी होगी।

झीना पीतपट अरुण चरणोंने एक ओर कर दिया है। कन्हाई उठ पड़ता है, बैठता है और पलनेसे उतर खड़ा होता है।

छोटा-सा कन्हाई दिगम्बर है। कमरमें रत्न-मेखला है। करोंमें हल्के कङ्कण हैं। कण्ठमें मुक्तामालाके मध्यसे कौस्तुभ झाँक रहा है। अलकें बिखरी हैं। नेत्रोंका काजल कपोलों तक फैल गया है।

श्याम अभी भी नींदमें ही है। वह दोनों हथेलियोंसे नेत्र मलता है और ऊँघता हुआ लड़खड़ाते पदोसे चल पड़ता है। उसे मैयाको ढूँढ़ना है। मैया गयी कहाँ? मैया मिले तो वह सो जाय उसकी गोदमें। सूने पलनेपर कहीं कोई अकेला सो सकता है।

उसे पता नहीं है कि किधर जा रहा है। कुछ पद चलकर खड़ा होता है। नन्हा-सा मुख खोलकर जम्हाई लेता है। नेत्र मलता है और फिर चल देता है लड़-खड़ाता—ऊँघता। कभी नेत्र आधे खुलते हैं और कभी बन्द नेत्रोंसे ही चल पड़ता है।

'मैया!' कन्हाई चौंकता है। उसे पता नहीं है कि वह नन्दभवनसे बाहर निकल आया है और मार्गमें खड़ा है। लेकिन नेत्र खुलनेपर लगता है कि वह भवनसे बाहर आ गया है। जो द्वार सामने दीखता है, उसीमें प्रवेश कर जाता है।

'मैया!' उस भवनकी स्वामिनी चौंकती है। यह स्वर भी क्या छिपनेवाला है। यह प्राणोंको आनन्दके सागरमें उभचुभ कर देनेवाला स्वर और यह ऊँघता, लट-पट पदोंसे चलता जो चला आ रहा है सामने नीलसुन्दर!

'लाल!' मथानी छूट जाती है। गोपी दोनों हाथ फैलाये झपटती है और कन्हाई तो अभी नींदमें है। उसे कहाँ पता है कि कहाँ आया है और यह कौन है। उसे तो सो जानेके लिए एक गोद चाहिए।

गोदमें श्यामको लेकर गोपी वहीं भूमिमें ही बैठ जाती है। अब उसे अपनी ही सुधि नहीं है।

इस यशोदाके लालनने उसके अंचलमें सिर छिपा लिया है। उसके एक स्तनाग्रको मुखमें लेकर, दूसरे स्तन पर नन्हा हाथ रखकर वह तो सो भी गया। दूध पीनेकी उसे सुधि नहीं और गोपीको क्या अपनी सुधि रह सकती है?

ज्ञान

'कनूं! तू जानता है, ज्ञान किसे कहते हैं?' आज वनमें आते ही श्रीदामने दौड़कर स्नेह पूर्वक श्यामका हाथ पकड़ा।

'हाँ, हाँ' नन्दनन्दन उत्साहसे बोला—'तुझे चाहिए?'

'तू लड़ाईकी बात क्यों करता है?' श्रीदाम कुछ रूखा मुख बनाकर बोला—'मैं तो पूछ रहा हूँ।'

'क्या?' कृष्णने देखा अब सखाकी ओर।

'आज सबेरे-सबेरे एक बाबा मेरी पौरपर आकर पुकारने लगा—'लाली! लाली! लाली!' श्रीदाम बोला—'मैं दौड़ आया और उससे पूछा—'तुम्हें क्या चाहिए?'

'फिर?' अब श्याम गम्भीर हो गया था।

'ये बाबा बड़े बिकट होते हैं।' श्रीदाम कहता गया—'उसने मुझे झिड़क दिया—'लालीसे लेना है।'

'बुरी बात ।' भद्रको क्रोध आता लगा । वह बाबा सामने होता तो कदाचित यह उसकी दाढ़ी नोच लेता । श्रीवृषभानु बाबाके कुमारको कोई झिड़क दे ! ऐसा है क्या जिसे ये न दे सकें ।

'तू तो जानता है कि बहिन कितनी सङ्कोचशीला है ।' श्रीदामने भद्रकी ओर मुख करके कहा—'वह ललिताके साथ द्वारपर दौड़ आयी ।'

'लाली ! मुझे ज्ञान-दान करो ! ' बहिनको देखते ही वह बाबा गिड़गिड़ाया । लेकिन बहिनने सिर झुका लिया । अपने पैरोंको ओर वह देखने लगी ।' श्रीदामने कहा—'मैं समझ गया कि मेरी भाँति इसे भी पता नहीं, कि ज्ञान होता क्या है ।'

सचमुच जो आह्लादिनी हैं, उन महाभाव रूपाको क्या पता कि ज्ञान होता क्या है । उनसे प्रेम-भक्ति माँगी जाती है या……

'ललिता हँस पड़ी । उसने पूछा' श्रीदामने कहा—'वह बोली—बाबा ! यह किसकी छाछ है—भैंसकी या बकरियाकी ?'

'छि: ! तो यह बाबा सबेरे-सबेरे बकरिया या भैंसकी छाछ मांगने आ टपका ?' श्रीदाम हँस रहा था—'लेकिन बाबा तो खीझ गया लगता था ।'

'उसे ज्ञान चाहिए तो वह तेरी पौरिपर क्यों मरने गया !' कन्हाई कुछ रूक्ष स्वरमें बोला, जैसे बहुत अप्रिय

लगी हो यह कथा उसे—'उसे तब मेरे पास आना चाहिए था।'

'तेरे पास ज्ञानका खजाना गड़ा है ?' भद्रने चिढ़कर पूछा।

'हाँ हैं, लेगा तू ?' श्याम कहीं इस प्रकार हतप्रभ होता है।

'कहाँ है ?' भद्रको भी तो डराया धमकाया नहीं जा सकता।

'तू इतना भी नहीं जानता ?' अब कन्हाई खुलकर हँस पड़ा—'अपने बाबाके गोष्ठके पीछे जहाँ गोप सब कूड़ा-कतवार डालते हैं, उसपर उगा झंखाड़ तू ने देखा नहीं हैं ?'

'अच्छा !' सब बालकोंने ताली बजा दी। सचमुच बहुत बुद्धू था वह बाबा। उसे वह झंखाड़ चाहिए तो बरसाना जाकर लालीको पुकारने क्यों लगा था ? उसे तो नन्द गोष्ठका कोई सेवक दे देता। स्वयं आ जाता नन्द गोष्ठके पीछे तो कोई उसे झंखाड़ उखाड़नेसे मना करने लगा था।

ये तो गोपोंके अनपढ़ बालक हैं। इनकी समझमें यही आया है कि जड़ी-बूटी ढूंढ़ने वाला कोई जटाधारी भटक गया था आज व्रजमें आकर ; किंतु आप बहुत विवेकी हैं तो विश्वास पूर्वक कह सकते हैं कि नन्द गोष्ठके पिछवाड़े कूड़ेके ढेरपर उगा झंखाड़ ज्ञान नहीं ही होगा ?

गो सेवक

'नन्दा ! घास खायेगी तू ?' किंतु नन्दाको इस समय घासकी चिन्ता कहाँ है। वह तो आधे नेत्र बंद किए आनन्दमग्न हो रही है। उसके चारों थनोंसे दूधकी धारा झर रही है।

'कामदा ! तू भी आ गयी ?' जब नन्दाको पुचकारा, सहलाया जा रहा है, तब कामदा क्यों नहीं आयेगी। आनेको तो अब कपिला, कृष्णा, चित्रा, गौरी सब आ रही हैं। सब दौड़ी हुंकारती आ रही हैं। उनके हृदयमें यह स्नेह पानेकी क्या कम उत्कण्ठा है।

दाऊ थोड़ी-सी घास ले आया है। दो-दो दूर्वादल वह इस प्रकार बाँट रहा है, जैसे किसी मन्दिरमें उसका पुजारी दर्शनार्थियोंको तुलसीदल बाँट रहा हो। गायोंके हाथ नहीं हैं। यह तो ठीक ; पर उनमें दूर्वा लेनेके लिए किस श्रद्धालुसे कम उत्सुकता है।

'हाँ, हाँ, तुझे भी दूंगा ; तनिक ठहरो तो।' मुख ऊपर किये एक दूसरीके मध्यमें घुसती आती गायोंकी यह भीड़ बढ़ती ही जा रही है और दाऊकी नन्हीं मुट्ठी ! किंतु उसकी मुट्ठी तो अनन्तकी मुट्ठी ठहरी।

'तुझे भी ? हाँ।' श्यामसुन्दर सहलानेमें लगा है गायोंको। गायोंके गर्दनके नीचेके भागको और कण्ठकी दोनों बगलोंको यह अपने अरुण कोमल करोंसे सहला रहा है। इसके दोनों हाथ व्यस्त हैं। गायें उत्सुकतासे गर्दन

उठाकर मुख आगे कर देती हैं। मोहनके कन्धेपर मुख रख देती हैं धीरेसे। यह कभी एक और कभी दूसरीको सहलानेमें लगा है।

रङ्ग-बिरङ्गी सहस्र-सहस्र गायोंका यूथ वृन्दावनकी इस हरित भूमिपर पुष्पित सघन वृक्षोंके नींचे एकत्र हो गया है। मण्डलाकार हो गया है यह यूथ। एकके पीछे एक सब मुख उठाये आगे घुसनेके प्रयत्नमें लगी हैं। गोपकुमार पृथक् पड़ गये हैं इससे। वे सब चुपचाप दर्शक बन गये हैं।

गायोंके यूथके मध्यमें घिरे हैं राम श्याम। दाऊके बायें हाथमें एक मुट्ठी दूर्वा और दाहिने हाथसे वह दो-दो तृण बांट रहा है। गायें हुंकार कर रही हैं बार-बार! उनके स्तनोंसे दूध झर रहा है। बड़ी उत्सुकतासे दूर्वा मुखमें लेती हैं वे और लिये रहती हैं! उसे खा लेनेका स्मरण ही इस समय उन्हें नहीं है।

नील-पीत-वसन ये गौर श्याम दोनों भाई—अलकोंपर आज नोवनेकी रस्सी लपेट रखी है दोनोंने। बायें कंधे एवं कक्षको घेरकर भी रस्सी लपेट ली है। पटुके कटिमें कस लिये हैं। आज दोनों पूरे गोपाल बने हैं गायोंके समूहसे घिरे।

ये गो सेवक! गायोंसे भी बड़े देवताका पता सृष्टिमें सृष्टिकर्ताको भी नहीं।

पूजन

'ॐ, ॐ, ॐ !' आज दाऊ कुछ गुनगुना रहा है। बिना मुख खोले केवल नाकसे स्वरमात्र निकाल रहा है वह और कभी-कभी चुटकी बजा लेता है।

पुष्पित कदम्बकी एक मोटी शाखा कालिन्दीके कुछ ऊँचे तटसे नीचे जलके पासतक झुक आयी है। उस शाखाका अगला भाग फिर फैलकर ऊपर उठ गया है और फूलोंसे लदी एक मालती लता फैल रही है उस पूरी शाखापर। मालतीके हरे सघन पत्तों एवं उज्वल ढेर-के-ढेर पुष्प-स्तबकोंके बीच-बीचमें कदम्बके पीताभ पुष्पोंकी छटा अद्भुत ही है।

दाऊ कदम्बकी शाखापर बैठा है और कालिन्दीके प्रवाहको देख रहा है। उसके नीचे लटके एक चरणको कलकल करती जलधाराकी लहरियाँ बार-बार स्पर्श कर रही हैं।

श्याम जिधरसे प्रवाह आ रहा है, उधर तनिक दूर तटपर अपनी अञ्जलिमें खूब बड़ा-सा पूरा खिला लाल कमल लिये झुककर कुछ देख रहा है। कुछ अनुमान कर रहा है। बैठकर अनुमान करके कमलपुष्पको धारापर छोड़ दिया इसने और फिर झुककर, मस्तक बायीं ओर लटकाकर देखने लगा—इसका पुष्प ठीक स्थानपर जाता है या नहीं।

दाऊकी दृष्टि नीचे गयी। बहुत सुन्दर सरोज उसके चरणोंसे आ लगा है। 'यह किसका पूजनोपहार है?' दृष्टि तटके साथ आगे गयी। श्याम अब भी झुका देख रहा है और प्रसन्न हो रहा है। दाऊके नेत्र अद्भुत भावसे भर गये हैं।

'दादा, आऊँ मैं?' कन्हाई एक हाथमें वंशी लिये दौड़ा-दौड़ा आया है। यह दाऊके मुखकी ओर देखनेके बदले उसके चरणोंके पास जलमें स्थिरप्राय अपने पद्म-पुष्पको ही झाँक रहा है।

'आ जा!' दाऊ तनिक-सा हिला, किंतु श्याम तो इस अनुमतिसे पहले ही डालपर चढ़कर जाने लगा।

'दादा, यह तेरा पूजन कर रहा है।' बड़े भाईके बायीं ओर उससे सटकर, उसके कंधेपर दाहिना हाथ रखकर कृष्णचन्द्र बैठ गया है। अब भी इसकी दृष्टि नीचे पुष्प-पर है।

'ये सुरभित श्वेत सुमन तेरे चरणोंके पास ही घूम रहे हैं।' दाऊ मालतीके पुष्प तोड़कर गिराता जा रहा है। कुछ मोहनकी अलकोंमें उलझ गये हैं और कुछ जलमें लटके श्यामसुन्दरके चरणोंके पास नाच-से रहे हैं।

कदम्बकी हरीतिमासे भरी श्वेत पुष्पोंके मध्य पीत कुसुमोंमें सजी शाखापर बैठे गौर-श्याम और नीचे कालिन्दीके प्रवाहमें लटकते इनके अरुण सरोज-से चरणों-के पाससे बहुतसे श्वेत सुमनोंके मध्य विकच, अरुण कमल।

इन दोनोंमें किसने किसका पूजन किया ? कालिन्दी दोनोंके श्रीचरणोंका पूजन करके कृतार्थ हो रही है ।

कर्मयोगी

'कनूं ! अपनी गायें थोड़ी देरमें पानी पीयेंगी । यहाँ कगार उतरने योग्य तो है नहीं । चल, यहाँसे हम चलें ।' भद्रको भी यह फूलोंसे लदा हुआ यमुना-तट बहुत रुचा है, किंतु कगार ऊँचा है यहाँ । गायोंको जल तो पिलाना ही पड़ेगा ।

तटकी भूमिको गायोंके उतरने योग्य बना लें हम सब । श्यामसुन्दरने बड़े भाईकी ओर देखा कि कहीं दादा मना न कर दे ।

'यहाँकी भूमि उतरने योग्य बनेगी ?' भद्रका संदेह अकारण नहीं है । क्या हुआ जो कगार रेतीला है और थोड़े श्रमसे गिर पड़ता है । बहुत ऊँचा है कगार । गायों-की इतनी बड़ी संख्य उतर सके, इसके लिए कुछ हाथ-दो-हाथ पतला मार्ग बनानेसे काम नहीं चल सकता ।

'बनेगी !' बनेगी क्यों नहीं ?' कन्हाईका स्वभाव ही सबसे भिन्न है । इसे असम्भव कुछ जान ही नहीं पड़ता । इससे तो पूछो कि 'आकाशके तारे खेलनेको मिलेंगे ?' तो भी कहेगा—'मिलेंगे ! मिलेंगे क्यों नहीं ।' और जब यह हठपर उतर आता है, इसके लिए कुछ अशक्य नहीं । यह ऐसी युक्तियाँ सोच निकालता है कि कोई नहीं कह

सकता कि अपने नन्हें पटुकेके छोरमें तारोंको उलझाकर खींच लेना इसके लिए सचमुच ही असम्भव है।

'दादा ! तू मेरा पटुका और वंशी रख !' श्यामने कछनी समेट ली है, वनमाला उतार धरी है और अलकें पीछे कर दी हैं।

'तू बैठ, मैं मार्ग बनाये देता हूँ !' दाऊ उठ खड़ा हुआ है। कृष्णचन्द्र परिश्रम करेगा और वह बैठा रहेगा ? उसका छोटा भाई व्यस्त बने, इससे तो वह अकेले ही मार्ग बना दे—यही अच्छा।

'ना, दादा ! हम सब मिलकर मार्ग बनायेंगे !' श्यामसुन्दरने बड़े भाईकी ओर विचित्र भङ्गीसे देखा।

'अच्छा चल !' दाऊने भी पटुका और बनमाला उतारकर श्यामके पीतपटके साथ रख दिया।

शतशः गोपकुमार लग गये हैं। कगार गिराकर मार्ग बनानेमें। कोई लकुटसे रेत गिराता है, कोई पैरसे और कोई दोनों हाथोंसे। कोई गिरी रेतको सम करता है, कोई नीचे ठेलता है, कोई बड़े डले लुढ़काकर हटाता है।

'तू रोटी खा आ, तब काम करना।' कन्हाई किसीको चिढ़ाता है, किसीकी प्रशंसा करता है, किसीपर रेतकी मुट्ठी डालता है, किसीको ठेलकर ढालपर लुढ़का देता है। सब हँसते हैं, परस्पर ठेलमठेल करते हैं, लुढ़कते हैं, पुकारते-चिल्लाते हैं और फिर भी पूरे उत्साहसे काममें लगे हैं।

धूलसे भरी अलकें और शरीर, स्वेदसे आर्द्र पूरा श्रीअङ्ग, कुछ अरुण बना हँसता मुखचन्द्र जुटा है श्यामसुन्दर मार्ग बनानेमें। वह बार-बार आग्रह करता है—'दादा तू बैठ अब! देख, हमने कितना चौड़ा मार्ग बना दिया।'

कनूं, तू अब रहने दे!' दाऊ छोटे भाईको रोकनेका अत्यधिक प्रयास करता है।

जुटे हैं ये दोनों कर्मयोगी और इनका बनाया मार्ग—गायोंके लिये मार्ग बना रहे हैं।

विश्वके लिये इनको छोड़कर कोई दूसरा मार्गनिर्माता कहाँसे आयेगा?

झगड़ा

'दादा! कनूं मेरी सब रोटी खा रहा है।' सुबाहु आज बहुत रुष्ट है। क्रोधसे तमतमाया हुआ है इसका मुख। क्रोध करनेकी बात भी है। कोई किसीका छीका चुपचाप उठा ले और उसकी सामग्री उदरस्थ करने लगे, पूछनेपर मुंह बनाकर चिढ़ाये तो छींकेका स्वामी क्रोध नहीं करेगा?

'तू मेरे छीकेको ले ले; जितना जीमें आये, खा ले तू उसमें-से।' दाऊके छींकेमें इतनी सामग्री रहती है कि एक तो क्या चार-छः मजेसे छक सकते हैं।

'वह मुझे अँगूठा दिखाता है मुंह चिढ़ाता है।' केवल भोजनका प्रश्न होता तो इतना बखेड़ा क्या था। सुबाहु

इस प्रकार मान नहीं सकता। वह कह रहा है—'मैं लड़ूंगा उससे।'

'अच्छा चल !' दाऊ उठ खड़ा हुआ। सुबाहु अवस्था-में छोटा है। शरीरसे भी दुबला-पतला है। वह अकेला ही लड़ पाता तो दाऊ दादाके पास दौड़ा नहीं आता।

मालतीकी सघन कुञ्जमें श्यामसुन्दर एक छींका सामने रखे बैठा है। सुबाहुको देखते ही इसने अवशिष्ट रोटी मुखमें भर ली और उठ खड़ा हुआ। फूले हुए दोनों कपोल—दोनों हाथोंके अँगूठे खड़े करके, पूरी भुजा आगे फैलाकर सुबाहुको चिढ़ा रहा है यह। मुख भरा है ; किंतु नेत्र मटकानेमें कोई कोर-कसर नहीं।

'कनूं !' अरे दाऊ दादा भी पीछे हैं, कन्हाईको यह तो पता ही नहीं था। अब इसकी भोली भङ्गी देखने योग्य है। मुख लटकाये किसी प्रकार मुखका ग्रास निगल लेनेका प्रयत्न करते कितना सीधा, कितना सरल दीखता है यह बड़े भाईके सामने !

'दादा ! मुझे खूब भूख लगी थी।' मुख खाली करके श्यामसुन्दरने अग्रजके बिना पूछे ही अपनी निर्दोषता बतायी। इसे भूख लग जाय तो यह दो पद भी चल नहीं पाता। अचानक लगती है इसे भूख।

दाऊ अपने छोटे भाईका स्वभाव जानता है। 'किंतु इसका माखन खट्टा था और रोटी तो सर्वथा फेंक हा देने

योग्य थी।' ओह! भूख ऐसी थी कि ऐसे पदार्थसे भी काम चलाना पड़ा।

'यह तुझसे लड़ने आया है।' दाऊके मुखपर स्मित आ गया है।

'आ लड़ ले।' दादा प्रसन्न है तो श्याम झिझकनेवाला कहाँ है। यह लो, कछनी कस ली इसने।

'किंतु तू रोटी खाकर तगड़ा हो गया है और यह भूखसे दुबला हो रहा है।' दाऊ अन्याय नहीं होने देगा—'तू इसे पहले अपनी छाक खिला।'

'मैं इसकी छाक नहीं खाऊँगा।' सुबाहुकी अस्वीकृति अब कौन सुने? श्याम तो अपना छीका लेने दौड़ गया है।

'दादा! तू इसके हाथ पकड़े रह।' बेचारे सुबाहुके हाथ तो दाऊने पकड़ लिये और श्याम उसे बार-बार गुदगुदा-कर भरता जा रहा है उसके मुखमें मोदक, नवनीत, दही-भात। दोनों भाई हँस रहे हैं और भोजनके ग्रास मुखसे भीतर उतारता भी सुबाहु झगड़ रहा है। उसे छोड़ते क्यों नहीं ये दोनों।

वर्षामें

'कनूं, भाग! वर्षा आ रही है।' दाऊने अपने कम्बल-की 'घोघी' सिरपर रख ली और दौड़े वे छोटे भाईकी ओर। यह श्याम न आँधी देखता न पानी। कितनी दूर डाल रखी है अपनी कमरिया इसने। श्यामका कम्बल उठाकर उसकी भी घोघी बनाकर उन्होंने मोहनके सिर-

पर रखा—'सुनता नहीं, कितने जोरका पानी आ रहा है। देख उधर।'

'अरे !' अब दृष्टि गयी कृष्णचन्द्रकी। सचमुच पानी तो बड़े जोरसे आ रहा है। बड़ी भारी हरहराहट है और अब तो आँधी आ भी गयी है। वृक्षोंकी शाखाएँ झकोरे लेने लगी हैं, लताएँ झकझोर उठी हैं, गायें पूँछ उठाकर 'हम्मा-हम्मा' करती दौड़ी जा रही हैं भण्डीर वटकी ओर। वनपशु भी भाग रहे हैं।

'भाग, दादा! भाग!' अब मोहन बड़े भाईका हाथ पकड़कर भागने लगा है। काले कम्बलकी घोघी ओढ़े ये दोनों भाई दौड़ते जा रहे हैं! गोपकुमार गायों को भगाये आगे-आगे थोड़ी दूर निकल गये हैं। 'दादा, गुफामें चल।'

यह शरद् ऋतुकी वर्षा—अभी कुछ क्षण पूर्व धूप निकल रही थी। पता नहीं किधरसे मेघका एक खण्ड आ गया और देखते-देखते बड़ा हो गया। 'पड़, पड़, पड़' बड़ी-बड़ी बूंदे गिरने लगी हैं तीव्र वायुके वेगमें तिरछी होकर। अब राम-श्याम भागे जा रहे हैं। इनका पूरा शरीर छिपा काले कम्बलोंके नीचे। हरी-हरी दूर्वासे आच्छादित जलसे आर्द्र भूमिपर दोनोंके लाल-लाल चरण बड़ी शीघ्रतासे पड़ रहे हैं।

'दादा!' गुफामें पहुँचकर दोनोंने घूमकर बाहरकी ओर देखा। श्यामके मुखपर प्रसन्नता है। एक भाव है—हम कैसे भाग आये।' अलकोंमें हीरक-कण-से जलके कुछ सीकर उलझ रहे हैं।

'बड़ी शीतल हैं !' गुफामें कुछ दूर तक बौछारकी बूंदें आ रही हैं। अपना एक हाथ बढ़ाकर श्यामने बूँदें लीं और फिर खींच लिया हाथको।

'तू हाथ क्यों भिगाता है।' दाऊने छोटे भाईका हाथ पकड़कर खींच लिया पूरा और श्यामको अपने पास समेट लिया—'कितनी ठंड है।'

बाहरवृक्षोंकी शाखाएँ झूम रही हैं, लताएँ झुकी पड़ती हैं, बड़ी-बड़ी बूंदें पड़ रही हैं। पृथ्वीपर जल बह चला है। दूर भाण्डोर-वटके नीचे गायों एवं गोपकुमारोंका समूह एकत्र हो गया है और यहाँ गुफामें कम्बलोंमें लिपटे, केवल मुख खोले, परस्पर सटे बैठे हैं ये राम-श्याम।

'दादा !' कन्हाई बीच-बीचमें ताली बजाता प्रसन्न होता है किसी वृक्षका हिलना या किसी पशुका भागना देखकर।

'तू हाथ बाहर मत निकाल।' दाऊसमेट लेना चाहता है अपने अनुजको।

'कितनी ठंड है !' पर यह चञ्चल जब माने।

निर्भय

'मैया ! आज वनमें मुझे लंगूरोंने घेर ही लिया था।' यह श्यामसुन्दर नित्य कोई-न-कोई नवीन समाचार लाता है वनसे। मैया वैसे ही आशङ्कित रहती है और उसपरसे यह समाचार अब पूरी बात सुननेका धैर्य उसे कहाँ है। वह अपने इस सुकुमार पुत्रका एक-एक अङ्ग बड़ी

व्याकुलतासे देख रही है कि कहीं बंदरोंने इसे नोंचा तो नहीं।

'मैया ! खूब बड़े-बड़े मोटे-मोटे लंगूर थे।' अब दोनों हाथ फैलाकर, मुख खोलकर, नेत्र फाड़कर कन्हाई बता रहा है—'बड़ी लम्बी-लम्बी थीं उनकी पूंछें। बड़े-बड़े दाँत थे। मुख फाड़कर सब मुझे डरा रहे थे। 'हूप हूप' करके कूद रहे थे।'

गोचारणसे लौटकर कृष्णचन्द्र मैयाकी गोदमें बैठ गया है आते ही। मैया भूल गई है कि इसके हाथ-पैर धुलाने हैं, मुख धोना है, वस्त्र बदलने हैं, जलपान कराना है। आते ही इसने ऐसा विवरण देना प्रारम्भ किया है कि मैयाका हृदय थक्-थक् करने लगा है। वह बार-बार पूछती है—'उन सबोंने तुझे कहीं काटा तो नहीं ?' पर यह उत्तर देनेके बदले अपनी धुनमें कहता ही जा रहा है। कभी गोदसे उतरकर 'हूप, हूप' करके कूदकर बतलाता है, कभी मुख दिखाता है, खोलकर कभी हाथोंको पंजेके समान बनाता है।

'मैं तो बहुत डर गया था। दादाको बहुत पुकारा मैंने, पर दादा भी नहीं आया। यह तो उलटे ताली बजा-बजाकर हँस रहा था।' बड़े भाईकी ओर श्यामने देखा।

'तुम अपने छोटे भाईको सम्हालते नहीं ?' मैयाने उलाहना दिया दाऊको। कैसा है यह दाऊ ? यह तो अब भी ताली बजाकर सिर हिला-हिलाकर हँस रहा है। इतनी प्रसन्नता क्यों है इसे ? क्या मिल गया है इसको ?

'कनूँ, तुझे कोई काट भी सकता है क्या ?' दाऊने मैयाके उलाहनेपर ध्यान ही नहीं दिया। उसने तो छोटे भाईका हाथ हँसते-हँसते पकड़कर हिला दिया।

'कहाँ ? मुझे तो कोई कभी नहीं काटता !' श्याम-सुन्दर अपनी दोनों भुजाएँ और उदर ऐसे देख रहा है, जैसे अभी ढूंढ़ रहा है कि किसीने कभी उसे काटा भी है क्या। 'मैया, मुझे कोई नहीं काटता ! बताऊँ ?'

'अच्छा रहने दे तू !' गोदसे उठनेको उद्यत पुत्रको मैयाने अङ्कमें समेट लिया। अब यह पता नहीं क्या बता-येगा। गायके, कुत्तेके, बिल्लीके—किसीके मुखमें हाथ डाल देना साधारण बात है इसके लिये।

वे लंगूर कैसे भागे, यह जाननेकी बहुत उत्सुकता हो तो अब आप किसी लंगूरसे जाकर पूछिये। मैयाने तो अपने लालको अङ्कमें दबा रखा है। उसे कुछ जानना नहीं। उसके पास यह दाऊ हँसता खड़ा है। कोई लंगूर उसके पास आनेका साहस नहीं कर सकता इस समय। उसकी गोदमें उसका लाल पूरा निर्भय है।

उत्सव

माँ ! आज उत्सव है न ?' गो-चारणसे लौटे तो श्याम-सुन्दरको देर हो चुकी। यह स्नान कर चुका। मैयाने इसे थोड़ा-सा पुष्पोंसे सजा दिया है। अब घर आये सखाओंसे पता नहीं क्या बातचीत कर आया है कि माता रोहिणी-की गोदमें सहसा आ बैठा है और उनके कण्ठमें दोनों भुजाएँ डालकर बड़े भावसे पूछ रहा है।

'अनन्त-चतुर्दशीका उत्सव तो दिनमें होता है, बेटा ! ब्रजराजने बड़ी श्रद्धासे भगवान्‌का पूजन कर लिया।' माँकी गोदमें कृष्ण जब इस प्रकार आ बैठता है, वे वात्सल्यमें बेसुध-सी हो जाती हैं। झरने लगता है उनके वक्षका अमृत।

'नहीं माँ ! उत्सव इसी समय है। तू बहुत-से पूए, खीर, हलुवा बना ले।' श्यामसुन्दर कोई नवीन योजना लाया है।

'किसका उत्सव है ?' माँको तो कोई उत्सव स्मरण नहीं आता। 'दाऊ दादाका !' कन्हाईको जैसे अपना दाऊ दादा ही सदा दीखता है।

'क्या है दाऊका आज ?' माँको हंसी आ गई।

'उत्सव है।' श्याम नहीं जानता कि उत्सवके लिए कुछ और भी होना चाहिये।

'अच्छा लाल ! तू जब कहे, तभी उत्सव !' भला माँको क्या आपत्ति कि उनका कृष्ण यदा-कदा उत्सवके बिना भी उत्सवकी धूम कर ले। उन्होंने पूछा—

'किंतु इस उत्सवमें खायगा कौन ? ब्राह्मणोंको निमन्त्रित करना है क्या ?'

'मैं खाऊँगा, दाऊ दादा खायगा, सुबल खायगा, भद्र खायगा—सब खायँगे।' मोहनके सब सखाओंका उत्सव है यह। 'अपना मधुमङ्गल ब्राह्मण है न ?

'अच्छा, तो थोड़ी देरमें तुम सब आ जाओ।' माँ हँसकर उठ गयी तैयारी करने। किसीको निमन्त्रण नहीं देना है, नित्यके ही देवता आज भी भोग लगायेंगे।

'यह क्या हो रहा है ?' मैयाने चौंककर माता रोहिणीसे पूछा।

'कृष्ण कहता है कि उसके बड़े भाईका उत्सव है आज।' माँ हँस रही हैं और बड़ी तत्परतासे पक्वान्न बनानेमें लगी हैं।

'रातको यह धूम-धाम ?' बाबा भी एक बार चौंके, पर वे कहते हैं—'कृष्ण ठीक ही तो कहता है। आज अनन्त-चतुर्दशीको रात्रि-जागरण करके भगवान् नारायण-का कीर्त्तन करना चाहिये था हम सबको। हम यह बात भूल गये थे।' अब वे गोपोंको एकत्र करके गोष्ठमें रात्रि-सङ्कीर्तनकी व्यवस्थामें लग गये हैं। अनन्त-चतुर्दशी और दाऊके उत्सवका समन्वय वे क्यों ढूँढें।

उत्सव दाऊ दादाका है, नन्हे गोल-मटोल काले-काले गुमसुम शालग्रामजीका पूजन भी इसमें हो जाय तो श्याम-सुन्दरको आपत्ति नहीं, पर यह अपना उत्सव पृथक् करेगा। इसने बड़े भाईसे कहा—'दादा ! तू शङ्ख बजा, मैं शृङ्ग बजाऊँगा; भद्र भेरी पीटेगा, सुबल ढोल। ऋषभ......सब कुछ-न-कुछ बजायेंगे, कुछ न हो तो ताली ही। गायें, वृषभ, बछड़े—सब खोल दिये हैं इस समय बालकोंने। अन्ततः वे भी उत्सव मना लेंगे।'

वर्षाका धुला मेघहीन गगन, उज्ज्वल चन्द्रिका—इस चतुर्दशीकी चन्द्रिकाके सामने शरद्की पूर्ण चन्द्रिका भी झूठी हो गयी है। फुदक रहे हैं चारों ओर बछड़े ; कूद रही हैं, नाच रही हैं गायें ; हुँकार रहे हैं वृषभ। भद्रकी भेरी, सुबलका ढोल, किसीका मृदङ्ग, किसीकी तुरही और बहुतोंका करताल या किसीका बर्तनको ही बजानेका शब्द। गूँज रहीं हैं दिशाएँ और इस महाशब्दमें सबसे ऊपर गूँज रहा है श्यामके श्रृङ्ग और दाऊके शङ्खका महानाद। आज उत्सव है—नवीन उत्सव है और इस उत्सवमें गायों, बछड़ों, वृषभों, गोपकुमारोंसे घिरे राम-श्याम होड़-सी लगाकर शङ्ख और श्रृङ्ग बजा रहे हैं। अब व्रजराजने गोपोंके साथ जो सङ्कीर्तन आरम्भ किया है, उसकी ध्वनि क्या इस ध्वनिमें सुनायी पड़ सकती है ?

मैं रोऊँगा

'दादा ! मैं गुञ्जा ले जाऊँ ?' कृष्णचन्द्र बहुत कम पूछता है कोई बात अपने भाईसे ; किंतु आज इसे कुछ दूर जाना है, अकेले जाना है। लौटनेमें देर हुई तो दादा डाँटेगा। बड़े भाईकी ओर कुछ सामने होकर यह आगेको झुका सटकर बैठ गया है।

'चल ! मैं साथ चलता हूँ।' दाऊने उठनेका उपक्रम किया।

'मैं अभी आ जाऊँगा। तू यहीं बैठ।' श्यामसुन्दरने [illegible]

देखे हैं। उस समय तो गायें गोष्ठको लौट पड़ी थीं, किंतु उन गुञ्जाफलोंकी माला बनाकर बड़े भाईको पहिनानेकी बात तभी आ गयी थी इसके मनमें। अब यदि दाऊ भी साथ जाय तो फिर माला पहिनानेमें आनन्द क्या रहेगा।

'अच्छा, तू सुबल और भद्रको साथ ले जा।' कन्हाई अकेला जाय, यह दाऊको अच्छा नहीं लगता।

'ये मेरे गुञ्जा-फल ले लेंगे। मैं किसीको साथ नहीं लूंगा।' श्यामने एक बार सखाओंकी ओर मुड़कर देखा। सब बालक थोड़ी दूर खेलमें लगे हैं। कन्हाई भी उनके साथ खेल ही रहा था। सहसा उसे गुञ्जाकी बात स्मरण हो आयी और दाऊके पास दौड़ आया है यह।

'तू मत जा! मैं तेरे लिए जितने गुञ्जा कहे, मँगा देता हूं।' वह स्थान पर्याप्त दूर है, जहाँ जानेकी बात श्याम कहता है। वैसे केवल गुञ्जा लेकर लौटना हो तो वहाँ जाकर आधी घड़ीमें लौट आया जा सकता है; किंतु इस चपलका क्या ठिकाना। यहांसे जाकर यह पता नहीं क्या करे और कितनी देरमें लौटे।

'दादा! मैं झटपट आ जाऊँगा। और कहीं भी नहीं जाऊँगा। मैं फिर कभी तुझसे दूर जानेको नहीं कहूँगा।' कितना अनुरोध, कितना अनुनय, कितना स्नेह है इस कनूंके स्वर एवं नेत्रोंमें। अपने हाथसे दाऊका चिबुक पकड़कर पूछ रहा है यह—'तो जाऊँ, दादा?'

'मैयाने क्या कहा है ?' सीधे मना करना अब दाऊके लिए शक्य नहीं रहा है। श्याम इस प्रकार पूछे तो 'ना' कैसे कहा जाय।

'तू मुझे नहीं जाने देगा तो मैं रोऊँगा।' मैया तो नित्य बार-बार कहती है कि दाऊको छोड़कर कन्हाई कहीं न जाने पाये ; किंतु मैयाकी बात क्यों कहता है दाऊ ? श्यामसुन्दरने दोनों हाथोंसे मुख ढक लिया है और दाऊकी गोदमें अपना सिर रख दिया है।

'क्यों रोयेगा तू ? रो मत।' दाऊको हँसी आ गयी। वह अपने अनुजकी अलकोंपर हाथ फेर रहा है।

'मैं रोऊँगा। नहीं तो, तू जाने दे मुझे। मैं झटपट आ जाऊँगा।' मुख उठाकर कृष्णने फिर अनुरोधपूर्वक पूछा—'जाऊँ, दादा ?'

अब दाऊ कैसे रोक दे इसे। इसका रोना कहाँ सहा जाता है दाऊसे। और यह रो पड़ेगा—यह बात तो झूठी नहीं है।

विवशता

'दादा ! यह मेरे केश खींचकर भाग आया है।' श्रीदामका सहज पाटल-सा मुख क्रोधसे और लाल हो गया है। वह वेगपूर्वक दौड़ा आया है। कन्हाईको वह मार्गमें पकड़ नहीं पाया और अब दाऊके पास तो अभियोग ही उपस्थित किया जा सकता है।

'क्यों करूँ ?' दाऊने दाहिना हाथ पीछे करके छोटे भाईका हाथ पकड़ा और सामने ले आनेके लिए खींचा सहज-भावसे ; किंतु कन्हाई सामने नहीं आना चाहता। वह पीठसे चिपककर खड़ा है।

'मैं इसके केश क्यों खींचूँगा ? इसने मेरा पुष्प अपने केशोंमें लगाया क्यों ?' श्याम इतना भोला है कि इसे ठीक झूठ भी नहीं बोलना आता है।

'दाम ! अब जाने दे इसे तू। तुझसे तो यह छोटा ही है।' दाऊने छोटे भाईका हाथ छोड़ दिया और श्रीदामको मनानेकी चेष्टामें लगा।

'यह छोटा है मुझसे।' कृष्णचन्द्र यह कैसे सह ले कि वह श्रीदामसे छोटा है।

'दादा ! देखो, यह अब भी मुझे चिढ़ा रहा है। तुम इसे मना कर दो।' श्रीदाम क्या करे। यह करूँ अपने बड़े भाईके पाससे हटे तो समझा सकता है वह इसे ; किंतु यहाँ दाऊके पास तो झगड़ा किया नहीं जा सकता।

'तू इसे यहीं रहने दे, और सखाओंमें जाकर खेल। यह है ही ऊधमी। अब इसके साथ मत खेलना।' दाऊ श्रीदामको भी असन्तुष्ट तो करना नहीं चाहता और उसका यह अनुज, बड़ा नटखट है यह।

'तू भाग जा। आँख बन्द कर ले तू।' स्वर्णगौर नीलवसनधारी अपने बड़े भाईकी पीठसे चिपककर कदम्ब-के नीचे खड़ा यह पीताम्बरधारी मयूरमुकुटी नटखट। यह

हँस रहा है, मुख बना रहा है, दाँत दिखा रहा है, नेत्र मटका रहा है और अँगूठा दिखा रहा है। क्या भय है इस समय इसे। अग्रजके आश्रयमें खड़े इसका भला कोई क्या बिगाड़ लेगा।

सामने क्रोधमें भरा श्रीदामा। दाऊ कहता है कि वह अब इस श्यामसे न बोले, न खेले इसके साथ ; किंतु यह कैसे हो। इसका साथ क्या छोड़ा जा सकता है ? छूट सकता है ?

दधिदान

'अरी, कहाँ जा रही हो सब ?' दाऊने सहज भावसे पुकार लिया—'मुझे दही खिलाओगी ?'

इस नील-वसनधारी, एक कुण्डल पहिननेवालेसे किसी-को कोई आशङ्का नहीं। यह कहाँ अपने छोटे भाईकी भाँति ऊधमी है कि किसीको छेड़ेगा या तङ्ग करेगा। यह तो सबकी सहायता ही करना जानता है अथवा चुपचाप बैठा रहेगा।

रङ्ग-बिरङ्गी चुनरीमें सजी बृषभानुपुरकी बालिकाएँ छोटी-छोटी दहेंड़ियाँ सिरपर धरे निकली थीं। इन्हें दही बेचनेकी आवश्यकता है ? लेकिन किया क्या जाय ? दिनभर घरमें सब मन मारे बैठी रहेंगी, इससे वनमें घूम आवें तो अच्छा, यह समझकर माता-पिताने अनुमति दे दी है।

वनमें—जी हाँ, वनमें वृक्ष-लतायें, मयूर-मृग आदि तो हैं ही। ये सब दही खरीदेंगे ? लेकिन वनमें ही तो वह व्रजराजकुमार सखाओंके साथ बछड़े चराता है, जिसको देखे बिना भवन काट खानेको दौड़ता लगता है, तब ये वनमें न आवें तो जायँ कहाँ ?

आज दाऊ साँकरी खोहसे आगे आकर अकेला बैठा था कदम्बके नीचे शिलापर। लड़कियोंको दहेंड़ियाँ लिए आते देख सहज भावसे बोल उठा था। सच तो यह है कि बड़े भाईको यहाँ अकेले देखकर लड़कियाँ कुछ हतोत्साह हो गयी थीं। बड़ा भाई समीप न हो तो छोटा ऊधम अधिक भी कर सकता है और सर्वथा न करे, यह भी सम्भव है। कहीं आजकी यात्रा नीरस ही न रह जाय ? बालिकाओंकी आशङ्काने ही मानो दाऊको द्रवित किया हो।

दाऊके शब्द कानमें पड़े और सबकी सब खड़ी हो गयीं ! सबके मुख खिल गये। सब सिमटकर समीप आ गयीं और सङ्कोच, आदर, श्रद्धा—पता नहीं क्या-क्या आया सबके अन्तरमें। दाऊके समीप सबने दहेंड़ियाँ धर दीं। कोई एक शब्द नहीं बोली किन्तु नेत्र सबके आनन्द-विभोर।

'अरी नहीं, मैं यों ही कह रहा था। तुम सब ले जाओ !' दाऊने बालिकाओंकी सरलता देखी और शान्त बैठा रहा, किसी एक भी दहेंड़ीकी ओर दृष्टि नहीं डाली उसने।

'तुम थोड़ा भी नहीं खाओगे ?' बड़ी कठिनाईसे एक बालिकाने कातर कण्ठसे कहा। सबके नेत्र भर आये हैं। सबके हृदय हाहाकार करने लगे हैं—हाय! आज वनका आना व्यर्थ हो गया। यदि बड़ा भाई भोग नहीं लगाता तो उससे त्यक्त दहीकी ओर छोटा आँख उठाकर भी नहीं देखेगा।

'अच्छा, यहाँ थोड़ा-सा डाल दो।' दाऊको स्वरकी कातरता स्पर्श कर गयी। झुककर फूँक मारकर सम्मुखकी शिला स्वच्छ कर दी इसने।

'तुम इन्हीमें-से खा लो।' बालिकायें प्रसन्न हो गयीं। कहा एकने सानुरोध, किन्तु सबने अपनी-अपनी दहेंड़ियाँ और सामने खिसकायीं।

दाऊ इतनी सारी दहेंड़ियोंका दही कैसे खायेगा? लेकिन किसे निराश कर दे यह? सबमें ही इसे अँगुली डुबानी है। कम-से-कम चखना तो सबको है।

बालिकायें जब दाऊ दही खाकर बैठ गया अँगुली पोंछकर, तब दहेंड़ियाँ उठाकर चलीं। सब परस्पर एक दूसरीकी ओर साभिप्राय देखकर मुस्करा पड़ीं। सब सिमटकर चलने लगीं।

गौर-श्याम पर्वत ऐसे नीचे आकर मिल गये हैं कि मध्यसे एक साथ एक ही व्यक्ति निकल सकता है। पर्वतोंकी ढालपर दोनों ओर सहस्रों बालक बैठे हैं और सम्मुख मार्ग रोके मयूर मुकुटी वनमाली, घनश्याम कटिमें पटका

लपेटे, दोनों पैर फैलाकर, कटिपर दोनों कर धरे खड़ा है मार्ग रोके। वह कह रहा है—'तुम सब मेरे वनसे प्रतिदिन छिपकर दही बेचने निकल जाती हो। आज मेरा कर देकर जाना पड़ेगा।'

'वन कबसे तुम्हारा हो गया ?' एकने तनिक धृष्टतापूर्वक कहा—'बड़े भाईने सबकी सब दहेंड़ियाँ जूठी कर दीं और अब ये कर लेने आ गये हैं।'

'सब दही मेरा है। मेरे दादाका प्रसाद है।' कन्हाई ताली बजाकर प्रसन्न होकर बोला—'मैं दूँगा उसे मेरे दादाका प्रसाद मिलेगा।'

अब इस तर्कको आप अस्वीकार कैसे कर सकते हैं ? अग्रजका प्रसाद अनुजका स्वत्व नहीं है, यह कोई कैसे कहेगा ? लड़कियाँ दही नहीं देंगी तो कन्हाई अपना स्वत्व छीनेगा ही। इस छीना झपटीमें दहेंड़ियाँ फूट जायँ, हार-आभूषण टूट जायँ, वस्त्र फट जायँ तो कोई क्या करे।

लड़कियाँ लौटेंगी तो घर बड़ोंको बतलानेकी बहुत बातें उनके पास हैं। वनमें कपि हैं, रीछ हैं और वे दही देखकर झपट पड़ते हैं। भोली बालिकायें डरकर भागेंगी नहीं ? गिरनेसे दहेंड़ियाँ फूट जाती हैं। भागनेमें लताओंसे उलझकर वस्त्र फट जाते हैं, आभूषण टूट जाते हैं, कहीं शरीरमें खरोंच भी आ जाती है।

बरसानेमें तो सभीके माता-पिता आशीर्वाद देते हैं श्रीव्रजराजकुमारको। नन्द-नन्दन बहुत सदय है। वह

प्राय: बालिकाओंकी चीख सुनकर दौड़ आता है और रीछ, कपियोंको भगा देता है। इन्हें उठाता है, इनके वस्त्र-आभरण कटीली लताओंसे सुलझा देता है।

वृक्षपर

'कनूँ !' दाऊको अपना छोटा भाई दो पल भी न दीखे तो वह तुरन्त पता लगाना चाहता है कि वह कहाँ है, क्या कर रहा है, आस-पास है भी या नहीं।

'कू !' श्यामसुन्दर कोकिलके स्वरमें कूककर उत्तर दे रहा है अपने अग्रजकी पुकारका।

'अरे, कहाँ छिपा कूक रहा है तू ?' अब दाऊ ऊपर वृक्षोंकी ओर मुख उठाकर देखने लगा है।

'खाँ, खाँ, खाँ' यह नटखट कन्हाई रुष्ट बंदरकी भाँति बोल रहा है। 'म्याउँ' यह दूसरा स्वर निकाला इसने और अब तो क्रम चल पड़ा। कभी मयूरकी 'केका' में बोलता है, कभी कुत्तेकी भाँति 'भों-भों' करता है और कभी बछड़ेकी भाषाका अनुकरण करता है।

'तू इतने ऊपर चढ़ा है ?' दाऊ आकर ठीक उस शाखाके नीचे खड़ा हो गया है। ऊपर उठा है उसका मुख। अपने छोटे भाईको एकटक देख रहा है वह।

एक खूब सघन भली प्रकार फूले हुए कदम्बकी मोटी शाखापर श्यामसुन्दर पेटके बल लेटा है। दोनों हाथोंसे

शाखा पकड़ रखी है इसने। दोनों चरण कभी शाखाके दोनों ओर फैलाकर हिलाता है और कभी पीठकी ओर उठाकर नचाता है। नीचे खड़े अपने बड़े भाईकी ओर देख-देखकर हँसता जा रहा है और अनेक प्रकारके पशुओं, पक्षियोंकी बोली बोलता जा रहा है।

'तू नीचे आ।' दाऊने अपना दाहिना हाथ उठाकर उँगलियाँ हिलाते हुए बुलाया।

'आऊँ दादा ?' यह लो, उचककर शीघ्रतासे डालपर बैठ गया कृष्णचन्द्र। दोनों हाथ डालपर टिके हैं और दोनों चरण एक ही ओर लटक रहे हैं। नीचे मुख करके यह ऐसे पूछ रहा है कि यदि बड़ा भाई इसे गोदमें झेल लेनेको प्रस्तुत हो तो कूद पड़ना चाहता है यहींसे।

'अरे, कूद मत। उतरकर आ।' बड़ी शीघ्रतासे दाऊने दोनों हाथ ऊपर करके रोका।

'अभी आया मैं।' अब मोहन बन्दरकी शीघ्रतासे उतरता आ रहा है।

'धीरे-धीरे उतर। जल्दी मत कर। धीरे उतर।' दाऊकी पुकार कभी सुनता है यह चपल। यह तो केवल बीच-बीचमें मुख घुमाकर हँसते हुए देख लेता है बड़े भाईको और उतरता आ रहा है—उतरता आ रहा है। शीघ्रतासे उतरकर समीप आनेका इसका सदाका स्वभाव……।

तितली

'दादा ! देख, कितनी सुन्दर तितली है।' सचमुच पाटलके पुष्पपर खूब बड़ी-सी रङ्ग-बिरंगे पङ्खोंवाली बहुत सुन्दर तितली बैठी है। श्यामसुन्दर दो क्षण देखता रहा स्थिरतासे उसे और फिर दबे पैर धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ने लगा।

'देख, यह तो मेरी उँगलीपर बैठ गयी है।' मोहनने हाथ तो बढ़ाया था तितलीको पकड़नेके लिए, किन्तु तितली स्वयं उड़कर इसके दाहिने हाथकी अनामिकाके अग्रभागपर आ बैठी। इतना सुरङ्ग, इतना सुरभित पुष्प उसे बैठनेको कहाँ मिलेगा।

'दादा ! भगा दे तू इसे।' कृष्णचन्द्र पहिले तो प्रसन्न हो गया। तितलीको देखता रहा यह थोड़े क्षण। फिर इसने हाथ धीरे-धीरे हटाया और बड़े भाईके पास आया। अपने हाथपर बैठी तितली दाऊको दिखायी इसने। किंतु यह तितली तो अपने पङ्ख एकमें चिपकाकर इसकी उँगली-पर अड्डा ही बना बैठी है। कभी-कभी एक टाँग हिला देती है और बस। न हाथ हिलानेसे उड़ती, न उँगली हिलानेसे। भला, श्यामसुन्दर इसे कबतक अपनी उँगलीपर बैठाये रहे।

'कहाँ गयी भागकर वह !' दूसरे हाथसे उड़ानेका प्रयत्न करनेपर तितली उड़ गयी। अब कन्हाई इधर-उधर घूम घूमाकर इसे देख लेना चाहता है।

'गयी कहाँ, यह क्या तेरी अलकोंपर बैठी है।' सुबल हंस रहा है।

'दादा! भगा दे तू इसे।' यह कोई बात है कि हाथसे उड़कर यह सिरपर डेरा जमा ले।

'दादा! दादा!' श्यामसुन्दर ताली बजाकर नाचने लगा है। दाऊ इसकी अलकोंपर-से तितलीको उड़ाने लगा तो वह दाऊकी उँगलीपर ही बैठ गयी। बड़े भाईके हाथ-पर उसे बैठी देख मोहन बहुत प्रसन्न हुआ है।

'रह, इसे मैं भगाता हूँ।' दाऊने हाथसे उड़ाया तो वह उसकी अलकोंपर जा बैठी। भला, कन्हाई किसीको अपने बड़े भाईके केशोंपर बैठे रहने दे सकता है। लेकिन तितली भी कम चतुर नहीं है। उसे चार स्थान मिल गये हैं! जो केशोंपर-से उसे हटानेको हाथ बढ़ाता है, उसकी उँगलीपर बैठ जाती है और वहाँसे हटानेपर अलकोंपर। राम और श्याम उसे बार-बार हटा रहे हैं और वह कभी एककी उँगली या अलकपर बैठती है और कभी दूसरेकी उँगली या अलकपर।

'रह, तुझे पकड़ूँगा मैं।' और इससे अधिक अच्छी बात दूसरी क्या होगी कि यह नीलसुन्दर अपनी लाल सुकुमार उँगलियोंसे किसीको पकड़ ले।



काली नहीं, सफेद

'कनूँ ! दामकी कृष्णा बछिया ब्यायी है।' भद्रने बड़े उत्साहसे दौड़ते हुए आकर समाचार दिया।

'बछिया तो मेरी है।' श्यामसुन्दर दौड़ा आया और दौड़ आये सब गोपकुमार। सब चारों ओरसे घेरकर खड़े हैं और बड़े स्नेहसे, बड़े कुतूहलसे उस गायको देख रहे हैं। वह अभी अपनी नवजात बछियाको चाटनेमें लगी है। कन्हाई सीधे पहुँच गया है बछियाके पास और उसे गोदमें उठा लेना चाहता है।

'बछिया मेरी है, तू उसे अभी छेड़ मत।' श्रीदाम गायको कुछ खिलानेके प्रयत्नमें व्यस्त है। वह बाँसकी पत्तियाँ तोड़ लाया है, किंतु यह कृष्ण बड़ा झगड़ालू है। अभीसे यदि इसने बछियाको अपना लिया तो सदा लड़ता रहेगा इसके निमित्त।

'बछिया मेरी है ! चल, दादासे पूछ ले।' श्यामसुन्दर बछियाको छोड़कर श्रीदामकी ओर घूमकर खड़ा हो गया है। यह स्वत्वका निर्णय पहले कर लेना चाहता है और सब विवादोंका परम निर्णायक तो उसका दाऊ दादा ही है न ?

'चल !' श्रीदाम भी झगड़ा समाप्त कर देना चाहता है। दाऊ कभी निर्णयमें पक्षपात नहीं करेगा।

'दादा ! मेरे वनमें गैयाने बछिया दी तो वह मेरी हो गयी न ?' बड़े रोबसे कन्हाई चलता आया है।

मौलिश्रीके नीचे अपनी मौजमें दाऊ इस समय अकेला बैठा है। श्यामने आकर उसका दाहिना हाथ पकड़ लिया और देखा श्रीदामकी ओर। श्रीदामको कुछ कहनेकी आवश्यकता जान ही नहीं पड़ती।

'बछिया तो उस कृष्णाकी है।' दाऊ हँस पड़ा और श्रीदाम प्रसन्न हो गया।

'हाँ, उसकी तो है, पर दामकी नहीं है। मेरी है वह।' कृष्णचन्द्र ऐसे झटपट माननेवाला कहाँ है!

'हाँ लाल, वह तेरी ही है। गैया भी तेरी और बछिया भी तेरी ही। मैं तेरे गोष्ठमें अभी पहुँचाये देता हूँ उसे। तू दूध पियेगा न इस गैयाका?' अरे, वनमें ये श्रीवृषभानु बाबा गोपोंके साथ कैसे आ गये? गैयाके ब्यानेका समाचार पाकर तो नहीं आये? सब-के-सब बालक सङ्कोचसे चुप हो रहे।

'बाबा! मैं काली बछिया नहीं लूँगा। मैं सफेद बछिया लूँगा। तुम इसे दामको दे दो।' बाबाके साथ सब आये गायके पास। श्यामसुन्दरने फिर देखा बछियाको। इसका मत सहसा बदल गया है। बड़े भोलेपनसे, बड़े प्रेमसे दोनों हाथोंसे बाबाका हाथ पकड़कर यह अपनी बात कह रहा है।

'लाल! अभी तू इसीको ले ले। कपिलाको बछिया देने दे तो तुझे सफेद बछिया भी दूँगा।' बाबा आनन्दसे पुलकित हो रहे हैं।

'नहीं, मैं काली बछिया नहीं लूँगा।' अब श्यामसुन्दर-ने बड़े भाईका हाथ पकड़ लिया है—'दादा! हम सफेद बछिया लेंगे न?

'बाबा! कपिला कब बछिया देगी? तुम उसे कल बछिया देनेको कह दो।' अब बाबा क्या कह दें किससे और क्या कहें इस भोले नीलसुन्दरसे। उनके कण्ठसे तो इस समय चाहनेपर भी शब्द नहीं निकल पाता और अपने अग्रजका हाथ पकड़े यह कनूँ कहता जा रहा है··· 'मैं काली बछिया नहीं लूँगा, सफेद लूँगा।'

मान

'कनूँ! श्यामसुन्दर!' किंतु अब कहाँ बोलनेवाला है श्यामसुन्दर! इतनी देरसे कन्हाई अकेला कुञ्जमें बैठा है और कोई इसके पास नहीं आया। किसीने खोज-खबर नहीं ली इसकी। यह दाऊ दादा भी इसका ध्यान नहीं रखता। नहीं बोलेगा अब वह किसीसे। किसीके पास नहीं जायगा। दाऊ पुकारता है तो पुकारे, यह नहीं बोलेगा। मान किये बैठा है आज श्याम। यह रूठ गया है सखाओंसे और अपने अग्रजसे भी।

'कनूँ! कहाँ है तू?' अरे देख, कितना सुन्दर पक्षी आया है यहाँ। दाऊ पुकार रहा है। उसने देख लिया था कि उसका छोटा भाई सखाओंसे पृथक् एक सघन कुञ्जमें जा छिपा है। ये बालक कृष्णको थका देते हैं। थोड़ी देर यह अकेले विश्राम करना चाहता है तो अच्छा ही है। इसके

एकान्तमें बाधा नहीं देनी चाहिये। किंतु अब तो देर हो गयी। अब इसे बाहर आना चाहिए। इस सुन्दर पक्षीको देखकर प्रसन्न होगा यह।

'सुन्दर पक्षी आया है।' श्यामका जी चाहता है कि उठकर दौड़ चलें उसे देखने; किंतु नहीं, यह रूठा बैठा है। दाऊके पास नहीं जाना है इसे। वह अकेला ही उस पक्षीको देखता रहे। जब वह श्यामके पास नहीं आता तो श्याम ही क्यों उसका पक्षी देखने जाय।

'तू सो गया क्या?' दाऊ आ रहा है कुञ्जकी ओर। अब श्याम सचमुच लेट गया और नेत्र बन्द कर लिए इसने।

'कनूं!' कहीं सोया और जागता व्यक्ति छिपता है। दाऊ पास आकर बैठ गया। छोटे भाईकी पीठपर धीरेसे हाथ रखा उसने।

'तू मुझे मत छू। जा, तू अपने पक्षीको देख और उसीके साथ खेल।' कृष्णचन्द्रने बड़े भाईका हाथ अपने शरीरसे हटा दिया और कुछ दूर लेटे-लेटे ही खिसक गया।

'तू रूठ गया है? मैंने तो कुछ किया नहीं।' दाऊके अधरोंपर मन्द हास्य आया। वह अपने छोटे भाईके पास खिसक आया।

'तू अबतक क्यों मेरे पास नहीं आया? मैं तुझसे नहीं बोलूंगा।' श्यामने फिर हाथ हटाया और फिर एक ओर

हटा। इसने मुख दूसरी ओर कर लिया है, जिससे दाऊ इसके भरे नेत्रोंको देख न ले।

'कनूं! उठ तो सही तू!' किया क्या जाय। यह दाऊ बलपूर्वक छोटे भाईको अङ्कमें उठा रहा है। श्याम चाहे जितना हाथ-पैर हिलाये, परन्तु इससे छूटने-जितनी शक्ति कहाँ है इसमें और अब इसका मुख अपने सामने कर दिया है दाऊने। 'तू उस पक्षीको देखने चल।'

अब दाऊके मुखकी ओर देखकर कैसे रूठा रहा जा सकता है और फिर वह पक्षी—कहीं उड़ गया वह तो?

रीझ

'कनूं! तू इसे सखा बनायेगा?' आज एक नवीन गोपकुमार आया है। कहीं पासके गाँवका होगा। बेचारा संकुचित हो रहा है। दाऊने अपने छोटे भाईको उसकी ओर आकर्षित कर दिया और इतना ही तो बहुत है।

'हाँ, हाँ!' कन्हाई तो सदा उत्सुक रहता है किसीसे भी मित्रता करनेको। कोई भी, कैसा भी—इसे तो बस, मित्र चाहिए। यह झटसे पहुँच गया है उसके पास और उसका हाथ पकड़ लिया है इसने। 'तू मुझसे लड़ेगा तो नहीं? लड़ेगा तो मैं भी लड़ूँगा और झगड़ेगा तो चिढ़ाऊँगा।' न नाम पूछा इसने और न गाँव, लग गया उसे परिचित बनानेमें।

'श्याम, यह कुछ बलवान् तो दीखता नहीं।' एक सखाने कहा।

'तुम सब मुझे पटक देते हो, मैं इसके साथ मल्लयुद्ध किया करूँगा।' कृष्णचन्द्रको सब अनुकूलता ही दीखती है।

'कहीं यह घमण्डी निकला तो?' एक औरने शङ्का की।' 'बड़ा मजा आयेगा इसे चिढ़ानेमें।' कन्हाईको अब कोई त्रुटि मैत्री करनेसे रोक नहीं सकती।

'तू तनिक ठहर तो।' एक बुद्धिमान् सखा समझा रहा है—'हम सब पता लगा लें कि इसमें कोई दोष तो नहीं। 'क्यों रे, तू कहाँ रहता है?'

'तुम सब मुझमें ही क्या कम दोष बताते हो?' श्यामसुन्दर सदा यही समझता है कि जैसे ये बालक और गोपियाँ इसे झूठमूठ दोष लगाती हैं, वैसे ही लोग दूसरोंको भी व्यर्थ ही दोष दिया करते हैं। यह किसी नये सखाको तङ्ग नहीं करने देगा। 'तू मेरे साथ नाच। नाचना आता है तुझे?'

उसे नाचना आता हो या न आता हो, कन्हाई तो सिखानेवाला है ही। गोपबालक श्यामसे दो पद आगे हैं। सब घुल-मिल जाना चाहते हैं उसके साथ। यह तो कनूँ-को चिढ़ानेके लिए उसकी परीक्षा लेनेकी चर्चा उठायी थी उन्होंने।

'यह मोटा तो खूब है।' बालक हँस रहे हैं।

'मुझे पीठपर ढोयेगा यह।' श्यामको गुण-ही-गुण दीखते हैं उसके।

'दादा ! तू इसे छाक खिला ।' अब वह कितना भी सङ्कोच करे, न यह मयूरमुकुटी माननेवाला है और न उसका यह दादा ही ।

'अच्छा सखा मिला है तुझे ।' यह दाऊ विचित्र ही है । इसे अपनोंके गुण-ही-गुण दीखते हैं । किसीको अपनाकर यह उसके दोष देखना जानता ही नहीं और उसका यह अनुज—यह तो दोषोंको भी गुण देखता है । उन दोषोंको भी अपने आनन्दका साधन मानता है । इसकी यह रीझ—किंतु यह तो स्वयं ही रीझ-ही-रीझ है । दोनों भाई दो ओर बैठ गये हैं और अब ये छीकेके पदार्थ—नये सखाका भोजन किये बिना छुटकारा नहीं ।

दीनबन्धु

'दादा ! यह कौन है ?' गौ-चारणसे लौटते ही श्यामकी दृष्टि मार्गमें खड़े एक भिक्षुकपर पड़ गयी है और अब गायोंको गोष्ठमें पहुँचाना भूल गया यह ।

कोई भिक्षुक—आज इस भाग्यहीनके जन्म-जन्मान्तरके सारे पुण्य एक साथ जग गये हैं । आज यह नन्दगाँव आया है । अभी-अभी ही आया है यहाँ । अभी किसी द्वारपर पुकारतक नहीं सका है । एक अद्भुत स्वर कानोंमें पड़ा और मार्गमें मूर्ति-सा खड़ा रह गया । कौन है इस अमृत-ध्वनिका विस्तार करनेवाला ? और जब यह अधरोंपर मुरली धरे चिरचपल गायोंके पीछे सखाओंसे

घिरा, अग्रजके साथ झूमता-सा आता दिखायी पड़ा—भिक्षुक जैसे भूल गया है कि वह कौन है और कहाँ है।

मैली फटी कटिमें कछनी, कन्धेपर एक चिथड़ा, हाथमें एक टेढ़ी-मेढ़ी लठिया। शरीरकी नस-नस दीख रही है। हड्डी-हड्डी गिनी जा सकती है इसकी। इतना दुर्बल भी मनुष्य होता है? श्याम इसे देखते ही चौंक गया है।

'तू कौन है?' दाऊ पास आकर हाथ पकड़कर झकझोरकर पूछ रहा है। यह बोलता क्यों नहीं? यह तो रो रहा है, रोता ही जा रहा है।

'किसने मारा है तुझे? तू रो मत। दादा उसे मारेगा।' श्यामसुन्दर अपने पटुकेसे आँसू पोंछ रहा है उसके।

'तेरी मैया कहाँ है?' दाऊको एक विचित्र बात सूझी है। यह अपने घरसे भाग आया होगा। भला, मैया पास होती तो इसके कपड़े इतने मैले और फटे कैसे रहते?

'तेरे बाबाने मारा है?' कन्हाई आँसू पोंछता ही जा रहा है उसके।

'मेरी मैया और बाबा नहीं हैं। वे भगवान्‌के घर चले गये।' बूढ़ेको इन बालकोंके भोलेपनपर हँसी आ गयी।

'मैया नहीं है और बाबा भी नहीं?' कृष्णचन्द्र आश्चर्यमें पड़ गया है। 'ओह, कितनी बुरी बात है। बिना मैया बाबाके बेचारा कैसे रहता होगा।'

'तू हमारे घर चल। भूख लगी है न तुझे ? मैया नहीं तो खिलायेगा कौन ? भूखा तो यह होगा ही।' दाऊने अपना नीला पटुका उसके कन्धेपर डाल दिया है।

'तेरी कछनी फट गयी है। तू मेरा पटुका पहन।' श्यामसुन्दर हठ कर रहा है। 'मेरी मैया तुझे मारेगी नहीं। तू पहन इसे।'

हक्का-बक्का हो रहा है भिक्षुक और ये व्रजराज आ रहे हैं। ये भिक्षुकसे राम-श्यामकी बात मान लेनेका अनुरोध कर रहे हैं और ये दोनों भाई उसे हाथ पकड़कर खीचे लिये जा रहे हैं घरकी ओर।

जन्मतिथि

'कनूँ, तू कर क्या रहा है ?' सब सखा एकत्र हो गये, गायें गोष्ठसे निकलकर द्वारपर हुंकार करने लगीं और अभीतक यह कृष्णचन्द्र चलता क्यों नहीं दीखता ? मैयाने तो आज शीघ्र इसे छुट्टी कर दी खिला-पिलाकर, फिर यह इस घरसे उस घरमें दौड़-धूप क्या कर रहा है ?

'दादा ! आज जन्मतिथि है न।' यहाँ नित्य ही किसी-न किसीकी जन्मतिथि रहती है। बहुत थोड़े मनहूस दिन एवं अशुभ नक्षत्र हैं, जिनमें किसी सखाकी जन्मतिथि नहीं पड़ती।

'किसकी जन्मतिथि है ?' श्यामकी जन्मतिथि तो है ही नहीं और दाऊकी जन्मतिथि भी नहीं। किसी सखाकी जन्मतिथि होनी चाहिये, पर किसकी ?

'दादा ! किसकी जन्मतिथि है ?' अब इस भोलेपन-की कोई सीमा है ? स्वयं जन्मतिथि मनानेका उद्योग कर रहा था यह और स्वयं ही पूछ रहा है कि जन्मतिथि किसकी है।

'मुझे तो पता नहीं है ?' दाऊ हँस पड़ा। 'दाम ! तेरी जन्मतिथि नहीं है ?' और जब श्रीदामाने अस्वीकार-कर दिया तो 'भद्र ! तेरी ?'

'दादा ! बता न किसकी जन्मतिथि है ?' यह कैसा दादा है कि कन्हाईको जन्मतिथि नहीं बताता। श्याम जब बड़े सबेरेसे सम्भारमें लगा है, तब किसी-न-किसीकी जन्मतिथि तो होनी चाहिये।

'अरे, तुम सब क्या कर रहे हो ?' माता रोहिणीको लगा कि आज बालकोंको कोई असुविधा तो नहीं हो रही है। नित्य तो ये सब गोचारणके लिए वनमें जानेको उतावले रहते हैं और आज खड़े क्यों हैं ?

'माँ ! किसकी जन्मतिथि है आज ?' दौड़कर कन्हाई-ने माताका हाथ पकड़ा।

'जन्मतिथि ?' मैयाके कानोंमें बात पहुँची और वह चौंक गयी। इतनी बड़ी बात भूल गयी वह ! कैसी है उसकी देवरानी कि अपने बच्चेकी जन्मतिथि भी स्मरण नहीं रखती। उमङ्गसे गोदमें भर लिया मैयाने श्याम-सुन्दरको—'तेरे छोटे भाई तोककी जन्मतिथि है, लाल !'

'तोककी जन्मतिथि है !' कन्हाई नाचने लगा है। इसने कितनी महत्त्वपूर्ण बात सुझायी है।

'दादा ! मैंने तेरे लिए भी बहुत-सी वस्तुएँ एकत्र कर ली हैं।' तोककी जन्मतिथि है। उसे आज उपहार देना है। श्यामसुन्दरने ढेरों वस्त्र, आभूषण, खिलौने और पता नहीं क्या-क्या एकत्र कर रखे हैं। बड़े सबेरेसे वह इसी आयोजनमें लगा था। अपने बड़े भाईका हाथ पकड़कर यह अपनी एकत्र वस्तुओंकी राशि बड़े उत्साहसे दिखा रहा है—'दादा ! हम दोनों मिलकर तोकको यह सब देंगे।'

व्रजका राजा

'दादा ! तू यहाँ बैठ !' आज श्यामसुन्दर पूरी उमङ्गमें है। वनमें आते ही इसने बड़े भाईके लिए एक ऊँची, समतल चिकनी शिला अपने पटुकेसे झाड़कर स्वच्छ कर दी है और ढेरसे पुष्प बिछा दिये हैं उसपर।

'क्यों ? तूने सजाया है इसे, तू बैठ।' दाऊको अब पता लगा कि इतनी देरसे उसका छोटा भाई इस शिला-को उसके लिए सजानेमें जुटा था।

'बाबाने कह दिया है कि राजा तू है, अब बैठ तू।' कन्हाईने दाऊका हाथ पकड़ा।

कल दिनभर दोनों भाइयोंमें यही विवाद रहा कि व्रजका राजा कौन है। श्यामसुन्दरका पक्ष था कि राजा दाऊ है और दाऊ कहता था कि राजा कन्हाई है। यद्यपि गोपकुमार कृष्णचन्द्रके पक्षमें थे, फिर भी दाऊ कहाँ किसीकी बात मानता है। गोचारणसे लौटनेपर घरमें

जानेके बदले श्याम सीधे बाबाके पास गया और उनका हाथ पकड़कर पूछने लगा—'बाबा, अपने व्रजका राजा तो यह दाऊ दादा है न ?'

'हाँ, हाँ ! तेरा दादा तो जन्मसे ही राजा है। हम सबका, पूरे व्रजका यही राजा है।' बाबाने हँसते हुए कहा।

'यह कन्हाई राजा है, बाबा !' दाऊने भी बाबाका हाथ पकड़ा।

निर्णय बदला नहीं। श्यामकी विजय हो चुकी थी। बाबाने स्नेहसे पुचकारते हुए कहा—'राजा तो बड़ा भाई होता है। छोटा भाई तो युवराज होता है। कृष्ण व्रजका युवराज है।'

कृष्ण तो है ही व्रजका नित्य युवराज ; किंतु युवराज क्या होता है, यह समझनेका अवकाश उस समय कृष्णको नहीं था। वह विजयी हो चुका था। उसका दादा व्रजका राजा है। बड़ी उमङ्गसे मैयासे, माता रोहिणीसे और जो कोई मिला, उससे इसने यह मङ्गल समाचार दौड़-दौड़कर सुनाया। सबने इसका समर्थन किया। एकने भी तो विरोध नहीं किया था।

आज अब कल सायङ्कालकी अपनी विजयको सार्थक करनेमें श्याम जुट गया है। इसने अपने व्रजके राजाके लिए शिलापर सिंहासन सजाया है और अब दाऊ क्यों उसपर बैठनेसे मना करता है ? अब तो उसे बैठना ही पड़ेगा। वह राजा जो है।

राजा बनना सबसे बड़ी उलझन है। दाऊ क्या करे ? बाबाके निर्णयको वह टाल भी देता, पर यह कनूँ ऐसा करने कहाँ देता है। पुष्पोंसे सज्जित शिलातलका यह सिंहासन, पुष्पित कदम्बकी झुकी लहराती डालका छत्र—किस चक्रवर्तीका सिंहासन इससे भव्य होगा। इस सिंहासनपर मस्तकपर मयूरपिच्छका मुकुट सजाये यह नीलाम्बरधारी और उसके दाहिनी ओर हाथमें कमलको चवँर बनाये खड़ा श्यामसुन्दर—सहस्रशः पंक्तिबद्ध बालकोंसे पूर्ण यह राजसभा।

अमरावतीके अधीश्वर इस राजसभाके बाहरी द्वारपर ही प्रणिपात कर सकते हैं।

प्यास

'दादा ! मुझे प्यास लगी है।' मैया नित्य प्रातः वनमें चलते समय दाऊको बार-बार सचेत करती है कि वह अपने छोटे भाईको यमुनाके पास न जाने दे। आज श्यामसुन्दरको प्यास लग गयी है। यहाँ आस-पास कोई झरना भी नहीं दीखता कि यह स्वयं जल पी आये।

'तू जल पी आ !' दाऊके स्वभावका कुछ ठीक नहीं। कभी तो वह छोटी-छोटी बातोंपर भी ध्यान रखेगा और कहीं जमकर बैठेगा तो फिर पूरा बाबाजी बन जायगा। कन्हाई चाहे जो धूम करे, उधर देखेगा ही नहीं।

'तू चल। नहीं तो मैया मुझसे झगड़ेगी।' ये सखा बड़े वैसे हैं। कोई-न-कोई मैयासे अवश्य कह देगा। ये सब तो

झूठे ही दोष लगाया करते हैं ; फिर श्याम अकेला जल पीने जाय तो कहेंगे नहीं ? यह अकेला नहीं जायगा। बड़े भाईका हाथ पकड़ लिया इसने ।

'अच्छा, चल ।' दाऊ धीरेसे उठा । उसने देख लिया है कि उसके छोटे भाईके पतले-पतले लाल-लाल ओठ प्यासके कारण कुछ सूखेसे जान पड़ते हैं ।

'ना, तू पिला दे ।' कनूँ भी कम अद्भुत नहीं है । कभी तो यह धूम करता घूमेगा और कभी सीधा बन जायगा तो इतना कि दूसरा कोई ढूँढे भी न मिले । दाऊ-ने कमलका एक चिकना, कोमल नया पत्ता तोड़कर उसका दोना बना दिया और उसमें जल भरकर कन्हाईको देने लगा ; किंतु श्याम अपने हाथमें दोना लेकर जल नहीं पीना चाहता । यह खिसककर दाऊके पास आ गया है । बड़े भाईके हाथसे ही जल पीना है इसे ।

कमलका यह नवीन पत्र अभी पूरा हरा नहीं हुआ है । कुछ पीलेपनकी झलक है इसमें । इसके दोनेमें भरा स्वच्छ, शीतल, झिलमिल करता जल । दाऊ अपने खिले पद्मसे करमें दोना लिए है और यह झुका है श्यामसुन्दर । मयूरपिच्छ दाऊके कण्ठ तथा चिबुकको बार-बार छू लेता है । पल्लवसे अधर लगे हैं दोनेमें । एक हाथसे दाऊका एक घुटना पकड़ रखा है इसने और दूसरे बायें हाथमें मुरलिका लिए उसे भूमिपर टिकाये है ।

'तेरी प्यास गयी नहीं ?' कितना प्यासा था यह सुकुमार । दो-तीन दोने जल पी चुका । दाऊ बार-बार

दोनेको भरता है। लेकिन अब यह नटखट जल कहाँ पी रहा है। इसने तो दोनेसे मुख लगा रखा है और चिबुकके पास जल गिराता जा रहा है।

'और ?' दाऊ हँस रहा है और नेत्र तथा भौंहोंसे 'और'की स्वीकृति देकर नेत्रोंमें ही यह भी हँस रहा है। बार-बार नेत्र ऊपर करके बड़े भाईकी ओर देखता है। घुटने और पीताम्बर भीग रहे हैं। जल धीरे-धीरे गिर रहा है मुखके पाससे। भला ऐसी प्यास काहेको बुझेगी। यह अद्भुत प्यास……।

'अब बस !' दाऊने हाथ रोकना चाहा।

'एक और !' श्यामके इस अनुरोधकी जो शोभा है, अद्भुत है वह और एक और दोना जल पीकर उसका 'बस।'—कितनी तृप्ति, कितना आनन्द, कितना माधुर्य है इस 'बस' की स्मितरेखामें।

'आ !' दाऊ अपने पटुकेसे मुख पोंछ रहा है इसका।

फल-संचय

'दादा, मैं आम खाऊँगा। देख न, इस वृक्षमें कैसे लाल-लाल आम हैं।' कन्हाई जब बहुत प्रसन्न होता है, तब इस प्रकार आकर बैठकर किसी वस्तुकी माँग करता है। वृक्षपर चढ़कर आम तोड़ लेना इसके लिये बहुत सीधा काम है। संकेत पाते ही कोई सखा ढेरों फल लाकर सामने रख देगा। और यह सब करनेकी आवश्यकता

क्या है ? वृक्षके नीचे जाकर यह अपना लाल हाथ फैलाये तो फल स्वतः चू पड़ेगा ; किंतु आज तो अग्रजसे लेकर फल खाने हैं इसे ।

'आ !' दाऊ सदा कम बोलता है। वह उठ खड़ा हुआ और वृक्षके पास पहुँच गया है ।

'तुम सब मेरे आम मत लेना ।' कृष्णचन्द्रने अभीसे पटुका फेंटमें कस लिया है। ये सब सखा दौड़ आये हैं वहाँ । ये बड़े चञ्चल हैं, कन्हाई इन्हें अपने फल नहीं छूने देगा ।

'तू रोकता क्यों है ? सबको खा लेने दे ।' दाऊ हँसा ।

'नहीं दादा ! ये सब अच्छे आम ले लेंगे । मेरे लिये छोटे-छोटे खट्टे फल छोड़ देंगे । मैं अपने आप सबको बाँट दूँगा ।' कोई गड़बड़ करे, यह व्रजराजकुमारको कैसे सहन हो ? वैसे वे स्वयं सबसे अधिक गड़बड़ कर लेते हैं, यह दूसरी बात ।

'अच्छा, तुम सब वृक्षके नीचेसे हट जाओ । दूर हट जाओ ।' दाऊ वृक्षपर चढ़नेसे रहा । वह तो तनेको नीचे-से पकड़कर पूरे वृक्षको एक साथ झकझोर देगा ।

'कनूं ! अभी नहीं, रह । नीचे मत आ ।' दाऊने पीछे मुड़कर देखा । उसका छोटा भाई फल उठानेको उत्सुक हो रहा है । अभी भदाभद फल गिर रहे हैं । उसे नीचे नहीं आना चाहिए ।

'कोई मेरे फल छुयेगा तो हाँ।' श्यामसुन्दर बार-बार लपककर पासके फलोंको उठा लेता है। यह एक छोटी ढेरी बना चुका है। दूसरे सब सखा चुपचाप खड़े हैं दस-पाँचको छोड़कर। किया क्या जाय, तोक तथा उसके समान नन्हे सखाओंको कन्हाई रोकनेकी बात ही कह सकता है। उनसे झगड़ा नहीं किया जा सकता।

'बस, दादा! बस' दोनों हाथोंसे वृक्षको पकड़कर दाऊ हिला रहा है। लाल, पीले, सिन्दूरी रङ्गके सुन्दर आम्रोंसे भूमि पट गयी है। फल गिरते ही जा रहे हैं। श्यामसुन्दर अब इन फलोंको एकत्र करनेके लिए उत्सुक है। ये नन्हें सखा मना करनेसे माननेवाले हैं नहीं, अतः शीघ्रता करनी है इसे।

'तू सबको फल एकत्र कर लेने दे। सब तेरी ढेरीपर ही एकत्र करेंगे?' दाऊ वृक्षसे नितम्ब भाग टिकाये खड़ा हो गया है और देख रहा है दौड़ते, झुकते पटुकेमें जल्दी-जल्दी फल समेटकर ढेरीपर एकत्र करते अपने छोटे भाईको।

'नहीं दादा, ये सब मेरे फल ले लेंगे और फिर मुझसे लड़ेंगे।' कन्हाई उमङ्गमें है। हँस रहा है बार-बार बड़े भाईकी ओर देखकर, उसके दादाने कितने फल गिरा दिये हैं! यह स्वयं संचय करेगा सबका। अकेले एकत्र करके बाँटेगा। घिरी आती हैं मुखपर अलकें और लगा है यह एकत्र करनेमें।

अभ्यास

'कनूं, आ !' लाठी चलाने और गदायुद्धका दाऊ जन्म-जात परमाचार्य है। दूसरी बात यह कि श्यामसुन्दर दूसरे बालकोंके साथ लाठीका अभ्यास करे, यह इसे स्वीकार नहीं है। कन्हाई बहुत सुकुमार है। दूसरे गोप-कुमार उमङ्गमें आनेपर पूरी सावधानी रख नहीं पाते। कहीं किसीका हाथ चूक गया और......

'आ दादा !' कृष्णचन्द्र पहले ही प्रस्तुत हो गया है। अपनी लठिया सम्हाल ली है इसने और मैदानकी भूमिपर दोनों हाथों उसका एक सिरा दृढ़तासे पकड़े, दूसरे सिरेको दूर पृथ्वीपर टेके कुछ तिरछे खड़ा है यह तनिक झुका हुआ।

सुविस्तृत भूमि है, वृक्षों एवं लताओंका घेरा है इस मैदानके चारों ओर और मैदानकी भूमि हरित दूर्वासे मञ्जुल हो रही है। गायें चारों ओर वृक्षोंके मध्य चर रही हैं। गोपकुमार पूरे मैदानकी सीमाको घेरकर मण्डलाकार खड़े हैं इस अभ्यासको देखनेके लिए।

पटुके, वनमाला, शृङ्ग, वस्त्र आदि उतारकर पर्याप्त दूर रख दिये हैं दोनोंने। अलकोंको समेटकर बाँध दिया गया है मस्तकके ऊपर जटा-मुकुटकी भाँति। कछनी कस ली गयी है। मस्तकसे किञ्चित् ऊँची सुदृढ़ लाठियाँ लिए दोनों एक दूसरेके सामने बीच मैदानमें आ खड़े हुए हैं।

'तू इधर-उधर मत देखना। मेरी लाठीकी ओर भी मत देखना। मेरे नेत्रोंकी ओर बराबर देखता रह और

प्रयत्न कर मुझे लाठी लगानेका ।' दाऊ अपने छोटे भाई-को आदेश दे रहा हैं ।

'मैं तुझे लाठी नहीं मारूँगा ।' श्याम अपनी लठिया फेंकने जा रहा है ।

'मेरी लाठीपर लाठी मार ।' हँसा दाऊ । 'मुझे तेरी लाठी नहीं लगेगी । तू डर मत । चल !'

अब यह तड़ातड़, ये पैंतरे और यह आगे-पीछे उछ-लना वर्णनमें कैसे आये ? अरुण हो उठा है कन्हाईका सुन्दर मुख । नन्हे हीरककण जैसे नीलकमलके दलोंपर बिखेर दिये गये हों—स्वेद-सीकर चमकने लगे हैं ।

'तू कहाँ देखता है ?' श्याम बीचमें चाहता है सखाओंकी ओर देख लेना । कितनी सुन्दर लाठी चलाता है वह ! किंतु दाऊ तत्काल सावधान करता है इसे ।

'तू थक गया । रहने दे अब ।' कृष्णचन्द्रकी कोमल भुजाएँ कबतक यह श्रम सह सकती हैं ।

'मैं थका नहीं हूँ । ले, रोक, दादा !' लेकिन यह मानता नहीं । बड़े उत्साहसे उछल रहा है । चल रहा है इसका अभ्यास ।

दादा कहाँ है ?

'दादा ! दादा ! दादा !' कन्हाई चाहे जैसे खेलमें लगा हो, तनिक-तनिक देरमें अपने बड़े भाईकी ओर अवश्य देख लेगा । दाऊ आस-पास है, यह देखकर निर्भय-निश्चिन्त हो जाता है । इसका दादा पास है, फिर इसे

क्या चिन्ता। किंतु इस बार इसे दादा दीखा नहीं और भूल गया श्याम खेलना। यह इधर-उधर देख रहा है और पुकार रहा है।

'भद्र ! दादा कहाँ है ?' श्यामसुन्दर ऐसे ढूँढ़ रहा है, जैसे बड़ी भारी भीड़में माता या पितासे पृथक् हुआ बालक व्याकुल होकर— कातर होकर उन्हें इधर-उधर देखता है।

'अभी तो यहीं था।' भद्र कहाँ समझता है कृष्णचन्द्र-की आकुलताको।

'सुबल ! तूने देखा है दाऊ दादाको ?' पूछनेके साथ मोहन इधर-उधर उचककर देखता जा रहा है।

'वह किसी वृक्षके नीचे या किसी कुञ्जमें बैठा होगा।' सुबलका उत्तर सन्तोष दे सकता है कन्हाईको ?

'कनूं ! तू डर मत ! दाऊ दादाको कोई राक्षस चुरा नहीं ले जायगा।' यह नन्हा तोक कुछ नहीं समझता। दाऊ दादाके पास राक्षस पहुँचा तो वह उसका एक घूसेमें कचूमर निकाल देगा, सो तो ठीक ; किंतु है कहाँ दाऊ दादा ? कन्हाई उसके बिना अपनेको जो अकेला पाकर व्याकुल है।

'दादा ! दादा ! कहाँ है तू ?' कृष्णचन्द्र वृक्ष पर चढ़ गया है। वह पूरी शक्तिसे पुकार रहा है।

× × ×

स्वर्णयूथिकाके ढेरों पुष्प सामने रखे दाऊ कुञ्जमें छिपा बैठा है। वह माला बना रहा है—खूब मोटी-सी बड़ी-सी माला।

'दादा ! दादा !' कनूँ पुकार रहा है। इसके स्वरमें बहुत व्यग्रता है। दाऊके हाथ शीघ्रतासे चल रहे हैं। उसे अपनी यह माला पूरी करनी है।

'दादा ! दादा ?' कन्हाई इधर-उधर ढूँढ़ रहा है। इसका स्वर रुआँसा हो रहा है।

'कनूँ !' दाऊने माला पूरी करते-करते पुकारा।

'दादा ! दादा ! कहाँ है तू ?' श्यामके स्वरमें उल्लास आ गया है। इसके नूपुर बज रहे हैं। यह दौड़-दौड़कर एक-से दूसरी कुञ्जमें झाँक रहा है।

'दादा !' यह आया कन्हाई। खिल उठे हैं आनन्दसे इसके नेत्र। 'तू यहाँ छिपा है, दादा ?'

'कनूँ !' दाऊने उठकर अपनी पीली मोटी माला छोटे भाईके गलेमें डाल दीं। यह श्याम दोनों हाथोंमें मालाको वक्षसे कुछ उठाकर देख रहा है। कितनी सुन्दर है यह माला।

नाच रहा है आनन्दसे यह।



फिसलन

'कनूँ ! तू मेरे पीछे बैठ !' दाऊ ठीक तो कहता है। वहाँसे फिसलनेपर जो आगे होगा, उसीके ऊपर तो पीछे-वाला नीचे लुढ़केगा।

'नहीं, दादा ! मैं आगे चलूँगा।' कन्हाई पीछे नहीं रहना चाहता। वैसे सदा यह अपने अग्रजके पीछे चलता है, किंतु आज आगे चलनेकी धुन है इसे।

'अच्छा, आ, चल तू।' दाऊ चाहता है कि उसका सुकुमार छोटा भाई पहिले फिसलकर बढ़ जाय। जब यह नीचे उठकर खड़ा हो जाय, तब दूसरे चलें। कोई इसके ऊपर ही न लुढ़क पड़े।

वर्षा हुई है। वृक्ष एवं लताओंके पत्तोंसे बूँदें टपक रही हैं। पृथ्वी अभी भीग रही है और भीग रहा है पुलिन। बड़ी ऊँची तिरछी चिकनी शिला है और उसके नीचे सुकोमल रेत है भीगी हुई। शिला भीगकर और भी चिकनी हो गयी है। उसका दूसरा ऊँचा सिरा एक टीले-पर है, जिसपर सरलतासे बालक चढ़ सकते हैं। खूब चौड़ी है शिला। तीन-चार एक साथ उसपर फिसलें तो भी उनके मध्यमें और इधर-उधर बहुत स्थान बच रहेगा। हाँ, ये जो दस-बारह साथ चल पड़ते हैं, धक्कम-धक्का करना ही तो इन बालकोंका आनन्द है।

गायें चरनेमें लग नहीं पा रही हैं। एक तो ये तृप्त हो गयी हैं, दूसरे घास बहुत भीगी है अभी। वे सब खड़ी-

खड़ी पागुर कर रही हैं। कुछ बछड़ियाँ कान-पूंछ उठाकर कूद रही हैं इधर-से-उधर।

बालकोंने पटुके, मालाएँ, शृङ्ग, वेत्र, छीके आदि इधर-उधर डालियोंपर, भूमिपर, शिलाओंपर धर दिये हैं। केवल कछनी है कटिमें। बड़े उत्साहसे दौड़कर एक दूसरे-को ठेलते हुए टीलेपर चढ़ते हैं और फिसलते हैं शिला-परसे। नीचे एक दूसरेके ऊपर लद्बद् गिरते हैं, हँसते हैं खुलकर, रेतमें लोट-पोट होते हैं और फिर हँसते-चिल्लाते टीलेपर दौड़ते चढ़ जाते हैं। अब भला, इनमें आगे-पीछे-का क्रम कैसे रह सकता है।

गीली रेतसे सनी कछनी, सर्वाङ्गमें रेत लगी है और अलकोंतकमें भर गयी है। दोनों हाथ उठाकर कन्हाई फिसल रहा है शिलासे। बड़ा प्रसन्न है यह। बगलमें सरकते सखाओंको जानबूझकर हाथसे, देहसे धक्का देता जा रहा है।

'दादा! आ तू।' शिलासे सटकर रेतपर घुटनोंके बल हो गया है श्याम। यह चाहता है कि दाऊ इसकी पीठपरसे लुढ़के।

'तू हट।' दाऊ छोटे भाईको बचाना चाहता है।

'तू आ।' अब इसका आग्रह कैसे टाला जाय। दाऊ फिसलता आया और लुढ़क गया छोटे भाईकी पीठपरसे रेतमें; किंतु यह कनूं उसे झटसे पकड़कर पकड़े-ही-पकड़े लोट-पोट हो गया है और अब हँस रहा है, ताली बजा रहा है अपनी कुशलतापर।

'चल, चल दादा !' बड़े भाईका हाथ पकड़कर यह फिसलने जाना चाहता है बड़े उत्साहसे।

'तुझे चोट तो नहीं लगी ?' किंतु दाऊके प्रश्नका उत्तर देनेका अवकाश किसे है।

श्याम उसे हाथ पकड़े लिए जा रहा है फिर ऊपर।

अब क्या हो ?

'दादा ! दादा ! देख, मैं कितने अच्छे जामुन ले आया हूँ।' श्यामसुन्दर दौड़ता आ रहा है। अपने पटुकेमें ढेरसे जामुन इसने भर रखे हैं—बिना यह सोचे कि पटुकेमें इन फलोंके काले-काले धब्बे पड़ जायँगे। दोनों हाथोंसे फलोंकी गठरी सम्हाले बड़ी प्रसन्नतासे उमङ्गमें भरा आरहा है यह। दूरसे ही अपने अग्रजको पुकारने लगा है।

कनूँ आ रहा है। बड़े उल्लाससे फल लिए आ रहा है। किंतु इस प्रकार दाऊके लिए फल या सुन्दर फूल लेने बहुत दूर-दूर भटका करता है यह सुकुमार। जामुनकी शाखाएँ शीघ्र टूटनेवाली होती हैं और बड़े भाईके लिए उत्तम फल लेने बहुत ऊपरतक चढ़ जाता है यह। भला क्यों इतना हैरान होता है ? क्यों इतना थका है ? क्यों वृक्षपर चढ़ता है। दाऊ रूठ गया है इससे। वह नहीं लेगा इसके जामुन। उसने मना किया था, कहा था कि दूर मत जा ; फिर क्यों नहीं सुना इसने ? क्यों भाग गया यह ? नहीं देखेगा वह इस समय इसकी ओर।

कनूँ आ रहा है ; कितनी उमङ्गसे पुकार रहा है, किंतु इस प्रकार तो यह वनमें भटकना छोड़ेगा नहीं। कुछ भी हो, मन कुछ कहे, आज दाऊ छोटे भाईकी ओर इस समय नहीं देखेगा।

'दादा ! दादा ! यह क्या ?' दादा दूसरी ओर मुख करके क्यों बैठा है ? वह बोलता तो सदा कम है, पर देखता क्यों नहीं ? श्यामकी गति मन्द पड़ गयी, उमङ्ग चली गयी। मुख कुछ उतर गया।

'दादा !' दादा तो सम्मुख जानेपर भी नेत्र ऊपर नहीं उठाता। वह तो रूठ गया जान पड़ता है। उसका मुख तो गम्भीर हो गया है। उसके नेत्र भरे-भरेसे दीखते हैं। हाथ ढीले पड़ गये। काले-काले जामुन हरी घासपर बिखर गये।

'तू मेरी बात नहीं मानता, दूर-दूर भटकता है ; मैं नहीं बोलूँगा तुझसे।' दाऊने मुख दूसरी ओर कर लिया।

'दादा रूठ गया ? वह नहीं बोलेगा ? अब क्या हो ?' कन्हाईके लिये तो इसने सब सखा होनेपर भी जैसे कोई नहीं रहा। जैसे वह इस पूरे वनमें एकाकी हो गया।

'दादा ! मैं अब कहीं नहीं जाऊँगा। कभी तेरी बात नही टालूँगा।' स्वरमें अपार अनुनय है और भर आये हैं कमल-लोचन ; किंतु दादा तो देखता ही नहीं।

'दादा !' श्यामसुन्दर दोनों हाथोंसे मुख ढककर गिर पड़ा है फट्से बड़े भाईकी गोदमें।

'कनूं ! कनूं !' ओह, यह कनूं तो फफक-फफककर रोने लगा है। यह तो हिचकियाँ ले रहा है। व्यग्र, व्यस्त हो उठा है दाऊ। उसका कनूं रो रहा है, हिचक रहा है। क्या करे वह ? अब क्या हो ?

दयामय

'दादा, इसका पैर दुखता होगा। क्या लगाना है इसके पैरमें ?' श्यामसुन्दर एक मृगशावकके पास बैठा है—उसे गोदमें लेकर उसके एक पैरको सहलाते हुए।

नवजात मृगशावक—बेचारा कूदते फांदते एक लतामें उलझकर गिर गया। मोहनने देखा और दौड़ पड़ा। कहीं गिरा पटुका और कहीं छूटी मुरलिका। मयूरपिच्छ खिसककर बहुत तिरछा हो गया है इसका।

'तू चुपचाप बैठ ? मैं तेरा पैर मल देता हूँ।' हिरनका बच्चा झटपट खड़ा हो गया, किंतु उसकी एक अगली टाँग ठीक नहीं पड़ रही है। वह लँगड़ा रहा है। कुछ चोट लगी है उसे। मोहनने दौड़कर उसे पकड़ लिया और बैठाने लगा। मृगशिशु भागता तो भला क्या, वह अपनी चोट भूलकर श्यामसुन्दरको सूंघने लगा है।

'तुम सब इसको तङ्ग मत करो।' और भी गोपकुमार दौड़ आये हैं। कन्हाई नहीं चाहता कि उसके मृगशावकको दूसरा कोई छुए। बालक घेरकर खड़े हो गये हैं उसे और बड़ी सहानुभूतिसे देख रहे हैं उस बच्चेकी ओर। एक-दो

उसके लिये दूर्वाङ्कुर भी चुनने लगे हैं, किंतु अभी तृण चरना सीखा कहाँ है उसने।

'अब इसका पैर नहीं दुखता। कुछ लगाना नहीं पड़ेगा इसे। क्यों रे, दुखता है तेरा पैर?' नीलाम्बर फहराते दाऊ आया और अपने छोटे भाईके सामने बैठ गया। प्रेमसे पुचकारा उसने मृगशावकको और उसके मस्तकपर हाथ फेरा।

हिरनके बच्चेने गर्दन लम्बी कर दी है। दाऊकी गोद-में मुख रखकर वह सो जानेकी तैयारी कर रहा है। उसके नेत्र झपकने लगे हैं। कन्हाईने उसके पैरको सहलाया—सहला रहा है; अब कहीं दर्द रह सकता है पैरमें। इस भोले बच्चेको इसकी चिन्ता नहीं कि गोपालकोंकी एक पूरी भीड़ उसे घेरे है। श्यामसुन्दरकी गोदमें सटा है उसका पीठका भाग और दाऊकी गोदमें है सिर उसका। इतना उत्तम स्थान, इतना श्रेष्ठ उपधान—तकिया कहाँ मिल सकता है। सोनेके लिए भूमिपर अपने चारों पैर फैलाकर कड़े करके अँगड़ाई ली उसने और शिथिल-देह हो सोने लगा।

श्याम पुचकारता जा रहा है, हाथ फेरता जा रहा है उसके देहपर। दाऊ उसके मस्तकपर अपने कमल-कर रखे बैठा है। पास खड़ी मृगी अपने बड़े नेत्रोंसे निर्निमेष देख रही है इन दयामय बन्धुओंको। अपने बच्चेके सौभाग्यपर वह क्या सोचती है—आप स्वयं सोच लें।

अभिन्न

'दादा ! कोई सखा पुकार रहा है ।'

'कू !' यह कन्हाई कोकिलके स्वरमें कूककर उत्तर दे रहा है पुकारका । जब छोटा भाई पास है तो बड़ा भाई क्यों बोले ।

'दादा ! दादा !' गोपकुमारको सन्तोष नहीं । वह अभी गिरिराजके नीचे है । लताओंकी ओटसे देख नहीं पाता कि ऊपर दाऊ है या नहीं है । कहीं श्याम उसे छकाता तो नहीं ।

'क्या है ? कहता क्यों नहीं तू ?' कृष्णचन्द्रने अब इस बार स्पष्ट पूछा । भला, ऐसा क्या काम हो सकता है, जिसके लिए श्यामके रहते दाऊको कुछ करना पड़े ।

'तू क्यों बीचमें बोलता है ? वह तो दाऊको पुकार रहा है ।' यह श्रीदाम भी श्यामसुन्दरसे झगड़नेके लिए उधार ही खाये रहता है ।

'मेरे ही दादाको तो पुकारता है ।' कन्हाईने इस प्रकार देखा, जैसे उसकी दृष्टि कह रही है—मेरा दादा मुझसे पृथक् है क्या ? दादा बोले या मैं बोलूँ, दो बात कहाँ हैं ।

'दादा ! देख मैं कितना सुन्दर फल लाया हूँ । कनूँ, तू ले अपना फल ।' यह तो मण्डलीभद्र आम ले आया है । दाऊके लिए पृथक् और श्यामके लिए पृथक् फल लाया है

यह। दाऊके हाथमें लाकर देगा यह; पर कन्हाईको थोड़ी दूरसे झेल लेनेके लिए फल उछाल दिया इसने।

'दादा! यह कनूँका है। तेरे लिए तो यह लाया हूँ मैं।' श्यामसुन्दरके बदले दाऊने फल झेल लिया दोनों हाथोंमें, किंतु मण्डलीभद्र तो दाऊके लिए दूसरा फल ले आया है।

'ला!' अब श्याम उद्यत हुआ है दूसरा फल झेलनेको।

'यह दादाका है।'

'तू फेंक तो सही।' दाऊने अपनी अनुमति प्रकट कर दी।

'तू ले लेना, दादा।' किंतु जब श्यामसुन्दर झेलना चाहता है, तब दाऊ बीचमें भला क्यों पड़ने लगा।

गिरिराज गोवर्धनकी सबसे ऊँची चोटीपर खड़े हैं ये पाँच-सात गोपकुमार। गायें नीचे बिखरकर चर रही हैं। शेष गोपकुमार पर्वतपर इधर-उधर पुष्प-फल आदि चुनने-में लगे हैं। इन पाँच-सात गोपकुमारोंके आगे एक दूसरेके कन्धेपर हाथ धरे, वन्यपुष्पोंसे सजे, गैरिक, रामरज, खड़ियासे अङ्गोंको चित्रित किये ये नील-पीत-बसनधारी अपने एक-एक हाथोंमें आमका एक-एक पका फल लिए एक दूसरेकी ओर देख रहे हैं।

किसका फल किसके हाथमें है? किस हाथका किस मुखमें जायगा? आप सोचते हों तो सोचें, पर फल लाने-

वाले मण्डलीभद्रको तो कुछ सोचना नहीं। ये दो हैं कहाँ कि इनका भाग कोई पृथक्-पृथक् करेगा।

वर्षगाँठ

'लाल ! तू बाबाको और माँको प्रणाम कर आ !' आज कृष्णचन्द्रकी वर्षगांठ है। ब्राह्ममुहूर्त्तमें ही महर्षि शाण्डिल्यने ब्राह्मणोंके साथ पूजन कराया है। पूरे व्रजमें आज महामहोत्सव है। आनन्दसे जैसे सब लोग उन्मत्त हो रहे हैं। पूजनके अनन्तर मैयाने अपने कुमारको समस्त गुरुजनोंका नाम ले-लेकर प्रणाम करनेको कहा है। अब सबके पीछे बाबा और माता रोहिणीको भी तो प्रणाम करना चाहिये इसे।

श्यामसुन्दरकी आजकी शोभा देखने ही योग्य है। मैयाने भरपूर सजाया है आज नीलसुन्दरको। चरणोंमें नूपुर, कटिमें पीताम्बरकी कछनीके ऊपर रत्नमेखला, कण्ठमें हारोंकी लड़ियाँ और घुटनोंतक लटकती बनमाला, कन्धेपर पटुका, उँगलियोंमें अँगूठियाँ, कलाइयोंमें कङ्कण, भुजाओंमें रत्नाङ्गद, कर्णोंमें झिलमिल करते रत्नकुण्डल, मस्तकपर रत्नजटित कुलहीके ऊपर फहराता मयूरपिच्छ, भालपर गोरोचन, खौरके मध्य महर्षि शाण्डिल्यद्वारा किया कुंकुम तिलक और उसपर चिपके अक्षतके अरुणाभ पाँच दाने, अञ्जनरञ्जित दीर्घ दृग—कन्हाई रुनझुन करता एक ओरसे दूसरी ओर दौड़ रहा है। मैया जिसे-जिसे बतलाती है, उसे-उसे दौड़कर पास जाकर प्रणाम करता है और फिर मैयाके पास दौड़ आता है।

बड़ी भीड़ है नन्दभवनमें। गोप, गोपियाँ और गोप-कुमार सब अपने-अपने उपहार लिए चले आ रहे हैं।

'मैया! दादाको प्रणाम नहीं करना है क्या?' सबको जब प्रणाम किया गया, तब दादाको ही क्यों नहीं? श्यामसुन्दरने स्वयं स्मरण किया अग्रजको।

'हाँ लाल! अब तू अपने दादाको भी प्रणाम कर आ!' मैयाने उल्लासपूर्वक आदेश दिया।

'दादा! दादा!' किन्तु आज दादा है कहाँ? वह इतनी देरसे दीखता क्यों नहीं है?

'पुकारते नहीं बेटा! प्रणाम पास जाकर करते हैं!' मैयाने स्नेहसे समझाया।

'कनूँ!' वह निकला एक कक्षमेंसे दाऊ। छोटे भाई-की पुकार सुन ली है इसने। वह अपने छोटे भाईको आज उपहार देगा। अपने उपहार ही तो सजा रहा था वह। आज इस नीलाम्बरधारीकी शोभा भी अतुलनीय है। स्वयं मैयाने ही इसे भी सजाया है। अङ्ग-अङ्गमें रत्ना-भरण जगमग कर रहे हैं।

'दादा!' छम-छम करता श्याम आया और घुटनोंके बल बैठकर बड़े भाईके चरणोंपर मस्तक धर दिया इसने।

'गोप, गोपियाँ, गोपकुमार शान्त स्थिर देख रहे हैं। आँगनमें यह अग्रजके पदोंमें प्रणत श्यामसुन्दर! दाऊ झुककर दोनों हाथोंसे पकड़कर छोटे भाईको हृदयसे

लगानेके लिए उठा रहा है, पर आज यह श्यामसुन्दर उठता नहीं। यह तो पड़ा ही रहना चाहता है प्रणाम करते।

दाऊ और कनूँ

एक ही जीवनके घनतत्वने दो देह धर लिए हैं। उसका एक देह है स्वर्णगौर और दूसरा शरीर है इन्दीवर सुन्दर। दोनोंके शरीरोंके रंग ही दो हैं। एक ही प्राण हैं दोनोंमें। एकके बिना दूसरा रह नहीं सकता।

कौन कहता है कि दोनोंमें भेद नहीं है। भेद बहुत है, बहुत है। फिर भी दोनों अभिन्न हैं, एक हैं।

यह दाऊ है—जैसे सारी गम्भीरता इसमें बचपनमें ही पैर तोड़कर आ बैठी है। किसमें साहस है जो इसकी तनिक भी उपेक्षा कर दे या इसकी हँसी उड़ा सके। बड़े-बूढ़े मुनि भी इसकी ओर सिर झुकाकर ही बैठते हैं।

और यह कनूँ है—सारी चञ्चलताका यही केन्द्र है। विश्वमें सारा-का-सारा नटखटपन इसीकी चञ्चल अँगुलियोंके संकेतसे आता है। यह जानता ही नहीं कि शान्त कैसे बैठा जाता है। बड़ी-बड़ी उजली दाढ़ीवालोंको भी यह अँगूठा दिखा आता है और इसे चिढ़ानेका जिसका मन न हो, वह तो कोई पुराना खड्डूस ही हो सकता है।

दाऊ और कनूँ—इनमें परस्पर ही क्या कम भेद है। 'दादा! दादा! दादा!' कनूँ प्रायः पुकारता ही रहता

है। प्राय: इसके पुकारनेका कोई तात्पर्य नहीं होता। यह तो पुकारनेके लिए ही पुकारता है। उसका दादा उसके पास सटकर बैठा हो तो भी मजेमें जोरसे पुकारता है और दाऊ है कि केवल हँस देता है। श्यामके पुकारनेपर कदाचित् ही वह बोलता है। वह कन्हाईकी ओर देखता है और मुस्कराता है। मुस्कराता है और देखता है।

'कनूँ !' जब कन्हाई देरतक दीख न पड़े, जब संध्याको बनसे गायें लेकर लौटना हो, जब कोई आशङ्काकी बात हो, तबकी बात छोड़ दीजिये। केवल ऐसे ही अवसरोंपर दाऊ अपने छोटे भाईको सचमुच पुकारता है। नहीं तो वह केवल सम्बोधन करता है। कन्हाई कितनी दूर बैठा है या खेलनेमें लगा है, यह कुछ नहीं। दाऊ तो धीरेसे कहेगा—'कनूँ !' जैसे उसका कनूँ उससे सटकर ही बैठा है।

श्याम खेलनेमें लगा हो तो माता रोहिणी पुकारते-पुकारते थक जाती है, यह सुनता ही नहीं। मैया यशोदा-की पुकार इसके कानोंमें ही नहीं आती। उस समय यह किसीका बुलाना नहीं सुनता, किंतु अपने बड़े भाईका सम्बोधन सुननेके लिए कन्हाईके कान बड़े तेज हैं। दाऊ दूर बैठा है—पर्याप्त दूर आँगनमें। कनूँ बाहर गलीमें खेल रहा है। 'कनूँ !' कब धीरेसे दाऊने यों ही कह लिया, पास बैठी उसे पुचकारती मैया भी नहीं सुन पाती। वह मुँहमें बोलनेका ही अभ्यासी है।

'कनूँ !' किंतु अपने दादाका यह सम्बोधन खेलनेमें लगा कन्हाई अवश्य सुन लेगा। खिलौने धरे रहेंगे, घरौंदा

अधूरा पड़ा रहेगा, गुंथनेको हाथमें ली हुई मालाके पुष्प मार्गमें बिखर जायेंगे, श्याम घरमें हो या वनमें, छोटेसे बड़े होनेतक इसमें कभी अंतर नहीं पड़ा कि वह दाऊके पुकारते ही दौड़ेगा। हाथमें धूल, खिलौने, पुष्प—जो भी हो, लिये आयेगा—'दादा !' वह आकर बड़े भाईकी ओर ऊपर मुख उठाकर उससे सटकर बैठ जायगा। किसीको कुछ कहना नहीं रहता। दाऊ मुस्करायेगा। कनूँ खिलखिलाकर हँसेगा और दो क्षणमें उठकर अपने दादाके सामने या चारों ओर घूम-घूमकर कूदेगा, फुदकेगा नाचेगा।

कनूँ और दाऊ—दोनों अपनेमें एक-जैसे हैं। कोई कनूँके आगे दाऊको कुछ कह तो दे ; वह लाठी ही नहीं, पूरा ऊखल उठाकर सिरपर पटक देनेको खड़ा हो जायगा। कहनेवालेकी नाक, कान, चुटिया जो हाथमें आ जाय—बस उसकी कुशल नहीं समझनी चाहिये।

दाऊके भालपर तनिक-सा स्वेद झलका और श्याम दौड़ा कमलका पत्ता तोड़ने। संसारमें जितनी सुन्दर, स्वादिष्ट और अच्छी वस्तुएँ हैं, सबपर यह मानता है कि इसके दादाका स्वत्व है। सब इसके दादाके लिए सुरक्षित रहनी चाहिए। दाऊ—जिसके सिरको यमराज अपने घर ले जाना चाहें, वह दाऊके आगे श्यामको कुछ कहनेका साहस करे। कन्हाई का मुंह तनिक झुका और दाऊ घूँसा बाँधता है—'किसने तुझे खिझाया है ?' और दाऊका घूँसा—वह जिसपर पड़ेगा, वह क्या फिर पानी माँगेगा ?

'श्याम थक गया है।' 'कनूँ भूखा है।' 'मोहन इस फूलको लेकर प्रसन्न होगा।' 'कन्हाई यहाँ नाचेगा।' दाऊको अपने छोटे भाईको छोड़कर कुछ सूझता ही नहीं। कोई उससे पूछे कि संसार भरमें क्या-क्या है, तो वह सम्भवत: बड़े मजेसे कहेगा 'कन्हाई !' और चुप हो जायगा। बस, जैसे संसारमें उसका कन्हाई-ही-कन्हाई है।

दाऊ और कनूँ—कनूँ और दाऊ। क्या हुआ कि दोनोंके शरीर गौर और श्याम हैं। क्या हुआ कि एक गम्भीर और एक चपल है। हैं दोनों एक ही, सर्वथा एक। गौर श्याम—श्याम गौर।

विवाद

श्याम आज सखाओंके सङ्ग कुञ्जमें बैठा है। पाँच-सात कदम्बके वृक्षोंका झुरमुट है और वह पुष्पोंसे लदा है। वृक्षोंपर मालती लताने एक ओर हरी चादर दो ओर फैला दी है। फूली मालतीकी शाखाएँ श्वेत हो रही हैं। पूरा कुञ्ज मधुर मादक सुगन्धि और भ्रमरोंकी गुञ्जारसे भरा है।

छोटे-छोटे गोपबालकोंका समूह बैठा है इस कुञ्जमें। कठिनाईसे ही कोई छ:—सात वर्षके होंगे। अधिक तो तीन-चार वर्षके ही हैं। दो वर्षके ही कुछ हैं। यह दिगम्बर और कछनीधारी बालकोंकी मण्डली है।

छड़ियाँ, पटुके कुंजमें और बाहर भी इधर-उधर अस्त-व्यस्त पड़े हैं। किसीको इनकी चिन्ता नहीं। चिन्ता

और सँभाल करनेकी आयु ही अभी इनकी नहीं है। यह तो इन सबका हठ है कि बछड़े चरानेकी छूट इनको अपने घरोंसे मिल गयी है। नन्दगाँवके समीप ही वनमें इन्हें बछड़े चराने आनेकी चेतावनी घरसे चलते समय माता-पिताने बार-बार दी है।

इनके बछड़े-बछड़ियाँ भी इन जैसे ही अल्हड़ हैं। यह बात दूसरी है कि नन्दनन्दन वनमें हैं तो उनमें-से कोई घर हाँकनेपर भी नहीं जायगा, ले जानेपर नहीं रुकेगा; किंतु इन महीने भरसे लेकर तीन-चार महीनेके बछड़ोंको चरना कहाँ है। ये सब वनमें कूदेंगे, फुदकेंगे और थक जायँगे तो बालकोंके आस-पास ही कहीं वृक्षके नीचे बैठ जायँगे।

इस समय कुञ्जमें कोई बछड़ा-बछड़ी नहीं है। बालक जैसे खेल-कूदकर आ बैठे हैं, बछड़े भी प्रायः बैठ गये हैं जहाँ-तहाँ। वे कहीं दो-तीन सटकर बैठे हैं और कहीं एकाकी भी। दो-चार इधर-उधर खड़े भी हैं।

बालकोंके शरीरमें धूलि लगी है। किसीके अङ्गोंपर कीचड़ या गोबरके चिह्न भी हैं। सबके केशोंमें, कण्ठमें, भुजाओंमें, कानोंपर पल्लव, पुष्प, गुच्छे, पक्षियोंके परोंके अटपटे शृङ्गार हैं। कुण्डल, मालाएँ, बाजूबन्द, कङ्कण इस वन्य-शृङ्गारसे दब गये हैं।

कन्हाई अपना पटुका कहीं गिरा आया है। एक कानमें कुण्डलके साथ कदम्ब-पुष्प लटक रहा है, दूसरे कानपर कनैरका पीला फूल रखा है। बिखरी अलकें सखाओंके

द्वारा पुष्पोंसे भर दी गयी हैं। मयूरपिच्छ तिरछा हो रहा है। वंशी कछनीमें खोंस ली गयी है।

अचानक एक दूधके समान उजला बछड़ा कूदता आया। उसने श्यामके इधर-उधर बालकोंके पास फुदकी लगायी और फिर अपने सिरसे कन्हाईकी पीठको ठेलने लगा।

'गौरव ! क्या है ?' मोहनने मुड़कर बछड़ेको पुचकारा। उसके मुख, गर्दनके निचले भागको सहलानेका प्रयत्न किया।

'हुं' एक छोटी-सी हुंकारी बछड़ेने भरी और कूदकर कृष्णके सहलानेके प्रयत्नको उसने असफल कर दिया। वह अब श्यामके पेटमें सिर लगाकर ठेलनेकी चेष्टा करने लगा है।

'गौरव तुझसे झगड़ने आया है।' कई बालक एक साथ बोल पड़े।

'तू अप्रसन्न है ? झगड़ा करेगा तू ?' कन्हाई उठकर खड़ा हो गया। उसने बछड़ेके गलेमें भुजाएँ डाल दीं।

'हुं' बछड़ेने फिर छोटी हुंकार भरी। कूदकर पृथक हो गया और फिर कृष्णचन्द्रकी जाँघपर सिरसे ठेलने लगा।

बछड़ेको प्यास लगी है, यह बात उसका पीताम्बरधारी चरवाहा समझता क्यों नहीं ? आस-पास जल दीखता नहीं है और यह मयूरमुकुटी कुन्जमें बैठा अपने

सखाओंके साथ गप्प लड़ाता बैठा है तो बछड़ा झगड़ेगा नहीं। बछड़ेको भूख लगे, प्यास लगे या कुछ और हो, उसकी सब आवश्यकता-पूर्तिका दायित्व जिसपर है, वह उपेक्षा करे तो दोष उसीका तो?

'तू प्यासा है?' मोहन अपने बछड़ोंकी भाषा समझता है। 'रूठ मत! चल, तुम सबको जल पिलाने चलते हैं।'

अब सब बालक खड़े हो गये। अब वे अपने पटुके, छड़ियाँ ढूँढ़ने उठाने लगे हैं और बछड़ा श्यामको सूँघकर कुञ्जसे बाहर फुदकता जा रहा है।

विशाल

'दादा!' कन्हाई अपने बड़े सखाओंको 'दादा' कम ही कहता है। बहुत प्यारमें हो या कोई काम लेना हो तभी दादा कहता है। नहीं तो दादा केवल दाऊ हैं। दूसरे सब एक दूसरेको नाम लेकर ही पुकारते हैं।

'दादा!' अब यह कृष्णचन्द्र उछलता-कूदता आकर विशालके कन्धेपर बैठ गया है और उसको दादा कह रहा है तो विशाल समझ गया है कि कृष्णको कुछ काम आ पड़ा है।

विशाल सचमुच विशाल है। प्रलम्बकाय और लम्बे शरीरके समान ही हृष्ट-पुष्ट। वह अभी दस वर्षका है, पर दूरसे कोई तरुण गोप जैसा दीखता है। क्या हुआ कि आयुमें दाऊसे वह महीने भर छोटा है। देहकी दृष्टिसे दाऊसे भी लम्बा और पुष्ट दीखता है वह।

'दादा ! मैं फल लूँगा।' श्यामने बड़े प्यारसे विशालकी अलकोंमें अपनी अंगुलियाँ नचाते हुए कहा—'वह पका लाल आम !'

शैशवमें भी विशाल इस कृष्णको अपनी पीठपर चढ़ाकर नन्द भवनका पूरा प्रांगण घुमा लाता था। कभी-कभी तो वह दो-तीनको एक साथ पीठपर बैठा लेता था।

'तू श्यामसुन्दरका घोड़ा है ?' गोपियाँ हँसकर पूछतीं तो विशाल चिढ़नेके स्थानपर हँस पड़ता था ; किन्तु कृष्ण प्रतिवाद किये बिना नहीं रहता था—'यह मेरा दादा है।'

माखन-चोरीका क्रम चला गोकुलमें तो वह भला विशालके बिना कैसे पूरा होता। ऊखल पर पाटा, पाटे पर अर्जुन या वरूथप और उसकी पीठपर खड़ा होता विशाल। विशालके कन्धेपर चढ़नेपर ऐसा कौन-सा छीका था जो कन्हाईके हाथ न आ जाय।

'अच्छा !' विशाल हँस गया। यह कनूँ ऐसे ही उछलता-कूदता उसके कन्धेपर आ बैठता है। इस नन्दलालका भी अपना ढङ्ग है। किसी सखासे बार-बार लिपट जायगा, किसीको गोदमें बैठा लेगा, किसीकी गोदमें सिर धर दिया करेगा ; किन्तु विशालके तो कन्धेपर ही जैसे इसका आसन है।

'तू उठ ! मैं फल तोड़ूँगा।' श्याम कन्धेपर चढ़ा है और विशालको उसे लिए-ही-लिए उठना है।

'तू उतर! मैं तोड़े देता हूँ।' विशालको भी इस नटखटसे थोड़ा उलझना रुचता है।

'मैं तोड़ूँगा! तू उठ!' कन्हाई उसका सिर झकझोरने लगा है और अपने चरण नचाने लगा है। अब उठना तो पड़ेगा ही इसे।

फल—फल कन्हाईको खाना है, यह आपसे किसने कहा? फल श्यामको रुचा है तो वह उसे तोड़ेगा। किसी सखाको—सम्भव है विशालके मुखको ही उस फलका स्वाद लेना पड़े।

अर्जुन

'नहीं, तू गायें नहीं चरा सकता।' अर्जुन गोपकुमारोंमें सबसे सीधा है। आयुमें ऋषभ, विशाल, वरूथप और अर्जुन दाऊसे कुछ ही दिन छोटे हैं। सीधा ऋषभ भी बहुत है; किंतु उसके सीधेपन में भी एक गाम्भीर्य है लेकिन अर्जुन तो सीधा है—भोला है।

'तू वंशी बजा, नाच, गा और बहुत मन हो तो सुबल या भद्रके साथ मल्लयुद्ध कर ले।' अर्जुनने दो टूक सुना दिया—'तू गायें नहीं चरा सकता।'

'मैं गाय चराऊँगा।' वह गोपाल ही यह चुनौती कैसे टाल दे। वह क्या गोपकुमार नहीं है? वह श्रीव्रजराजका कुमार है। गोविन्द गायें नहीं चरा सकेगा? कन्हाई हठ पकड़ गया है कि आज सबकी गायें वह अकेला चरायेगा।

गायें अपने आप चरती हैं। उनका चरना स्वभाव है। उन्हें घेरने, ठीक दिशामें हाँकनेका काम ऋषभ, विशाल आदि बड़े सखा भी कभी-कभी ही करते हैं। यह काम प्रायः अर्जुन करता है। यह इतना सीधा है कि सब इसीसे अपनी गायें घेरनेको कहते हैं। यह तो जो झगड़ पड़ा हो, उसकी गायें भी घेरता है।

'तू चरा नहीं सकता, व्यर्थ हठ मत कर।' अर्जुनको सीधी बात कहनी आती है। इसने कन्हाईको लगभग झिड़क दिया है।

'बात क्या है?' अर्जुनका ऊँचा, झल्लाया स्वर सुनकर भद्र पास दौड़ आया।

'मैं गायें चराऊँगा।' कन्हाई तना खड़ा है। लाल हो आया है इसका मुख।

'अच्छा चरा।' भद्र हँस पड़ा—'अर्जुन! तनिक चराकर देख लेने दो!'

कन्हाईने लकुट उठाया; किंतु श्यामके लकुटसे तो एक शशक तक नहीं चौंकता, गायें क्या चौंकेंगी। सब मोहनके चारों ओर घिर आई हैं। लकुट उठाता है तो इसका लकुट ही सूँघने लगती हैं।

कृष्ण पास हो तो गायें चरनेमें लगेंगी या श्यामको देखेंगी—सूँघेंगी? इन्द्रियाँ इसीलिए तो संसारमें भटकती हैं। चरती—विचरती हैं कि गोविन्द इनके सामने नहीं है। गोपाल स्वयं लकुट लिए पालन करने खड़ा हो तो चरना सूझेगा?

कन्हाई ठेलता है, हाँकता है; किंतु गायें हैं कि टससे मस नहीं होती हैं। वे नन्दनन्दनको घेरे हैं। सूँघती हैं, हुंकार करती हैं और थनोंसे दूधकी धारा गिराती हैं।

'कनूँ!' भद्रने देख लिया कि श्याम खिन्न होने लगा है। वह हताश हो चुका है। पास आकर कन्धेपर हाथ रखकर स्नेहसे बोला—'तू इनको बुलाया कर। तू दूर गयेको बुला सकता है जो हममें-से कोई नहीं कर सकता। अपनेसे दूर हटाना तेरा काम तो नहीं है। इन्हें अर्जुनको ले जाने दे। सायङ्काल तू ही तो इन्हें बुलावेगा।'

कन्हाई हँस पड़ा है। बात समझमें आ गयी लगती है।

ऋषभ

'श्यामसुन्दर! तुम अब थक गये हो!' समीप आकर ऋषभने अपना सशक्त दाहिना हाथ कृष्णके बाम स्कन्ध-पर रख दिया।

इसका सदाका यही ढङ्ग है। गोप-किशोरोंमें सबसे आयुमें यह ऋषभ बड़ा है। सबसे लम्बा और पुष्टकाय है। सबसे अधिक गम्भीर है। ऊधम करना, चिल्लाना इसके स्वभावमें नहीं है। कोई सखा हँसीमें भी कुछ कहे तो इसे वह सच ही लगता है, इतना सीधा है। झगड़ना जैसे जानता ही न हो।

'बूढ़े दादा।' मोहन ही नहीं, दूसरे सखा भी इसे यही कहकर चिढ़ाते हैं; किन्तु ऋषभ चिढ़ना कहाँ जानता

है। यह तो चिढ़ानेवालेके कहनेपर भी उसकी गायें लौटा लाने चल देता है।

रहता है सदा दाऊके साथ लगा लगा ; किंतु इसकी दृष्टि कन्हाईको देखती रहती है। कृष्ण कब थक गया, कब प्यास लगी श्यामको, कब धूप उसे असह्य हो रही है, यह सब कृष्णसे अधिक इसे पता रहता है और जब यह कोई अनुरोध करता है—कहता सदा अनुरोधके ही स्वरमें अपनी बात है ; किंतु इसका अनुरोध तो भद्रतक आदेश मान लेता है।

ऋषभने सघन नीपतरुके नीचे किसलयकी शय्या बनाकर उसपर पाटल एवं पद्मके दलोंकी स्तर रचना की है। इतना श्रम किया है लग कर इसने तो उस शय्याको सार्थक करनेके लिए श्याम क्या श्रमित भी नहीं हुआ होगा ?

'कहाँ—मैं तो अभी कहीं नहीं थका।' नटखट नन्द-नन्दन सहसा कूदना-उछलना छोड़कर खड़ा हो गया है और अपने बाहु, वक्ष, चरण एक-एकको इस ढङ्गसे देखने लगा है जैसे इनमें कहीं थकावट हो तो उसे ढूँढ़ लेना चाहता है।

'बूढ़ा दादा कहता है तो तू थक गया है !' अब तो थक जाना पड़ेगा ; क्योंकि तोकने हाथ पकड़ लिया है—'चल, तू नीपके नीचे सुबलकी गोदमें सिर रखकर लेट। मैं तुझे वायु करनेके लिए खूब बड़ा-सा पद्म-पत्र तोड़ लाता हूँ।

'भद्र !' कन्हाईने सोचा था कि भद्र उसे अभी थोड़ा और खेलनेको कह देगा ; किंतु भद्र ऐसे अवसरोंपर कहाँ साथ देता है । वैसे वह ठीक कहता है—'तोक दौड़ गया है पद्म-पत्र लेने । अब तू लेटेगा नहीं तो वह रूठ जायगा ।'

भद्रको भी लगता है कि श्याम सचमुच कुछ थक गया है तभी थका हो तो क्या—नीपतरुके नीचे यह पल्लव-तल्पपर लेटेगा और मौलिश्रीके झरते सुमन इसकी अलकोंमें उलझते जायँगे—बड़ी सुन्दर शोभा होगी इसकी ।

जब सब एक साथ कहते हैं तो श्यामको मानना ही है कि वह थक गया है ।

देवप्रस्थ

कन्हाईसे कोई पूछ ले—'तू किसका है ?'

'तेरा !' सुनिश्चित उत्तर है ।

एक साथ कई पूछें यही प्रश्न तो कृष्ण सबको पृथक-पृथक कहेगा—'तेरा ! तेरा !'

दाऊ और भद्रका उत्तर इससे मिलता ही है ; किंतु किञ्चित् भिन्न । दोनों पृथक-पृथक एक-एकसे कुछ नहीं कहेंगे । दोनोंका उत्तर है—'तुम सबका !'

सबसे भिन्न उत्तर है इस देवप्रस्थका । इससे प्रायः गोपियाँ, गोप और सखा भी पूछते हैं । यह तोतली बोलीमें

बोलता था, तबसे इससे पूछा जाता है--इसलिए पूछा जाता है कि इसका उत्तर देनेका ढङ्ग बहुत प्यारा है।

'तू किसका है ?'

देवप्रस्थ झट हँस पड़ेगा, ऐसा हास्य जैसे यूथिकाके अञ्जलि भर कुसुम बिखर गये हों और कहेगा—'देवताका ?'

'कौन है तेरा देवता ?'

इसका उत्तर देनेके लिए इधर-उधर देखेगा। दाऊ दादा, कन्हाई, श्रीव्रजराज, मैया, माता रोहिणीमें-से कोई दीख जाय तो दौड़कर लिपट जायगा उनसे।

इनमें-से कोई सामने न मिले तो कोई वृषभ कोई गाय, कोई बछड़ा। ये भी न हों तो सूर्यकी ओर उँगली उठावेगा और सूर्य भी न हों तो पृथ्वीपर बैठकर दोनों हथेलियोंसे भूमिको थपथपा देगा। किसने बतलाया इसे कि व्रजधरा, सूर्य आदि सब देवता हैं ?

'देव!' प्रायः सब इसे इस छोटे नामसे ही पुकारते हैं। श्याम पूछता है—'तू देवता है ?'

'मैं देवताका हूँ।' बड़े जमे ढङ्गसे कहेगा और फिर कन्हाईके गलेसे लिपट जायगा।

देवप्रस्थ, तेजस्वी अंशु और तोक ये सब छोटे हैं श्यामसे। इनमें सबसे छोटा तोक। महीने पन्द्रह दिन ही छोटे बड़े हैं ये परस्पर।

देवप्रस्थका सौन्दर्य—जैसे पाटलदलसे इसका शरीर बना है। देवलोकसे कोई बहुत सुन्दर सुकुमार देवता बालक बनकर कन्हाईके साथ खेलने आ गया है, यही लगता है इसे देखकर और मोहनको भी इसे सजानेमें आनन्द आता है।

'देव !' कृष्णके पुकारते ही यह पास दौड़ आवेगा।

'आ बैठ ! तू देव है न ?' कन्हाई पूछता है।

'हाँ !' बड़े भोलेपनसे यह कहता है।

'बैठ ! मैं तेरी पूजा करूँगा।' ढेरसे पल्लव, पुष्प, पुष्पगुच्छ, गुंजा, मयूरपिच्छ आदि लेकर श्याम बैठ गया है। अब यह अपने देवको सजाने लगा है। यह दूसरी बात है कि देव इसको भी साथ-साथ सजाता जाता है।

तेजस्वी

ताम्र गौर, सुदीर्घारुण लोचन, किञ्चित् कृशकाय, अरुणपीत वस्त्र, यह नन्हा गोपकुमार तेजस्वी—इसका नाम ही तेजस्वी नहीं है, सचमुच यह अद्भुत तेजस्वी है।

'सब उठो ! दादा ! तू उठ पहिले !' यह है तो आयुमें प्रायः सबसे छोटा, केवल तोक और अंशु इससे छोटे हैं, शरीरमें तोकसे भी छोटा लगता है ; किंतु तेजस्वी है न ! सबको—दाऊ दादा तकको यह चाहे जब आदेश दे देता है—'अब हम सब यमुना-तटपर चलेंगे। अपनी गायें प्यासी हैं।'

गायें इसकी हैं या और किसीकी—गोप-कुमारोंमें यह भेदबुद्धि वैसे भी बहुत कम है। यह तेजस्वी तो सम्पूर्ण व्रजको अपना ही मानता है।

'यह अपने व्रजराजकुमारका सेनापति है।' गोपियाँ हँसती हैं तेजस्वीके चापल्यपर ; किंतु तेजस्वी है कि वह बूढ़े गोपों तकसे कुछ कहता है तो ऐसे स्वरमें कहता है मानो वही व्रजाधिप है और उसके आदेशका अविलम्ब पालन होना चाहिए।

'ये राक्षस कहाँसे आते हैं?' उस दिन कन्हाईने व्योमासुरको मारा तो अचानक तेजस्वीके नेत्र लाल हो उठे। 'बक, वत्स···जाने कितने राक्षस आये—आते गये व्रजमें! ये दुष्ट आते कहाँसे हैं?'

'मथुरासे।' दाऊ दादाने सहज भावसे कह दिया। दाऊ इसको बहुत स्नेह करते हैं। जैसे कन्हाईको तोक अतिशय प्रिय है, दाऊका अपार वात्सल्य है तेजस्वीपर।

'मथुरामें सब राक्षस ही हैं?' तेजस्वी क्रुद्ध पूछ रहा है।

'नहीं! वहाँ बहुत अच्छे लोग हैं।' दाऊने स्नेहपूर्वक हाथ पकड़ा—'लेकिन वहाँका राजा कंस दुष्ट है। उसने बहुतसे राक्षस पाल रखे हैं। वही इन्हें भेजा करता है यहाँ।'

'तू उठ! लकुट उठा अपना।' तेजस्वीने दाऊका हाथ पकड़ा—'मैं आज ही इस दुष्ट कंस और उसके सब राक्षसोंको मार दूँगा!'

'मथुरा दूर है।' दाऊ हँस पड़े—'कंस कोई यहाँ थोड़े ही बैठा है।'

'तू उठ तो सही!' तेजस्वी झल्लाया—'चाहे जितनी दूर हो, मैं चलूँगा वहाँ तक।'

तेजस्वी बालक है नन्हा बालक; किंतु यदि सच-मुच दाऊ लकुट लेकर उसके साथ चल पड़ें तो कंस और उसके सब राक्षसोंको यह मार देगा इसमें आपको कोई सन्देह है?

'कन्हाई थक गया है।' दाऊने अपने अनुजकी ओर देखा—'वह हम दोनों चलें तो मानेगा नहीं और आज उसे दौड़ाना ठीक नहीं है।'

'हाँ!' तेजस्वीका क्रोध शान्त होने लगा है। यह कनूँ इतनी देरसे खेलता रहा है, व्योमासुरसे कुश्ती लड़ता रहा। थक तो गया है, महा हठी है, दाऊ जाय तो साथ गये बिना मानेगा नहीं। अब पहिले इसे विश्राम देना ही ठीक है।

अंशु

'कनूँ! तुझे भूख लगी है।' जिसे भूख लगी है, उसे पता नहीं है। ऐसा होता तो है, फिर कन्हाई इतना भोला है कि उसे अपना कुछ भी पता नहीं रहता। यदि उसे अपनी भूखका पता नहीं है तो क्या आश्चर्य! खेलमें लगने पर तो किसी बालकको भूख भूल जाती है।

'नहीं तो !' श्यामने चौंक कर कहा।

'लगी है—तुझे भूख लगी है।' अंशुने अपनी बात बड़ी दृढ़तासे कही—'अपना पेट देख !'

अब कृष्ण सिर झुकाकर अपने उदरको बड़े ध्यानसे देखने लगा है। इसके उदरमें कहाँ किधर भूख लगी है, यह देख लेना चाहता है। भूख कोई धूलि, गोबर या चंदन है कि ऐसे दीखेगी।

'कहाँ लगी है ?' बड़े भोलेपनसे श्यामने अंशुकी ओर देखकर पूछा।

अंशु छोटा है कन्हाईसे। तोकसे यह कुछ ही दिन बड़ा है। तोक यदि श्रीकृष्णकी दूसरी मूर्ति है तो अंशु दाऊ दादाकी छोटी प्रतिकृति है। वैसा ही स्वर्ण गौर, वैसा ही नीलाम्बर परिधान। दूरसे दाऊका भ्रम हो जाय यदि इसके छोटे आकारपर ध्यान न जाय और कोई यह न देखे कि इसके दोनों कानोंमें कुण्डल हैं।

आकृतिसे कुछ नहीं होता। यह भी तोकके समान कन्हाईके आस-पास ही कूदता-फुदकता है। श्याम भी इसको बहुत स्नेह करता है।

आज बड़े उल्लाससे—बहुत लड़-झगड़कर घरसे अपने छीकेमें कई नये पकवान ले आया है। पता नहीं क्या बात है—इसकी माँ छीका भरते समय इसे खिझाती है—हँसती जाती है और कहती है—'तुझे अपने लिये इतना सब चाहिए ?'

आज माँने खिझाया भी खूब और छीका भी खूब भरा। इतना झगड़कर इतना भारी छीका कन्धेपर ढोकर यह इतनी दूर वनमें लाया है और यह कनूं है कि आते ही खेलमें लग गया। कब तक अंशु धैर्य रखे—कब तक प्रतीक्षा करे।

'तू इतना खेल चुका तो भूख नहीं लगेगी? अंशु झल्लाया—'अपना पेट तुझे पिचका नहीं दीखता?

'हम सब आम खायेंगे।' श्याम जान-बूझकर इसे खिझा रहा है।

बाबा कहते हैं—'सबेरे खाली पेट फल नहीं खाते।' कब घरसे कलेऊ करके चले हैं, यह स्मरण किसीको न रहे तो उसका दोष?

'तुझे तो भूख लगी नहीं है' यह लो—श्यामने अंशुका छीका झपटकर उठा लिया और शिलातलपर सामने रखकर बैठ भी गया—'तू खेल! मैं भूख मिटाता हूँ।'

'जैसे तुझे अकेलेको ही भूख लगती है।' अंशु अब तोकको सुबलको, भद्रको—सबको पुकारने लगा है। भोजन भी कोई अकेले करनेका काम है।



तोक रूठ गया है

तोक रूठ गया है। गोपकुमारोंमें सबसे छोटा, वनमाली, पीताम्बरधारी, मयूर मुकुटी, केकीकण्ठाभनील कन्हाईकी दूसरी तनिक छोटी मूर्ति तोक आज अपने ही सगे बड़े भाई भद्रसेनसे रूठ गया है। वह कहता है—'नहीं, भद्रसे नहीं बोलूँगा।'

कन्हाईके तो प्राण ही मानो बसते हैं अपने इस चचेरे छोटे भाईमें। मोहन सबको चिढ़ा सकता है—सबको खिझा सकता है; किंतु तोक तो मानो श्यामका प्यार ही प्यार पानेको बना है। किसीसे तोक रूठ जाय तो कृष्ण रूठा धरा है और वह आज भद्रसे रूठ गया है। नन्दनन्दनका हाथ पकड़े, बड़े-बड़े नेत्रोंमें आँसू भरे, वह मचल रहा—'तू भद्रसे मत बोल! भद्र बुरा है! बहुत बुरा है भद्र!'

'क्या हुआ! भद्रने तुझे खिझाया है?' श्यामने सुन्दर वक्षसे सटाकर अपने पटुकेसे तोकके नेत्र पोंछे। लाल-लाल हो आया है तोकका मुख।

एक छोटा-सा पाटल पुष्प तोकको जँच गया। तोकको कुछ जँचे तो वह कन्हाईको मिलना चाहिए। किसी प्रकार उचककर दो पत्तियोंके साथ उसे इसने तोड़ा और प्रसन्नता-से लगभग नाचता हुआ बोला—'कितना सुन्दर लगेगा यह कनूंकी अलकोंमें।'

'इसमें एक काँटा है।' भद्र समीप खड़ा था छोटे भाईके। उसके नेत्र पता नहीं कैसे सदा इतने सावधान रहते हैं। उसने रोका—'कहीं गोविन्दने अपनी अलकोंपर हाथ घुमाया और उसकी अंगुलीमें यह लग गया तो?'

'कहाँ?' तोकने पुष्पकी ओर चौंककर देखा और अपना हाथ बढ़ाया उसकी टहनीपर फिरानेके लिए।'

'यह देख!' भद्रने पुष्प झपट लिया तोकके हाथसे। ऐसे टटोलनेमें तो तोक स्वयं अपने हाथमें काँटा चुभा लेगा। भद्रने काँटेसे अपनी भुजापर हल्की खरोंच बनाकर भुजा तोकके सामने कर दी और तोकने वह खरोंच देखी तो उसके नेत्र भर आये। वह रूठ गया है।

'तूने अपने काँटा क्यों चुभाया?' तोक रोते-रोते बोला और दौड़ा-दौड़ा आया है श्यामके पास उलाहना देने।

'ठीक, मैं भी नहीं बोलता भद्रसे।' कन्हाई हँसीको दबाये है किसी प्रकार—'दुखने दे उसकी खरोंच।'

'नहीं, तू उसे ठीक कर दे!' तोक यह कैसे सहले कि भद्रके हाथपर लगी खरोंच उसे पीड़ा देती रहे। वह अब कृष्णसे मचल रहा है—'तू चल, पहिले उसे ठीक कर दे।'

भद्र

'कनूँ ! तेरा पटुका कहाँ है ?' भद्रने पूछ लिया ।

यह कन्हाई अभी-अभी दौड़ा-दौड़ा आया है । अब भी किञ्चित् श्वासमें वेग है । अलकें थोड़ी मुखपर आ गयी हैं । कपोल-पालीपर कुण्डल अभी-अभी स्थिर हुए हैं । यह कुछ कहने दौड़ा आया है भद्रसे और आकर इसने दोनों हाथ भद्रके कन्धोंपर धर दिये हैं ।

यह नन्दनन्दन बहुत चञ्चल है । इसे दो क्षण बैठना अच्छा नहीं लगता । इधरसे उधर और उधरसे इधर फुदकता ही फिरता है । यह कुछ कहने दौड़ा आया था और भद्रने टोक दिया—'तेरा पटुका कहाँ है ?'

'मेरा पटुका ?' श्याम भूल ही गया कि वह क्या कहने दौड़ा आया था । उसे तो पता ही नहीं कि पटुका उसके कन्धेपर है या नहीं । उसने दोनों हाथ भद्रके कन्धे-से उठाकर अपने कन्धे टटोले, वक्षकी ओर देखा, पीछे देखा, इधर-उधर देखा—'कहाँ गया उसका पटुका ?' वह ऐसा हैरान है जैसे पटुका भी कोई बछड़ा है जो कहीं भाग गया है ।

'यह रहा' झटपट भद्रके पटुकेपर दृष्टि पड़ी तो कृष्णने झपट लिया उसे और अपने कन्धेपर ठीक सजाता बोला—'तूने मेरा पटुका क्यों ले लिया था ?'

'यह तेरा पटुका है ?' भद्र हँस पड़ा । 'देखता नहीं है कि यह दाऊ दादाके पटुके जैसा नीला है । तेरा पटुका तो पीला-पीला है ।'

'पटुका तो यही मेरा है।' कहीं गोविन्द ऐसे हार माना करता है। इसने पटुकेके दोनों छोर दोनों हाथोंसे पकड़कर उठाकर उन्हें ध्यानसे देखा—'तूने इसका रङ्ग पलट दिया है। चल घर, मैं मैयाको कहूँगा।'

'कनूं! कनूं! यह तेरा पटुका' वरूथप दौड़ा आ रहा है कृष्णका पीताम्बर लिए। समीप आकर बोला—'तू इसे कहाँ पटक आया था?'

'मेरा पटुका?' श्याम चौंका। वरूथपके हाथसे पीताम्बर लेकर उसने ध्यानसे देखा—'अरे, मेरा तो यह है।' अब भद्रका पटुका वह उसे मनुहार करके न दे तो भद्र रूठेगा नहीं?



Suhani Vishal Katoch

श्रीसुदर्शन सिंहजी 'चक्र' की अन्य पुस्तकें

भगवान वासुदेव—(श्रीकृष्णका मथुरा चरित)—
डिमाई आकार, पृष्ठ ४०२, सजिल्द, मूल्य १०)५०

श्रीद्वारिकाधीश—(श्रीकृष्णका द्वारिका-चरित)—
डिमाई आकार, पृष्ठ ४००, सजिल्द, मूल्य १०)५०

पार्थ-सारथि (श्रीकृष्णका महाभारत-चरित)—
डिमाई आकार, पृष्ठ ४२८, सजिल्द, मूल्य १०)५२

शिव-चरित—डिमाई आ०, पृष्ठ ४२८, सजिल्द, मूल्य ११)२५

शत्रुघ्नकुमारकी आत्मकथा—
डिमाई आकार, पृष्ठ २१२, सजिल्द, मूल्य ७)५०

हमारी संस्कृति–डिमाई आ०, पृ० २६०, सजिल्द, मूल्य ७)२५

कर्म-रहस्य—डिमाई आकार, पृष्ठ १८४, मूल्य ४)००

आञ्जनेयकी आत्मकथा—(श्रीहनुमान-चरित)—
डिमाई आकार, पृष्ठ ३१२, सजिल्द, मूल्य ३)००

साध्य और साधन (साधना, भगवद्दर्शन, गुरुतत्व)—
डिमाई आकार, पृष्ठ ८४, सजिल्द, मूल्य १०)००

रामचरित भाग-१— सजिल्द, पृष्ठ ३८३, मूल्य १०)००

रामचरित भाग-२— सजिल्द, पृष्ठ २७२, मूल्य ८)२५

राम-श्यामकी झाँकी भाग-१ —पृष्ठ १६०, मूल्य २)००

श्यामका स्वभाव— पाकेट आकार, पृष्ठ ९६, मूल्य १)२५

हमारे धर्मग्रन्थ— पाकेट आकार, पृष्ठ ६७, मूल्य १)००

हिन्दुओंके तीर्थ-स्थान—पाकेट आ०, पृष्ठ २७४, मूल्य ३)५०

शिव-स्मरण— पाकेट आकार, पृष्ठ ८५, मूल्य १)२८

हमारे अवतार एवं देवी-देवता—
पाकेट आकार, पृष्ठ १०८, मूल्य १)५०

सांस्कृतिक कहानियाँ प्रत्येक भाग—
पाकेट आकार, पृष्ठ १६०, मूल्य २)००

अन्य प्रकाशन—

दो आध्यात्मिक महाविभूतियोंके प्रेरक प्रसंग—
पाकेट आकार, पृष्ठ १८८, मूल्य २)५०

प्रकाशन विभाग, श्रीकृष्ण जन्मस्थान सेवासंघ
मथुरा-२८१००१ (उ० प्र०)